वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

इसके कुल 7 भाग हैं |

इस पुस्तक में आपको दूसरा भाग मिलेगा |

अन्यों के लिए 44books.com देखें

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 1 रताववंस्थापन प्रकरण (प्रमाणकालभावेभ्यो रतअवस्थापनम्)

श्लोक-1. शशो वृषोऽश्वइति लिंगतो नायकविशेषः। नायिका पुनमृगी वडवा हस्तिनी चेति।

अर्थ- छोटे, बड़े या मध्यम आकार केलिंग के आधार पर पुरुष को शश (खरगोश), बैल और घोड़े की संज्ञा दी गई है।स्त्री की योनि कम गहरी, ज्यादा गहरी या साधारण गहरी होने के आधार पर उसेमृगी (हिरनी), घोड़ी तथा हथिनी की संज्ञा दी जाती है।

श्लोक-2. तत्र सद्दशसंप्रयोगे समपतानि त्रीणि।।

अर्थ- अपने जोड़े के स्त्री और पुरुष के संभोग करने को समरत कहते हैं। यह 3 प्रकार का होता है-

1. शश (खरगोश) पुरुष का मृगी (हिरनी) स्त्री के साथ।
2. वृष (बैल) पुरुष का बड़वा (घोड़ी) स्त्री के साथ।
3. अश्व (घोड़ा) पुरुष का हस्तिनी (हथिनी) स्त्री के साथ।

श्लोक-3. विपर्ययेणविषमाणि षट्। विषमेष्वपि पुरुषाधिक्यं चेदनन्तरसंप्रयोगे द्वे उच्चरते।व्यवहितमेकमुच्चरतम्। विपर्यये पुनर्द्वे नीचरते। व्यवहितमेकं नीचकतररतं च।तेषु समानि श्रेष्ठानि। तरशब्दागिंते द्वे कनिष्ठे। शेषाणि मध्यमानि।।

अर्थ- संभोग क्रिया करने के लिए एकजोड़े के सदस्य का दूसरे जोड़े के सदस्य के साथबदलकर संभोग करना जैसे शश (खरगोश) पुरुष का बड़वा (घोड़ी) स्त्री या हस्तिनीस्त्री के साथ संभोगकरना, वृष (बैल) पुरुष का मृगी (हिरनी) स्त्री के साथ संभोग करना और अश्व (घोड़ा) पुरुष कामृगी (हिरनी) स्त्री या बड़वा (घोड़ी) स्त्री के साथसंभोग करना। यह 6 तरह के होते हैं। इस तरह की संभोग क्रियाओं में भी ज्यादाबड़ेलिंग वाले पुरुष का छोटी योनि वाली स्त्री के साथ तथा मध्यम आकार केलिंग वालेपुरुष का साधारण योनि वाली स्त्री के साथ संभोग करना उच्चरतकहलाता है। बड़े लिंगवाले पुरुष का छोटी योनि वाली स्त्री के साथ संभोगकरना उच्चरत होता है। इसके विपरीतज्यादा गहरी योनि वाली हस्तिनी स्त्रीके साथ मध्यम आकार के लिंग वाले वृषपुरुष के साथ, छोटे लिंग वाले शशपुरुष का ज्यादा साधारण योनि वाली स्त्री के साथनीचरत तथा ज्यादा गहरीयोनि वाली हस्तिनी स्त्री से छोटे लिंग वाले शश पुरुष का संभोगकरना नीचरतमाना जाता है। इन सब तरह की संभोग क्रियाओं में अपने बराबर के जोड़े केपुरुष के साथ संभोग करना चाहिए। उच्चतर और नीचतररत को सबसे नीची संभोगक्रिया मानाजाता है।

श्लोक-4. साम्येऽप्युच्चाङ नीचाङ्गन्त्रयायः। इति प्रमाणतो नवरतानि।।

अर्थ- मध्यम संभोग में भी अश्व पुरुषका बड़वा स्त्री के साथ, वृष पुरुष का मृगी स्त्री के साथ संभोग करना कुछहद तक ठीक है।लेकिन हस्तिनी स्त्री से वृष पुरुष का या बड़वा स्त्री काशश पुरुष से संभोग करना किसीभी मायने में सही नहीं कहा जा सकता।

अगर सिर्फ संभोगकरने में मिलने वाले सुख को ही सामने रखकरविचार करते हैं तो

सीत्कार, विलास और उपसर्ग यह तीन क्रियाएं संभोग मेंप्रमुख मानी जाती हैं। लेकिन संभोग क्रिया का असलीआनंद स्त्री और पुरुषके स्वभाव, शरीर की बनावट और जननेन्द्रियों की बनावट पर ज्यादानिर्भरकरता है। आचार्य वात्स्यायन ने जननेन्द्रियों के नाप के अनुसार 3 तरह केपुरुष बताए हैं-

1. शश (खरगोश)- ऐसे पुरुषों का लिंग लगभग 6 इंच का होता है।
2. वृष (बैल)- इस तरह के पुरुषों का लिंग 8 इंच का होता है।
3. अश्व (घोड़ा)- इनका लिंग लगभग 12 इंच का होता है।

ऐसी ही स्त्रियों में भी होता है-

1. मृगी (हिरनी) स्त्री।
2. बड़वा (घोड़ी) स्त्री।
3. हस्तिनी (हथिनी) स्त्री।

पुरुष के लिंगका मापनलंबाई तथा मोटाई के आधार पर किया जाता है और स्त्री की योनि कामापन उसकीगहराई तथा चौड़ाई से होता है। जिन स्त्री और पुरुषों के लिंग और योनि कामापएक ही आकार में होता है उनके आपस में संभोग करने की क्रिया को सम कहाजाता है। समसंभोग मुख्यताः 3 तरह का होता है और विषम संभोग अर्थातअदल-बदलकर संभोग करनामुख्यताः 6 तरह का होता है। सम अर्थात शश पुरुष कामृगी स्त्री के साथ, वृष पुरुष का बड़वा स्त्री के साथ और अश्व पुरुष काहस्तिनी स्त्रीके साथ संभोग करना। इस तरह से यह 3 तरह की संभोग क्रियाहोती है। शश पुरुष का बड़वातथा हस्तिनी स्त्री के साथ, वृष पुरुष का मृगीया हस्तिनी स्त्री के साथ और अश्वपुरुष का बड़वा स्त्री के साथ संभोगकरना। इस तरह से यह 6 तरह की संभोग क्रिया होती है।

श्लोक-5. यस्य संप्रयोगकाले प्रीतिरुदासीना वीर्यमल्पं क्षतानि च न सहते न मन्दवेगः।।

अर्थ- इसके अंतर्गत कामजन्य मानसिक आवेश के अनुसार पुरुष और स्त्री के संभोग करनेके भेद बताए जा रहे हैं-

संभोग क्रिया के समय जिस व्यक्ति की काम-उत्तेजना बहुत कम होतीहै, वीर्य कम निकलता है और जो स्त्री के द्वारा अपने शरीर पर नखक्षत (नाखूनोंकोगढ़ाना) और दन्तक्षत (दांतों को गढ़ाना) आदि प्रहारों को सहने मेंअसमर्थ हो तो वहमन्दवेग कहलाता है।

श्लोक-6. तद्विपर्ययौ मध्यमचण्डवेगौ भवतः। तथा नायिकापि।।

अर्थ- इसके विपरीत मध्यम और तेज संभोगकरने की इच्छा रखने वाले पुरूषों कोचण्डवेग कहा जाता है। इसी तरह संभोगकी इच्छा के मुताबिक स्त्रियां भी 3 प्रकार की होती हैं- मंदवेग, मध्यम वेगऔर चंडवेग।

श्लोक-7. तत्रापि प्रमाणवदेव नवरातानि।।

अर्थ- लिंग प्रमाण के प्रकार केअनुरूप बताए जा रहे 9 प्रकार के रतों की तरह यहां भी 9 प्रकार के स्त्री औरपुरुष की संभोग क्रियाहोती है।

श्लोक-8. तद्वत्कालतोऽपि शीघ्रमध्यचिरकाला नायकाः।।

अर्थ- लिंग की लंबाई, मोटाई और संभोग करने की इच्छा की तरह समय से भी स्त्री और पुरुष के शीघ्र, मध्य और चिरकाल 3 भेद होते हैं।

श्लोक-9. तत्र स्त्रियां विवादः।।

अर्थ- स्त्री के बारे में यहां पर आचार्यों में मतभेद हैं।

श्लोक-10. न स्त्री-पुरुषवदेव भावमधिगच्छति।।

अर्थ- पुरुष की तरह ही स्त्री को संभोग क्रिया में सुख नहीं मिलता है।

श्लोक-11. सातत्यात्त्वस्याः पुरुषेणा कण्डूतिरपनवद्यते।।

अर्थ- फिर स्त्री किस कारण से संभोग क्रियामें लीन होती है।

पुरुष के साथ संघर्षण (संभोग करने से) होने से स्त्री की खुजली दूरहो जाती है।

श्लोक-12. सा पुनराभिमानिकेन सुखेन संसृष्टा रसान्तरं जनयति तस्मिन् सुखबुद्धिरस्याः।।

अर्थ- यदि स्त्री को केवल अपनी खुजलीही दूर करनी है तो उसके लिए उसके पासदूसरे उपाय भी हैं। स्त्री को तोचुम्बन, आलिंगन और प्रहार आदि उत्तेजना पैदा करने वालीक्रियाओं की वजह सेपुरुष के साथ संभोग क्रिया करने में चरम सुख की प्राप्तिहोती है।

श्लोक-13. पुरुषप्रीतेश्चानभिज्ञत्वात्कथं ते सुखमिति प्रष्टमशक्यत्वात।।

अर्थ- स्त्री और पुरुष को संभोगक्रिया में जोआनंद प्राप्त होता है उसका लाभ उनके अपने सिवा आपस मेंदोनों में से किसी को नहीं होसकता और न ही इस बारे में उनसे पूछकर ही पतालगाया जा सकता है क्योंकि मानसिकआनंद को शब्दों के द्वारा नहीं बताया जासकता।

श्लोक-14. कथमेतदुपलम्यत इति चेत्पुरुषो हि रतिमधिगम्या स्वेच्छया विरमति न स्त्रियमपेक्षते, न त्वेवं स्त्रीत्यौद्दालकिः।।

अर्थ- इस वजह से इस बात को कैसे मान लिया जाए कि स्त्री को पुरुष की तरह संभोगका चरम सुख प्राप्त नहीं होता।
इस बारे में आचार्य औद्दालिक अपना मत देते हुए कहते हैं कि एक बार संभोगक्रिया में स्खलितहोने के बाद पुरुष की उत्तेजना समाप्त हो जाती है औरउसे स्त्री की जरूरत नहीं रहती लेकिन स्त्री कीप्रवृत्ति ऐसी नहीं है।

श्लोक-15. तत्रैतस्यात्।चिरवेगे, नायके स्त्रियोऽनुरज्यन्ते, शीघ्रवेगस्यभावमनासाद्यावसानेऽभ्यसूयिन्यो भवन्ति। तत्सर्व भावप्राप्तेरप्राप्तेश्चलक्षणम्।।

अर्थ- यहां एक बात और भी जानने वालीयह है किजो पुरुष संभोग क्रिया को बहुत तेजी और देर तक करता है स्त्रियांउससे बहुत लगावरखती है। लेकिन जो पुरुष संभोग क्रिया के समय कुछ ही देरमें स्खलित हो जाता हैस्त्रियां उनकी निन्दा करती है। इसलिए स्त्री अगरपुरुष को कुछ ज्यादा ही प्यार कर रहीहै तो उसे समझ जाना चाहिए कि स्त्रीको संभोग क्रिया का पूरा सुख मिल रहा है।

श्लोक-16. तञ्ज न। कण्डूतिप्रतीकारोऽपि हि दीर्घकालं प्रिय इति। एतदुपपद्यत एव। तस्मात्संदिग्धत्वादलक्षर्णामति।।

अर्थ- लेकिन यह सही नहीं माना जा सकताक्योंकि स्त्री के द्वारा पुरुष को ज्यादाप्यार आदि करने से यह साबितनहीं हो सकता कि उसकी काम-उत्तेजना शांत हो गई है। वैसेभी अगर पुरुषस्त्री के साथ बहुत देर तक संभोग करता है तो इससे काफी देर तकस्त्री कीसंभोग की खुजली तो शांत रहेगी तो वह पुरुष से प्यार आदि करने में मशरूफरहेगीही।

श्लोक-17. संयोगे योषितः पुसां कण्डूतिरपनुद्यते। तञ्त्राभिमानसंसृष्ट सुखमित्यभिधीयते।।

अर्थ- इसलिए इस बात को सिद्ध करने केलिए आचार्य ने एक श्लोक का उदाहरण दिया है।पुरुषों के साथ संभोग करने सेस्त्रियों की खुजली दूर हो जाती है और आलिंगन, चुम्बन आदि संभोग की सहायकक्रियाएं मिलकर संभोग सुख कहलाती हैं।

श्लोक-18. सातत्याद्युवतिराम्भात्प्रभृति भावमधिगच्छति। पुरुषः पुनरन्त एव।एतुदुपपन्नतरम्। नह्यसत्यां भावप्राप्तौ गर्भसम्भव इति वाभ्रवीयाः।।

अर्थ- बभ्रु आचार्य के शिष्यों केअनुसार पुरुष जिस समय स्खलित लगता है उसे उसीसमय आनंद आता है और स्खलितहोने पर समाप्त हो जाता है। लेकिन स्त्री को संभोग कीशुरूआत से ही बराबरआनंद की अनुभुति होती रहती है। यह बात बहुत अच्छी तरह से साबितहो चुकी हैकि संभोग करने की इच्छा न हो तो कभी भी स्त्री को गर्भ स्थिर नहीं होसकता है।

श्लोक-19. अत्रापि तावेवाशङ्कपरिहारौ भूयः।।

अर्थ- बाभ्रव्य आचार्यों के दिए गए मतमें भी उसी तरह की शंकाएं पैदा होती है जोआचार्य औद्दालिक के मत में कहीजा चुकी है। उन समस्याओं का हल भी पहले की ही तरहकरना चाहिए।

श्लोक-20. तत्रैतत्स्यात्सातत्येन रसप्राप्तावारम्भकाले मध्यरथचित्तता नातिसहिष्णुता च। ततःक्रमेणाधिको रागयोगः शरीरे निरपक्षेत्वम् अन्ते चविरामाभीप्सेत्येतदुपपन्नमिति।।

अर्थ- यहां पर इस बात पर सवाल उठ सकताहै कि अगरस्त्री को लगातार आनंद की अनुभूति हुआ करती है तो किस वजह सेसंभोग की शुरुआत मेंपुरुष बहुत ज्यादा उत्तेजित होकर बेचैन हो जाता है औरस्त्री शांत सी लेटी रहती है।वह पुरुष के द्वारा अपने शरीर पर नाखूनोंको

गढ़ाना, दांतों से काटना और स्तनों कोदबाना आदि के लिए मना करती है औरसिर्फ यही चाहती है कि पुरुष उसके साथ संभोग करतारहे। इस बात से एक चीजपता चलती है कि यह कहना गलत है कि स्त्री को आदि से अन्त तकआनंद कीअनुभूति होती है।

श्लोक-21. कस्या वाभ्रान्तावेव वर्तमानस्य प्रारम्भे मन्दवेगता तत्पश्च क्रमेण पूरणंवेगस्येत्युपपद्यते। धातुक्षयाच्च विरामाभीप्सेति। तस्मादनाक्षेपः।।

अर्थ- स्त्री की संभोग करने की इच्छाशुरू में कम और फिर धीरे-धीरे तेज होतीजाती है और पुरुष के स्खलित होनेके बाद शांत हो जाती है। इस प्रकार कहा जाता है किसंभोग क्रिया के शुरूसे लेकर वीर्य-स्खलन तक स्त्री की संभोग करने की इच्छालगातार बनी रहतीहै।

श्लोक-22. सुरतान्ते सुखं पुंसां स्त्रीणां तु सततं सुखम्। धातुक्षयनिमित्ता च विरामेच्छोपजायते।।

अर्थ- संभोग क्रिया के अंत में पुरुषके स्खलित होने पर ही पुरुष को चरम सुखमिलता है लेकिन स्त्रियों को इसक्रिया की शुरूआत से ही सुख महसूस होने लगता हैऔर स्खलन होने के बाद रुकजाने की इच्छा होती है।

श्लोक-23. तस्मात्पुरुषवदेव योषितोऽपि रसव्यक्तिद्रष्टव्या।।

अर्थ- आखिर में वात्स्यायन जी का कहना है कि-
इससे यही बात पता चलता है कि पुरुषों की ही तरह स्त्रियों को भीसंभोग क्रिया के अंत में चरम सुख की प्राप्ति होती है।

श्लोक-24. कथ हि समानायामेवाकृतावेकार्थमभिप्रपन्नयोः कार्यवैलक्षण्यं स्यात्।।

अर्थ- एक ही जाति और एक ही मकसद में लगे हुएस्त्री और पुरुष का सुख एक-दूसरे से अलग कैसे हो सकता है।

श्लोक-25. उपायवैलक्षण्यादभिमानवैलक्षण्याच्च।।

अर्थ- या स्थिति तथा अनुभूति में अंतर पड़ने पर आनंद में अंतर आ सकता है।

श्लोक-26.. कथमुपायवैलक्षण्यं तु सर्गात्। कर्ता हि पुरुषोऽधिकरणं युवतिः। अन्यथा हिकर्ता क्रियां प्रतिपद्यतेऽन्यथा चाधारः।तस्माच्चोपायवैलक्षण्यात्सर्गादभिमानवैलक्षण्यमपि भवित। अभियोक्ताहमितिपुरुषोऽनुरज्यते। अभियुक्ताहमनेनेति युवातिरिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिकसंभोग क्रिया के दौरान मिलने वाला भेदकिस प्रकार हो सकता है। अवस्था भेदतो जन्म से ही होता है। यह बात तो सभी जानते हैकि पुरुष करने वाला होताहै और स्त्री कराने वाली होती है। पुरुष की क्रिया औरस्त्री की क्रियाअलग-अलग होती है जैसे- संभोग क्रिया के समय पुरुष चरम सुख केदौरान यहसोचता है कि मैं संभोग कर रहा हूं और स्त्री यह सोचती है कि मैं पुरुष सेसंभोग करा रही हूं। इस प्रकार अवस्था तथा अनुभूति के अलग होने से सिर्फइतना अंतरहोता है लेकिन संभोग में कोई अंतर नहीं होता है।

श्लोक-27. तत्रैतस्यादुपायवैलक्षण्यवदेव हि कार्यवैलक्षण्यमपि कस्मान्न स्यादिति।तच्च न। हेतुमदुपायवैलक्षण्यम्। तत्रकर्त्राधारयोर्भिन्नलक्षणत्वादहेतुमत्कार्यवैलक्षण्यमन्याय्यं स्यात्।आकृतेरभेदादिति।।

अर्थ- अब दुबारा यह आक्षेप पेश कियाजा रहा है कि जब स्त्री और पुरुष की स्थितियोंमें भेद है तो फिर उनकोमिलने वाले संभोग के समय में अंतर क्यों नहीं होगा।आक्षेप का जवाब यह हैकि ऐसा नहीं हो सकता। अगर स्त्री और पुरुष के अंगों में भेदहोगा तो उनकीस्थिति में तो भेद होगा ही। लेकिन बिना कारण ही स्त्री और पुरुष केसंभोगक्रिया के फल और चरमसुख में अंतर संभव नहीं हो सकता है क्योंकि स्त्री औरपुरुषएक ही जाति के नहीं हैं।

श्लोक-28. तत्रैतस्यात्। संहत्य कारकैरेकोऽर्थोऽभिनिर्वर्त्यते। पृथक्पृथक्स्वार्थसाधकौ पुनरिमौ तदयुक्तमिति।

अर्थ- अब सवाल यह पैदा होता है कि जबअलग-अलग यानीकि करने वाला और कराने वाला मिलकर कोई काम करते हैं तो एक हीकाम पूरा होता है औरजब स्त्री और पुरुष मिलकर एक

ही क्रिया अर्थात संभोगक्रिया करते हैं तब यह कहनाकि उन्हें इसमें अलग-अलग प्रकार का चरम सुखप्राप्त होता है, सही नहीं है।

श्लोक-29. तच्च न।युगपदनेकार्थसिद्धिरपि द्दश्यते। यथा मेषयोरभिघाते कपित्थयोर्भेदेमल्लयोर्युद्ध इति। न तत्र कारकभेद इति चेदिहापि न वस्तुभेद इति।उपायवैलक्षण्यं तु सर्गादिति तदभिहितं पुरस्यात्। तेनोभयोरपि सद्दशीसुखप्रतिपत्तिरिति।।

अर्थ- ऐसा बिल्कुल सही नहीं हैक्योंकि वैसे तो एक साथ कई सारे कामों को सिद्धहोते देखा गया है जैसे 2 मेढ़ों की लड़ाई में, 2 पके हुए फलों को एकसाथ तोड़ने में और पहलवानों कीकुश्ती में एक ही फल मिलता है। यदिकहा जाए कि मेढ़ों, फलों और पहलवानोंमें स्त्री और पुरुषों की तरह लिंग का अंतरनहीं है तो स्त्री और पुरुषमें भी वस्तु अंतर नहीं है क्योंकि दोनों ही मनुष्य है औरयह पहले हीबताया जा चुका है कि लिंग में अंतर तो स्वाभाविक ही होता है। इसलिएयह बातसाबित होती है कि संभोग क्रिया के समय स्त्री और पुरुष दोनों को ही एक हीप्रकार का चरम सुख मिलता है।

श्लोक-30. जातेरभेदाद्देम्पत्योः सद्दशं सुखमिष्यते। तस्मात्तथोपचर्या स्त्री यथाग्रे प्राप्नुयाद्रतिम्।।

अर्थ- इसके अंतर्गत महर्षि वात्स्यायन मुनि ने संभोग में मिलने वाले चरमसुख को प्राप्त करने की पद्धति बताई गई है।

एक ही जाति के होने के कारण स्त्री और पुरुष को संभोग में बराबर सुखमिलता है इसलिए संभोग केसमय में चुंबन, आलिंगन और स्तनों को दबाना आदिबाहरीय संभोग द्वारा स्त्री को इस तरह से द्रवित करनाचाहिए कि पुरुष सेपहले स्त्री को चरम सुख प्राप्त हो जाए। फिर अपनी संभोग करने कीइच्छा कोपूरी करने के लिए तेज गति से संभोग करना चाहिए।

श्लोक-31. सद्दशत्वस्य सिद्धत्वात्, कालयोगीन्यापि भावतोऽपि कालतः प्रमाणवदेव नव रतानि।।

अर्थ- निष्कर्ष में संभोग के 9 प्रकार बताए गए हैं-

पुरुष और स्त्री में बराबरी साबित होने पर समय, भाव तथा प्रमाण के अनुसार स्त्री और पुरुषों के 9 तरह के संभोग होते हैं।

श्लोक-32. रसो रतिः प्रीतिर्भावो रागो वेगः समाप्तिरिति रतिपर्यायः। संप्रयोगो रतं रहः शयनं मोहनं सुरतपर्याया।।

अर्थ- इसके अंतर्गत संभोग शब्दों केपर्यायवाची शब्दों की परिगणना करते हैं-रस-रति, प्रीति, भाव, राग, वेग औरसमाप्ति। यह शब्द संभोग में प्रयुक्त होते हैं और सम्प्रयोग, रत, रहः (अकेले में सोना), शयन मोहन यह शब्द सुरत संभोग में इस्तेमाल होतेहैं।

श्लोक-33. प्रमाणकालभावजानां संप्रयोगाणामेकैकस्य नवविद्यत्वात्तेषां यतिकरे सुरतसंख्या न शक्यते कर्तुम्। अतिबहुत्वात्।।

अर्थ- रत (संभोग) के मुख्य प्रकार-
लिंग और योनि के प्रमाण, संभोग के समय तथा मानसिक भाव इनसे पैदा होनेवाले हर प्रकार के रत है और यही मिलकर कई प्रकार के बनते हैं। ये बहुतज्यादा की संख्यां में होते हैं इसलिए इनकी गिनती नहीं की जा सकती है।

श्लोक-34. तेषु तर्कादुपयारान्प्रयोजयेदिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- वात्स्यायन के मुताबिक इन कई प्रकारों के रतों में पूरी तरह से दिमाग काप्रयोग करके संभोग क्रिया में लगना चाहिए।

श्लोक-35. प्रथमरते चण्डवेगता शीघ्रकालता च पुरुषयत, तद्विपरीतमुत्तरेषु। योषितः पुनरेतदेव विपरीतम्। आ धातुक्षयात्।।

अर्थ- प्रथम रत (पहली बार संभोग करना)के समय जब तक वीर्य स्खलित नहीं होता तबतक पुरुष की गति बहुत ज्यादाहोती है जिसके कारण उसकी संभोग करने की इच्छा जल्दी हीसमाप्त हो जाती हैलेकिन उसी रात में जब पुरुष दुबारा संभोग करता है तो वह इस क्रियाको काफीदेर तक कर लेता है। स्त्रियों की प्रवृति इसके विपरीत होती है।उनकीकाम-उत्तेजना पहले कम होती है और फिर धीरे-धीरे तेज होकर ठहरती है लेकिनदूसरीबार में वह

ज्यादा देर तक नहीं ठहर पाती है। स्त्री और पुरुष कीकाम-उत्तेजना मेंयही स्वाभाविक अंतर होता है।

श्लोक-36. प्राक् च स्त्रीधातुक्षयात्पुरुषाधातुक्षय इति प्रायोवादः।।

अर्थ- इसलिए महर्षि वात्स्यायन कहते हैं-
ऐसा पाया गया है कि संभोग क्रिया के समय में स्त्री से पहलेपुरुष स्खलित हो जाता है।

श्लोक-37. मृदुत्वादुपमृद्यत्वान्निसर्गाच्चैव योषितः। प्राप्तुवन्त्याशु ताः प्रीतिमित्याचार्या व्यवस्थिताः।।

अर्थ- कामशास्त्र में सभी आचार्यों कामानना है कि संभोग क्रिया के दौरानस्त्रियां पुरुषों से पहले चरम सुख कोप्राप्त करती हैं क्योंकि वह स्वभाव से हीनाजुक होती हैं। चुंबन औरआलिंगन करने से उनकी कामो-उत्तेजना जल्दी तेज हो जाती है।

श्लोक-38. एतावदेव युक्तानां व्याख्यातं सांप्रयोगिकम्। मन्दानामवबोधार्थं विस्तरोऽतः प्रवक्ष्यते।।

अर्थ- यहां पर स्त्री और पुरुष केबारे में जो बताया जा रहा है सिर्फ बुद्धिमानलोगों के लिए है। साधारणमनुष्यों के लिए इसका वर्णन विस्तार से किया गया है।

श्लोक-39. अभ्यासाभिमानाच्च तथा संप्रत्ययादपि। विषयेभ्यश्च तन्त्रज्ञाः प्रीतिमाहुश्चतुर्विधाम्।।

अर्थ- कामसूत्र के आचार्यों के अनुसार प्रेम 4 प्रकार से उत्पन्न होता है-

1. अभ्यास से।
2. विचारों से।
3. याद रखने से।
4. विषयों से।

श्लोक-40. शब्दादिभ्यो बहिर्भूता या कर्माभ्यासलक्षणा। प्रीतिः साभ्यासिकी ज्ञेया मृगयादिषु कर्मसु।।

अर्थ- जो प्रेम अभ्यास करने से बढ़ताहै उसे अभ्यासिकी कहते हैं जैसे शिकार, संगीत, नृत्य, नाटक आदि। यह प्रेमविषयों से होने वाले प्रेम से भिन्न होती है।

श्लोक-41. अनभ्यस्तेष्वपि पुरा कर्मस्वविषयात्मिका। संकलपाञ्जायते प्रीतिर्या सा स्यादाभिमानिकी।।

अर्थ- किसी अभ्यास को करे बिना सिर्फसोचने से ही जो प्रेम पैदा होता है उसेअभिमानी कहा जाता है। यह प्रेम भीविषयों से होने वाले प्रेम से भिन्न होता है।

श्लोक-42. प्रकृतेर्या तृतीयस्याः स्त्रियाश्चैवोपरिष्टके। तेषु तेषु च विज्ञेया चुम्बनादिषु कर्मसु।।

अर्थ- वेश्याओं तथा किन्नरों (हिजड़े)को मुखमैथुन करने में जिस तरह का सुख मिलता है वह मानसिक कहलाता है।इसीतरह चुंबन-आलिंगन आदि से होने वाली प्रीति भी होती है।

श्लोक-43. नान्योऽमिति यत्र स्यादन्यस्मिन्प्रीतिकारणे। तन्त्रज्ञैः कथ्यते सापि प्रीतिः संवत्धयात्मिका।।

अर्थ- अचानक ऐसे इंसान को देखकर जिसकीसूरत उस इंसान से मिलती हो जिसको आप बहुतपसंद करते थे तो आपको उसी कीयाद आ जाती है। इसको सम्प्रययात्मक प्रीति कहा जाताहै।

श्लोक-44. प्रत्यक्षा लोकतः सिद्धा या प्रीतिर्विषयात्मिका। प्रधानफलवत्त्वात्सा तदर्भाश्चेतरा अपि।।

अर्थ- इन्द्रियों के विषयों से होनेवाली प्रीति के बारे में उन सभी लोगों कोमालूम होता है लेकिन इन्द्रियविषयजन्य प्रीति प्रधान होने के कारण बाकी सारीप्रीतियां इसी के अंतर्गतआती हैं।

श्लोक-45. प्रीतीरेताः परामृश्य शास्त्रतः शास्त्रलक्षणाः। यो यथा वर्तते भावस्तं तथैव प्रयोजयेत्।।

अर्थ- जो स्त्री और पुरुष कामशास्त्रके बारे में जानकारी रखते हैं उनकोचाहिए कि इन चारों तरह की प्रीतियों कोशास्त्र में बताए गए तरीकों से समझकर स्त्री, पुरुष के और पुरुष, स्त्रीके भावों के अनुसार इस तरह का बर्ताव करें कि उनमें आपस में प्रीति बढ़तीजाए।

वात्स्यायन ने यह सब उन लोगों केबारे में बताया है जिनकी सोच साधारणकिस्म की होती है। उनके अनुसार अभ्यासके द्वारा, विचार करने से, याद रखने से तथा विषयों से स्त्री और पुरुष मेंआपसी प्रेम को बढ़ाया जा सकता है।

इति श्री वात्स्यायनीये कामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे रतावस्थापन प्रीतिविशेष प्रथमोऽध्यायः।।

अध्याय 2 आलिंगन विचार प्रकरण

श्लोक-1. संप्रयोगाअंग चतुः षष्टिरित्याचक्षते। चतुःषष्टिप्रकरणत्वात्।।

अर्थ- कामसूत्र के विद्वानों ने संभोग कला के 64 अंगों के बारे में बताया है।

श्लोक-2. शास्त्रमेवेदं चतुःषष्टिरित्याचार्यवादः।।

अर्थ- बहुत से आचार्य कहते हैं कि पूरे काम-शास्त्र के ही 64 अंग हैं।

श्लोक-3. कलानांचतुःषष्टित्वात्तासां च संप्रयोगाअंगभूतत्वात्कलासमूहो वा चतुःषष्टरिति।ऋचां दशतयीनां च संज्ञितत्वात्। इहापि तदर्थसम्बन्धात्। पञ्चालसंबन्धाच्चबह्वचैरेषा पूजार्थ संज्ञा प्रवर्तिता इत्येके।।

अर्थ- यह 64 कलाओं की संख्या हैक्योंकि कलाएं संभोग का अंग मानी जाती हैं।कलाओं की संख्या होने सेकामशास्त्र को भी 64 कलाओं वाला माना जाने लगा है। जिस प्रकार सेऋग्वेदमें दशमंडल होने से उसे दशतयी कहा जाता है।

श्लोक-3

आलिंगनचुम्बननखच्छेद्यदशनच्छेद्यसंवेशनसीत्कृतपुरुषायितौपरिष्यकानामष्टानामष्टाधाविकल्प भेदादष्टावष्टाकाश्चतुः षष्टिरिति बाभ्रवीयाः।।

अर्थ- बाभ्रवीय आचार्यों के मुताबिकआलिंगन, चुंबन, नखक्षत (नाखूनों से काटना), दंतक्षतों (दांतों से काटना), संवेशन (साथ-साथ सोना), सीत्कृत, पुरुषायित (विपरीत आसन) तथा मुखमैथुन 8 प्रकार की संभोग क्रियाहोती है और इनके भी 8-8 भेद होने से 64 प्रकार कीसंभोग कलाएं होती हैं।

श्लोक-5. विकल्पवर्गाणामष्टानां न्यूनाधिकत्वदर्शनात्प्रहणनदिरुतपुरुषोपयृपतचित्ररतादीनामन्येषामपि वर्गाणामिहप्रवेशनात्प्रायोवादोऽयम्। यथा सप्तपर्णो वृक्ष। पञ्चवर्णो बलिरितिवात्स्यायनः।।

अर्थ- वात्स्यायनः के मुताबिकबाभ्रवीय आचार्यों का संभोग कला के 64 भेदों के बारे में दिया गया मत गलतहै क्योंकि इनमें से सबसे 8-8 भेद नहीं होते बल्कि किसी के कम होते हैं तोकिसी के ज्यादा होतेहैं। इसके अलावा इन आठों से अलग प्रहणन, विरुतपुरुषोपसृत, चित्ररत आदि नाम के और भी संभोग बाभ्रवीयों के साम्प्रयोगिकअधिकरण में सन्निविष्ट हैं।इसलिए साम्प्रयोगिक अधिकरण में 64 अंगों कोमानना सही नहीं है।

इसके अलावा वात्स्यायन मुनिकुंवारे और मनचले लोगों के लिए और विवाहित लोगों के लिए आलिंगन भेद बताते हैं।

श्लोक-6. तत्रासमागतयोः प्रीतिलिंगद्योतनार्थमालिंगन चतुष्टयम्। स्पृष्टकम्, विद्धकम, उदधृष्टकम, प्रीडितकम्, इति।।

अर्थ- जो स्त्री और पुरुष मनचले औरकुंवारे होतेहैं उन्हें आपस में अपने प्यार को प्रकट करने के लिए चारप्रकार के आलिंगन करनेचाहिए- स्पृष्टक, बिद्वक, उद्दघृष्टक और पीडितक।

श्लोक-7. सर्वत्र संज्ञार्थेनैव कर्मातिदेशः।।

अर्थ- स्पृष्टक, विद्वक आदि पारिभाषिक अल्फाज अपने नाम से ही अपने कर्माप्तिदेश को सूचित करते हैं।
इसके अंतर्गत हर आलिंगन का लक्षण बताते हैं-

श्लोक-8. संमुखागतायां प्रयोज्यायामन्यापदेशेने गच्छेतो गात्रेण गात्रस्य स्पर्शन स्पृष्टकम्।।

अर्थ- स्पृष्टक-
अपने सामने से आती हुई स्त्री के जिस्म को किसी बहाने से छूनास्पृष्टक आलिंगन कहलाता है।

श्लोक-9. प्रयोज्यं स्थितमुपविष्टं वा विजने किंचिद् गृह्णती पयोधरेण विद्धयेत्। नायकोऽपि तामवपीडय्च गृह्णीयादिति विद्धकम्।।

अर्थ- विद्वक-
जब स्त्री पुरुष को किसी एकांत स्थान में बैठे हुए या खड़े हुएदेखती हैतो किसी वस्तु को उठाने के बहाने अपने स्तनों को उसके शरीर से छुआ दे तथापुरुष भी उसके स्तनों को कसकर दबाए। इसको विद्वक आलिंगन कहा जाता है।

श्लोक-10. तदुभयमनतिप्रत्तसंभाषणयोः।।

अर्थ- इन दोनों प्रकार के आलिंगनों का प्रयोग तभी करना चाहिए जब स्त्री और पुरुषआपस में ज्यादा वार्तालाप न कर रहे हो।

श्लोकृ-11. तमसि जनसंबाधे विजने वाथ शनकैर्गच्छतोर्नातिहस्वकालमुद्धर्पणं परस्परस्य गात्राणामुदघृष्यकम्।।

अर्थ- उदघृष्टक-
अगर भीड़-भाड़ में, अंधेरे में या एकांत में दोनों के ही शरीर एक-दूसरे से रगड़ खाते हैं तो उसे उदघृष्टक आलिंगनकहते हैं।

श्लोक-12. तदेव कुडचसंदंशन स्तम्भसंदंशेन वा स्फुटकमवपीडयेदिति पीडितकम्।।

अर्थ- किसी खंभे या दीवार के सहारेखड़े होकर जबस्त्री और पुरुष एक-दूसरे के शरीर के कामुक अंगों को जोर-जोरसे दबाते हैं तो उसेपीड़ितक आलिंगन कहा जाता है।

श्लोक-13. तदुभयमवगतपरस्पराकारयोः।।

अर्थ- उदघृष्टक और पीड़ितक आलिंगन ऐसेस्त्री और पुरुषों के लिए होते हैं जो आपसमें तो बहुत प्यार करते हैंलेकिन उनके बीच में किसी तरह का शारीरिक संबंध न बनाहो।
इसमें शादीशुदा स्त्री और पुरुषों के आलिंगनों के बारे मेंबताया गया है-

श्लोक-14. लतावेष्टिकं वृक्षाधिरूढकं तिलतण्डुलकं क्षीरनीरकमिति चत्वारि संप्रयोगकालें।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय लतावेष्ठितक, वृक्षाधिरूढक, तिलत्रण्डुक और क्षीरनीरक आलिंगनों को सबसे ज्यादा अच्छा माना गयाहै।
इसके अंतर्गत हर व्यक्ति के लक्षण अलग-अलग बताए जा रहे हैं-

श्लोक-15. लतेवशालमावेष्टयन्ती चुम्बनार्थ मुखमवनमयेत्। उद्धत्य मन्दसीत्कृता तमाश्रितावा किंचिद्रामणीयकं पश्येत्तल्लातावेष्टितकम्।।

अर्थ- इसमें हर एक के लक्षणों को बताया जा रहा है-
लतावेष्टिक- जिस तरह से एक पेड़ के ऊपर एक लता लिपटजाती है वैसे हीस्त्री पुरुष से लिपटकर मुंह को हल्का सा झुकाकर थोड़ा हटकरसिसकारियांलेती हुई उसके मुख-सौंदर्य का अवलोकन करें तो इसको लतावेष्टिकआलिंगन कहतेहैं।

श्लोक-16. चरणेनचरणामाक्रम्य द्वितीयेनोरुदेशामाक्रमन्ती वेष्टयन्ती वातत्पृष्ठसक्तैकबाहुद्वितीयेनांसमवनमयन्ती ईषन्मन्द सीत्कृतकूजिताचुम्बनार्थमेवाधिरोढुमिच्छेदिति वृक्षाधिरूढकम्।।

अर्थ- वृक्षाधिरूढकम- जिस तरह से पेड़पर चढ़ते हैं उसी तरह वृक्षाधिरूढकमआलिंगन में स्त्री अपने एक पैर सेपुरुष के पैर को दबाती हैं और अपने दूसरे पैर सेपुरुष के दूसरे पैर कोपूरी तरह से लपेट लेती हैं। इसके साथ ही अपने एक हाथ को पुरुष कीपीठ पररखकर दूसरे हाथ से उसके कंधे तथा गर्दन को नीचे की तरफ झुकाती हैं और फिरधीरे-धीरे से पुरुष को चूमने लगती हैं और उस पर चढ़ने की कोशिश करती हैं।इस आलिंगनको वृक्षाधिरूढकम आलिंगन कहा जाता है।

श्लोक-17. तदभयं स्थितकर्म।।

अर्थ- लतावेष्टिक और वृक्षादिरूढक आलिंगनों को संभोग क्रिया करने से पहले हीखड़े-खड़े किया जाता है।

श्लोक-18. शयनगतावेवोरुव्यत्यांस भुजव्यत्यासं च ससंघर्षमिव घनं संस्वजेते ततिलतण्डुलकम्।।

अर्थ- तिलतण्डुलक-

पलंग पर लेटा हुआ पुरुष अगरस्त्री के दाईं ओर लेटा होता है तो उसेअपनी बाईं टांग को स्त्री कीजांघों के बीच तथा बाएं हाथ को उसकी दाईं कांख के बीचडालना चाहिए और फिरस्त्री को भी पुरुष की ही तरह आलिंगन करना चाहिए। इस प्रकार केआलिंगन मेंदोनों की टांगें तथा भुजाएं उस तरह मिल जाती हैं जैसे कि चावल में तिलइसलिए इसको तिलतण्डुलकम आलिंगन कहते हैं।

श्लोक-19. रागान्धावनपेक्षितात्ययौ परस्परमनुविशत इवोत्सङ्गतायामभिमुखोपविष्टायां शयने वेति क्षीरजलकम्।।

अर्थ- क्षीरजलक-

ज्यादा काम-उत्तेजित होने के बावजूद भी किसी चीज की परवाह न करते हुए जबस्त्री

औरपुरुष एक-दूसरे में समा जाने की कोशिश में मजबूत आलिंगन करतेहैं तो उसे क्षीरजलकआलिंगन कहा जाता है। यह आलिंगन तभी मुमकिन हो सकता हैजब स्त्री पुरुष की गोद मेंबैठकर अपनी दोनों टांगों को उसकी कमर मेंफंसा ले तथा दोनों अपनी-अपनी छाती को आपसमें मिलाकर जोर-जोर से दबाएं।नहीं तो दोनों पलंग पर एक-दूसरे की तरफ मुंह करकेलेटे रहें।

श्लोक-20. तदुभयं रागकाले।।

अर्थ- तिलतण्डुलक और क्षीर जलक आलिंगन तभी करने चाहिए जब दोनों कीकाम-उत्तेजना चरम सीमा पर पहुंचने वाली हो।

श्लोक-21. इत्युपगूहनयोगा बाभ्रवीयाः।।

अर्थ- आचार्य वाभ्रवीय द्वारा बताए गए आलिंगन केभेद समाप्त होते हैं।

श्लोक-22. सुवर्णनाभस्य त्वधिकमेकाङगोपगूहनचतुष्टयम्।।

अर्थ- इसमें सुवर्णानाभ जी के बताए गए चार प्रकारके आलिंगनों को बताया जा रहा है।

श्लोक-23. तत्रोरुसन्दंशेनैकमूरुमूरुद्वयं वा सर्वप्राणं पीडयेदित्यूरूपगूहनम्।।

अर्थ- अरुपगूहन-

स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे की तरफ मुंह करके लेट जाना चाहिएतथा अपनीएक जांघ से सहभागी के एक जांघ को बहुत जोर से या दोनों जांघों से उसकीदोनों जांघों को जोर से दबाने को अरुपगूहन आलिंगन कहा जाता है।

श्लोक-24. जघनेन जघनमवपीडय्च प्रकीर्यमाणकेशहस्ता नखदशनप्रहणनचुम्बनप्रयोजनाय तदुपरि लङ्घयेत्तञ्ञघनोपगूहनम।।

अर्थ- जघनोपगूहन- लेटी हुई अवस्था मेंजब स्त्रीकाम-उत्तेजना को तेज करने के लिए पुरुष की जांघ को अपनी जांघसे दबाती हुई उसकेऊपर लेट जाती है और फिर उसके मुंह को चूमती है, उसकेशरीर पर दांतों से काटती हैं औरनाखून गड़ाती हैं तो उसे जघनोपगूहन आलिंगनकहते हैं।

श्लोक-25. स्तनाभ्यामुरः प्रविश्य तत्रैय भारमारोपयेदिति स्नालिङ्गनम्।।

अर्थ- स्तनालिंगन-

जब स्त्री अपने स्तनों को पुरुष की छाती से लगाकर उनका सारावजन पुरुषकी छाती पर डाल देती है और उसके बाद जोर से दबाती है तो उसे स्तनालिंगनआलिंगन कहते हैं।

श्लोक-26. मुखे मुखमासज्याक्षिणी अक्ष्णोर्ललाटेन ललाटमाहन्यात्यात्सालालाटिका।।

अर्थ- ललाटिका-

अपने सहभागी के मुंह के सामने अपना मुंह और उसकी आंखों केसामने अपनीआंखें करके उसके मस्तक से अपने मस्तक को दबाने को ललाटिका आलिंगन कहाजाताहै।

श्लोक-27. संवाहनमप्युपगूहनप्रकारमित्येके मन्यन्ते। संस्पर्शत्वात्।।

अर्थ- कुछ कामशास्त्रियों के अनुसारअपने मुट्ठी से अपने सहभागी के शरीर कोदबाने की क्रिया को भी आलिंगन कहाजाता है क्योंकि इससे भी स्पर्श सुख मिलता है।

श्लोक-28. पृथक्कालत्वाद्धिन्नप्रयोजनत्वादसादारणत्वान्नेति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिकमुट्ठी से शरीर को दबाने की क्रिया को आलिंगन नहीं कहा जा सकताक्योंकि यहसिर्फ थकावट दूर करने के लिए होता है न कि संभोग क्रिया के लिए।

श्लोक-29. पृच्छतां श्रृण्वतां वापि तथा कथयतामपि। उपगृहविधिं कृत्स्नं रिरंसा जायते नृणाम्।।

अर्थ- जो भी व्यक्ति इस आलिंगन विधिको पूछेगाया सुनेगा या फिर किसी को बताएगा उसके अंदर भी स्त्री के साथसंभोग करने की इच्छाजागृत हो जाएगी और जो लोग इस विधि को प्रयोग मेंलाएंगें तो वह संभोग के समय मिलनेवाले पूरे आनंद को प्राप्त करेंगे।

श्लोक-30. येऽपि ह्यशास्त्रिताः केचित्संयोगा रागवर्धनाः। आदरेणैव तेऽप्यत्र प्रयोज्याः सांप्रयोगिकाः।।

अर्थ- इनके अलावा बहुत से अशास्त्रीयलेकिन काम-उत्तेजना को बढ़ाने वाले आलिंगन हैं लेकिन उनके बारे में यहांपर बताया नहींजा रहा है। संभोग क्रिया में प्रयुक्त होने वाले हर तरह केऔर बहुत से स्थानों मेंप्रचलित आलिंगन को यथास्थान और यथावसर प्रयोग मेंलाना चाहिए।

श्लोक-31. शास्त्राणां विषयस्तावद्यावन्मन्दरसा नराः। रतिचक्रे प्रवृत्ते तु नैव शास्त्रं न च क्रमः।।

अर्थ- शास्त्र के विषय की उसी समय तकजरूरत होती है जब तककि व्यक्ति काम-उत्तेजना में अंधा नहीं हो जाता।क्योंकि इसके बाद तो शास्त्र औरशास्त्र की बताई हुई किसी भी विधि काउपयोग नहीं किया जा सकता है।

स्त्री को संभोगकरने के लिए तैयार करने की प्राकक्रीड़ाआलिंगन है। संभोग करने से पहले हर बारप्राकक्रीड़ा करना एक प्राकृतिकक्रिया ही नहीं बल्कि इस क्रिया का एक शुभ चरण भी है।सामान्य तौर पर इसबात को देखा गया है कि संभोग क्रिया से पहले की जाने वालीप्राकक्रीड़ा कोपुरुष द्वारा ही पहल करके शुरु करना होता है।

आचार्यवात्स्यायन ने जिन 64 कलाओं के बारे में बताया हैवह उन्हें संभोग क्रिया की प्रमुख भूमिका समझताहै। आचार्य पद्मश्री अपनेनागरसर्वस्व में हेलाविच्छिति विब्बोक, किलकिंचित, विभ्रम लीला, विलास, हावविक्षेप, विकृत, मद मोहायित, कुट्टामिति, मुग्धता, तपन और ललित अर्थातइन 16 भावों को संभोग की प्रवृत्तिसमझते हैं।

ऊपर दिए गए 16 भाव स्त्री के अंदर काम-उत्तेजना जागृत होनेपर पैदा होते हैं। पुरुष को स्त्री के इनभावों को समझकर संभोग करने सेपहले की क्रियाएं जैसे आलिंगन, चुंबन आदि करने चाहिए। जो व्यक्ति स्त्री केइन हाव-भावों को न समझकर ठंडापड़ा रहता है तथा जब खुद के अंदरकाम-उत्तेजना जागृत होती है तो बिना भाव प्रकटकिए आलिंगन के लिए तैयार होजाता है तो ऐसे पुरुषों को न तो स्त्री का ही सुख प्राप्तहोता है और नही संभोग का सुख।

बहुत से विद्वानों केअनुसार सर्वगुण संपन्न और संभोग की 64 कलाओं में निपुण स्त्री

गुणहीन और संकेतहीन पतिको ऐसे फेंक देती हैंजैसे कि किसी मुरझाई हुई फूलों की माला को फेंक देतेहैं।

पुरुष चाहे हर तरहकी कला में सबसे ज्यादा निपुण हो लेकिनअगर स्त्री उसे काम-कला में अनाड़ी समझकरधिक्कार देती है तो उसे अपनाजीवन बेकार समझना चाहिए।

अंगसंकेत- ज्ञानवृद्धक सवाल तथा कुछ कहने में काम कास्पर्श, कामोत्तेजित अवस्था में बालों का स्पर्श, प्यार का इजहार करने में स्तनोंका स्पर्शहाथों के द्वारा करना चाहिए।

सही अवसर कोजानने के लिए मध्यमा (हाथ की बीच वाली उंगली)उंगली को तर्जनी उंगली पर चढ़ाना तथामौका मिलने का संकेत करने के लिएदोनों हाथों में अंजली बांध लेनी चाहिए और फिर बुलानेके लिए उसी उंगली कोउल्टी कर लेनी चाहिए।

पूर्व दिशा केसंकेत के लिए अंगूठे को प्रयोग किया जाताहै। तर्जनी उंगली का दक्षिण दिशा के लिए, पश्चिम दिशा के लिए मध्यमा उंगलीका और उत्तर दिशा के लिए अनामिका उंगली का प्रयोगकरना चाहिए।

कनिष्का की जड़ से शुरू होकर अंगूठे की ऊर्ध्वरेखा तक हरउंगलियों में 3-3 रेखा करके 15 रेखा होती हैं और इन्हीं रेखाओं के द्वाराप्रतिपदा सेलेकर 15 तिथियों का संकेत दिया जाता है। बाएं हाथ की रेखाओंसे शुक्ल पक्ष की तिथियोंका और दाएं हाथ की रेखा के द्वारा कृष्ण पक्ष कीतिथियों का संकेत होता है।

पोटली संकेत- प्रेम की खबर पहुंचाने में खुशबूदार सुपारी, आतिथ्य प्रेमकी सूचना पहुंचाने में कत्था और छोटी इलायची, जायफल और लौंग से संकेत दियाजाना चाहिए।

मूंगा प्रेम कोभंग करने का संकेत है। बहुत दिनों के बादसंभोग करने पर 2 मूंगे. कम बुखार में कड़वी वस्तु, संभोग के संकेत के लिएमुनक्का होता है।

शरीर के समर्पणके लिए कपास, प्राणों को समर्पित करने मेंजीरा, डर का इशारा करने में भिलावा और अभय संकेत मेंहरड़ का संकेत होताहै।

मोम की एक गोलसी टिकिया बना लें। फिर उसमें पांचोंउंगलियों के नाखूनों के निशान बना दें और उसकोलाल धागे से बांध दें। इसकोपोटली संकेत कहा जाता है। मदन-क्रीड़ा के संकेत मेंमोम, अनुराग के लिएलाल धागे का बंधन और कामदेव द्वारा जख्मी होने की सूचना मेंपांचोंउंगलियों के नाखून का निशान बनाया जाता है। इसी वजह से इसे पोटली संकेत कहाजाताहै।

वस्त्र संकेत- जिसका शरीर कामदेव के बाण सेकटा-फटा हो, ऐसी हालत कासंकेत फटे हुए लेकिन अच्छे कपड़े दिखाकर किया जाता है। उत्कटप्रेम कोदिखाने के लिए पीले या गेरुए रंग का कपड़ा देना जरूरी है।

जुदाई के समयफटे हुए कपड़ों से और मिलन के समय धागे केसाथ बंधन भेजकर संकेत करना चाहिए। एक के प्रेममें एक कपड़ा और दो केप्रेम में दो कपड़े देकर प्रेम का संकेत करना चाहिए।

तांबूल संकेत- पान का बीड़ा 5 प्रकार का होता है-

- पलंग के आकार का
- चौकोना
- अंकुश के आकार का
- कौशन या शलाका।

स्नेह कीज्यादती कासंकेत करने के लिए कौशल पान (जिसको कलात्मक तरीकेसे लगाया जाता है) काप्रयोग करना चाहिए। मदन व्यथा में कंदर्प (तिकोना) बीडा़ देना चाहिए औरसंभोग करने का संकेत देने के लिए पलंग के आकार का बीड़ा देना चाहिए।

चौकोर पान कीबीड़ा दिखाना अनसर का संकेत है। प्रेम केअभाव में बिना सुपारी का पान तथा प्रेम केसद्राव में इलायची के साथ पानदेना चाहिए।

जुदाई में होनेवाली हालत का संकेत पान उल्टा लगाकर कालेधागे से बांधकर करना चाहिए। संयोग की हालत मेंएक पान के मुंह को दूसरेपान के मुंह से मिलाकर लाल धागे से बांधकर दिखाना चाहिए।त्याग की सूचनामें पान को बीचों-बीच से फाड़कर काले धागे से बांधकर संकेत करनाचाहिए।

अधिक अनुराग होजाने पर पान के टुकड़े-टुकड़े करके जोड़देना चाहिए। बीच में केशर भर दी जाए और बाहरचंदन का लेप कर देना चाहिए।

फूलों की माला का संकेत- अनुराग में लाल, वियोग में गेरुआ और स्नेह कीकमी के कारण काले धागे की गूंथी हुई माला का उपयोग करनाचाहिए। कामशास्त्रके लेखकों ने स्त्री की चंद्रकांत मणि से उपमा दी है। जिस प्रकारचंद्रकांत मणि चंद्रमा की शीतल किरणों का स्पर्श पाते ही पिघल जाती है उसीतरह सेस्त्री पुरुष का संस्पर्श करते ही द्रवित हो जाती है। इसी वजह सेबुद्धिमान पुरुषको स्त्री का उपभोग बहुत ही समझदारी के साथ करना चाहिए।

कामोत्तेजितहोने के साथ-साथ उसमें विवेक होना बहुत जरूरीहै। काम के विद्वानों ने काम के ग्रंथोंकी रचना उसी उद्देश्य से की है किसंभोग के समय में जानवर की तरह संभोग नहीं करनाचाहिए।

आलिंगन- चुंबन तथा संकेतों आदि संस्पर्शों और स्त्री के स्वभाव आदि कामनोवैज्ञानिक शारीरिक अध्ययन करके ही संभोग क्रिया में लीन होना चाहिए।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे साम्प्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे आलिंगनविचाराः द्वितीयोध्यायः।

अध्याय 3 चुम्बन विकल्प प्रकरण

श्लोक(1)- चुम्बननखदशनच्देद्यानां न पौर्वापर्यमस्ति। रागयोगात् प्राक्संयोगादेषांप्राषान्येन प्रयोगः। प्रहणनसीत्कृतयोश्च संप्रयोगे।

अर्थ- नखक्षत (नाखूनों को गढ़ाना), दन्तक्षत (दांतों से काटना), चुम्बन आदि का प्रयोग अक्सर संभोग क्रिया करनेसेसहभागी की काम-उत्तेजना को जागृत करने से पहले किया जाता है। यह तीनोंएक-दूसरे से पीछेनहीं होते हैं क्योंकि संभोग क्रिया से पहले किसी चीजके लिए नियम नहीं होता किपहले चुंबन करे या कोई और क्रिया करें। संभोग केसमय तो सिर्फ स्ट्रोक और सीत्कार काही प्रयोग होता है।

श्लोक(2)- सर्व सर्वत्र। रागस्यानपेक्षितत्वात्। इति वात्स्यायनः।।

अर्थ- वात्स्यायन के मुताबिक उत्तेजनाकिसी नियमों में बंधी नहीं होती है।इसी वजह से चुम्बन, नाखूनों कोगढ़ाना और दांतों से काटना आदि क्रियाएं किसी भी समयकी जा सकती है।

श्लोक(3)- तानि प्रथमरतेनातिव्यक्तानि विश्रब्धिकायां विक्लपेन च प्रयुञ्जीत। तथाभूतत्वाद्रागस्य।ततः परमतित्वरया विशेषवत्समुच्चयेन रागसंधुक्षेणार्थम्।।

अर्थ- पहली बार संभोग क्रिया करते समयचुम्बन, नाखूनों को गढ़ाना और दांतों से काटना आदिक्रियाओं को एकसाथनहीं करना चाहिए। जिस तरह से शरीर में उत्तेजना बढ़ती हैउसी तरह चुम्बनआदि क्रियाओं को करना चाहिए। उत्तेजना बढ़ जाने के बाद चुम्बन आदि काएकसाथ और जल्दी-जल्दी प्रयोग करना चाहिए। इसकी वजह से काम-उत्तेजना तेजहोती हैऔर संभोग क्रिया में आनंद आता है।

श्लोक(4)- ललाटालककपोलनयनवक्षः स्तनोष्ठान्तुर्मखेषु चुम्बनम्।।

अर्थ- गाल, आंखे, छाती, माथा, स्तन, नीचे वाला होंठ और जीभ को चूमा जा सकता है। लाटदेश के लोग स्त्री की जांघ, बाहुमूल और नाभि को भी चूमते हैं। काम-उत्तेजना के न्यूनाधिक्य के कारण औरदेशाचार भेद चुम्बन के स्थानों में भेद है। वात्स्यायन के मुताबिक यहां परसभीमनुष्यों के चुंबन स्थानों की गणना की गई है।

वात्स्यायन केमुताबिक संभोग के समय काम-उत्तेजना को बढ़ानेके लिए चुम्बन करनाचाहिए। लेकिन चुम्बन के साथ नाखूनों को गढ़ाना औरदांतों से काटना स्वाभाविक हो जाताहै। जब पुरुष कामोत्तेजित हो जाता हैतो उसे उस समय यह ध्यान में नहीं रहता कि पहलेक्या करें और क्या न करें।

आचार्यवात्स्यायन ने यहां पर राग (उत्तेजना) शब्द देकर अपनीसार्वभौम काम-शास्त्रीय पश्चिम चारुता का परिचय दियाहै। संभोग क्रियाकरने से पहले रति की पांचवीं अवस्था को राग कहते हैं। संभोग कीप्रौढ़इच्छा का नाम रति है और जब यह रति धीरे-धीरे बढ़ती है तो वह प्रेम कहलातीहै।

श्लोक(5)- ऊरुसंधिबाहुनाभिमूलयोर्लाटानाम्।।

अर्थ- लाट देश के रहने वाले लोग स्त्री के गुप्त स्थानों जैसे होंठों, जांघ के जोड़, कांख और नाभि को चूमते हैं।

श्लोक(6)- रागवशाद्देशप्रवृत्तेश्च सन्ति तानि तानि स्थानानि, न तु सर्वजनप्रयोज्यानीति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक जो लोग ऐसे अंगों को चूमते हैं उनका यहचुम्बन देशाचार के अनुकूल है।

श्लोक(7)- तद्यथा-निमित्तकं स्फुरितकं घट्टितकमिति त्रीणि कन्या चुम्बनानि।।

अर्थ- जिस लड़की ने अभी युवावस्था में कदम रखा होउसका चुम्बन 3 तरह का होता है-

1. निमित्तक
2. स्फुरितक
3. घट्टितक

श्लोक(8)- बलात्कारेण नियुक्ता मुखे मुखमाधत्ते न तु विच्षेटत इति निमित्तकम्।।

अर्थ- निमित्तक-

जब पुरुष सबसे पहलेशर्माने वाली स्त्री से अपनेहोंठों पर जबरदस्ती चुंबन कराता है तो स्त्रीपुरुष के मुंह पर अपना हाथ रख तोदेती है लेकिन अपने होंठों को चूमने केलिए बिल्कुल भी नहीं हिलाती। इस तरह केचुंबन को निमित्तक कहा जाता है।

श्लोक(9)- वदने प्रवेशितं चौष्ठं मनागपत्रपावग्रहीतुमिच्छन्ती स्पन्दयति स्वमोष्ठं नोत्तरमुत्सहत इति स्फुरितकम्।।

अर्थ- स्फूरितक-

एकबार जब संभोग क्रिया हो जाती हैतो उसके बाद पुरुष अपने होंठों को जब स्त्री के होंठों पर रख देताहै तबशर्माती हुई स्त्री पति के होंठों को अपने होंठों से दबाना भी चाहती है औरअपने नीचे वाले होंठ को हिलाती भी है लेकिन शर्म के कारण उसके होंठ चिपकेरह जातेहैं। इस तरह के चुम्बन को स्फुरितक कहते हैं।

श्लोक(10)- ईषत्परिगृह्मा विनिमीलितनयना करेण च तस्य नयने अवच्छादयन्ती जिह्वाग्रेण घट्टयति इति घट्टितकम्।।

अर्थ- घट्टितक-

संभोग क्रिया काआनंद प्राप्त करने के बाद स्त्री अपनेहोंठों पर रखे हुए पुरुष के होंठोंको पकड़ती है लेकिन शर्म के मारे आंखेंबंद कर लेती है तथा अपने हाथों से पति कीदोनों आंखों को बंद करके जीभ केआगे के भाग से पति के होंठ को रगड़ती है। इसप्रकार के चुम्बन को घट्टितककहते हैं।

श्लोक(11)- सर्म तिर्यगुद्धान्तमवपीडितकमिति चतुविधमपरे।।

अर्थ- 4 तरह के चुंबन इस तरह से हैं-

1. सम अर्थात पति और पत्नी एक-दूसरे के सामने मुंहकरके एक-दूसरे के होंठों को चूसते हैं।

2. तिर्यक अर्थात् मुंह को थोड़ा सा मोड़कर तथाहोंठों को गोल-गोल आकार में बनाकर आपस में पकड़ना।
3. उदभ्रान्त अर्थात स्त्री की पीठ की तरफ बैठकरअपने हाथों से उसका सिर तथा ठुड्डी पकड़कर अपनी तरफ घुमाकर होठों को चूमना।
4. अवपीड़ितक अर्थात पहले दिए गए तीनों तरह के चुंबनोंमें होठों को बहुत जोर से दबाया जाए।

श्लोक(12)- अङ्गुलिसंपुटेन पिण्डीकृत्य निर्दशनमोष्ठोपुटेनावपीडयेदित्यवपीडितकं पञ्चममपि करणम्।।

अर्थ- पांचवा भेद-

पुरुष को अपनेदोनों हाथों की उंगलियों से स्त्री के दोनोंगालों को दबाकर उसके होंठों कोअपने मुंह में लेकर बहुत जोर से इस तरह सेदबाना चाहिए कि उसके दांत न गड़ने पाए। इसप्रकार के चुंबन को अवपीड़ितककहा जाता है।

श्लोक(13)- द्यूत चात्र प्रवर्तयेत्।।

अर्थ- चुम्बन द्यूत-

चुंबन करते समय स्त्री और पुरुष को आपस में बाजी लगानी चाहिए।

श्लोक(14)- पूर्वमधरसम्पादनेन जितमिदं स्यात्।।

अर्थ- पुरुष या स्त्री में से जो भी आपस में से किसी के होंठ को पहले पकड़ लेताहै उसी की जीत मानी जाती है।

श्लोक(15)- तत्र जितासार्धरुदितं करं विधुनुयात्प्रणुदेद्दशेतपरिवर्तयेद्वलादाहताविवदेत्पुनरप्यस्तु पण इति ब्रूयात्। तत्रापि जिता द्विगुणमायस्येत्।।

अर्थ- चुम्बन कलह-

अगर चुम्बनों की बाजी पुरुष मार लेता है तो स्त्री को हाथ-पैरों कोपटकना चाहिए, पति को धक्का मारकर हटा देना चाहिए, दांतों से काटना चाहिएतथा दूसरीतरफ मुंह करके सो जाना चाहिए। अगर पुरुष स्त्री का मुंह अपनीतरफ करना चाहे तोउसे उससे कहना चाहिए कि चलो एक बार हो जाए और अगर स्त्रीफिर भी हार जाती है तो उसेपहले से ज्यादा क्लेश आदि उत्पन्न कर देनेचाहिए।

श्लोक(16)- विश्रब्धस्यप्रमत्तस्य वाधरमवगृह्य दशनान्तर्गतमनिर्गमे कृत्वाहसेदुत्क्रोशेत्तर्जयेद्वल्गेदाह्लयेन्नृत्येतप्रनर्तितभ्रुणा च विचलनयनेनमुखेन विहसन्ती तानि तानि च ब्रूयात्। इति चुम्बनयुतकलहः।।

अर्थ- कपटघूत-

चुंबनों की बाजीलगाने पर दूसरी बार भी हार जाने पर स्त्रीको पुरुष के जरा सा भी असावधानहोते ही उसके होंठ को अपने दांतों से दबालेना चाहिए। ऐसा होने पर स्त्री को जोरसे हंसना चाहिए और पुरुष को कहनाचाहिए कि अगर छुड़ाने की कोशिश करोगे तो काटलूंगी। इसके बाद अपनी जीत परइतराती हुई पुरुष को ताना मारे, जो दिल में हो वही बोले, आंखों को घुमाकरऔर हंसते हुए पुरुष को चुनौती दें। यहां पर चुम्बन द्युतसम्बन्धीप्रेमकलेश समाप्त होता है।

श्लोक(17)- एतेन नखदशनच्देद्यप्रहणनद्यूतकलह व्याख्याताः।।

अर्थ- चुम्बन कलेश की ही तरह स्त्रीको पुरुष से नखक्षत (नाखूनों को गढ़ाना), दन्तक्षत (दांतों से काटना) तथाप्रहार करने की बाजी भी लगानी चाहिए तथा हारनेके बाद उसी तरह से गुस्साकरना चाहिए।

श्लोक(18)- चण्डवेगयोरेव त्वेषां प्रयोगः तत्सात्मयात्।।

अर्थ- यह प्रेम कलह ऐसे स्त्री-पुरूषों के लिए ही ठीक है जो बहुत हीतेज गति से संभोग क्रिया करते हुए बहुत समय तक ठहरते हैं।

श्लोक(19)- तस्यां चुम्बन्त्यामयमप्युत्तरं गृह्णीयात्। इत्युत्तरचुम्बितम्।।

अर्थ- जिस समय स्त्री, पुरुष केहोंठों को चूम रही हो उस समय पुरुष को भी स्त्री के ऊपर वाले होंठ को अपनेहोठों से दबा लेना चाहिए। इस तरह के चुम्बन को उत्तर चुम्बन कहते हैं।

श्लोक(20)- ओष्ठसंदंशेनावगृह्यौष्ठद्वयमपि चुम्बेत। इति संपुटकं स्त्रियाः, पुंसो वाऽजातव्यञ्जनस्य।।

अर्थ- पुरुष को स्त्री के दोनोंहोंठों को पकड़कर चुम्बन करना चाहिए। इसी तरहस्त्री भी पुरुष के दोनोंहोंठों को पकड़कर चूम सकती है। लेकिन यह उन्ही पुरूषों केसाथ संभव हैजिनके मूंछे नहीं होती है। इस चुम्बन को सम्पुटिकल कहते हैं।

श्लोक(21)- तस्मिन्नितरोऽपि जिह्वयास्या दशनान्घट्टयेत्तालु जिह्वां चेति जिह्वायुद्धम्।।

अर्थ- जीभ, मुंह और दांत युद्ध-

पुरुष जब सम्पुट चुम्बन करता हुआस्त्री के मुंह के तालु और दांतों में अपनी जीभ को जोर से रगड़ता है तोउसे जिह्वायुद्ध (जीभ का युद्ध) कहते हैं।

श्लोक(22)- एतेन बलाद्वदनरदनग्रहणं दानं च व्याख्यातम्।।

अर्थ- इसी तरह मुखयुद्ध (मुंह का युद्ध) और दन्तयुद्ध (दांतों को युद्ध) भी होताहै।

श्लोक(23)- समं पीडितमञ्चितं मृदु शेषाङ्गेषु चुम्बन स्थानविशेषयोगात्। इति चुम्बनविशेषाः।।

अर्थ- खास प्रकार के चुम्बन- इन चुम्बनों के अलावा 4 प्रकार के चुम्बन होते हैं-

1. सम- इस प्रकार के चुम्बन मेंस्त्री और पुरुषको एक-दूसरे के सामने बैठकर या लेटकर एक-दूसरे की जांघों, छाती और बगल को चूमना या गुदगुदाना होता है।
2. पीड़ित- स्त्री के गालों, नाभि और नितम्बों को जोर से दबाना या उनको नोचना।
3. अन्चित- स्तनों के नीचे और बाहूमूल में धीरे सेगुदगुदी करना या फिर हल्के से चूमना।

4. मृदु- स्त्री के स्तनों में, गालों में, नितंबों तथा पीठ पर हाथ फेरना या सहलाना।

आचार्यवात्स्यायन चुंबनमें बाजी लगाने के बारे में बताते हैं अर्थात स्त्री या पुरुषमें से कौनपहले किसका होंठ चूमता है या पकड़ता है। अगर इसमें स्त्री हार जातीहै तोउसे रति कलह करने की राय दी है जैसे वह सिसकियां भरते हुए अपने हाथों कोपटके, पुरुष को धक्का मारकर अपने से दूर कर दे, अपने मुंह को दूसरी तरफघूमा ले।अगर फिर भी पुरुष जबर्दस्ती उसे अपनी तरफ करना चाहे तो स्त्री कोउससे झगड़ा करते हुएकहना चाहिए कि चलो एक बाजी फिर से हो जाए।

अगर स्त्रीदुबारा से चुंबनों की बाजी हार जाती है तो उसेपहले से भी ज्यादा शोर मचानाचाहिए। इसके बाद अचानक धोखे से पुरुष केहोठों को अपने दांतों से दबाकर हंसते हुए अपनेजीतने की घोषणा करनी चाहिए।पुरुष को यह कहकर डराए कि अगर छुड़ाने की कोशिश की तोकाट लूंगी। आंखोंके इशारे से अपनी जीत को जाहिर करे। इसी तरह दांत और नाखूनों सेभी चोटपहुंचाने की कला के भेद हैं।

आचार्यवात्स्यायन ने इस तरह के क्लेश की जो सीख स्त्री कोदी है उसका अर्थ उत्तेजना कोबढ़ाना है। यह जो क्लेश करने के बारे मेंबताया है वह असली झगड़ा न होकर सिर्फकाम-उत्तेजना को बढ़ाने वाले प्रेमक्लेश होता है। इस तरह के रगड़-झगड़, वाद-विवाद से स्त्री और पुरुष की उनग्रंथियों से (जिनका संबंध संभोग क्रियासे रहता है) स्राव होता रहता हैऔर शरीर में रोमांच, मन में स्फूर्ति और गुप्त अंगों में उत्तेजना बढ़तीहै।

लेकिन इस तरह का प्रेमक्लेश हर किसी स्त्री और पुरुषके लिए सहीं नहीं है। जो स्त्री-पुरुष बहुततेजी से संभोग क्रिया करने वालेहोते हैं या इस क्रिया के समय जल्दीस्खलित नहीं होते हैं, इस तरह के क्लेह आदि से उनका संवेग बढ़ जाता है, संभोग शक्ति की बढ़ोतरी होती है और शारीरिक तथा मानसिक आनंदप्राप्त होताहै।

श्लोक(24)- सुप्तस्य मुखमवलोकयन्त्या स्वाभिप्रायेण चुम्बनं रागदीपनम्।।

अर्थ- गुप्त चुम्बन तिथि-
अगर स्त्री सोए हुए पुरुष के मुंह को ताकती हुई चूम लेती है तो वहपुरुषतुरंत उसकी भावनाओं को समझकर जाग जाता है। इस तरह के चुम्बन को रागदीपनकहतेहैं।

श्लोक(25)- प्रमत्तस्य विवदमानस्य वाऽन्यतोऽभिमुखस्य सुप्ताभिमुखस्य वा निद्राव्याघातार्थ चलितकम्।।

अर्थ- अगर पुरुष किसी तरह के झगड़ेआदि के कारण स्त्री की तरफ बिल्कुल ध्यान नहींदे रहा हो तो उसका ध्यानअपनी ओर आकर्षित करने के लिए स्त्री को साधारण तरीके काचुम्बन करनाचाहिए। इस तरह के चुम्बन को चलित कम कहा जाता है।

श्लोक(26)- चिररात्रावागतस्य शयनसुप्तायाः स्वाभिप्रायचुम्बनं प्रातिबोधिकम्।।

अर्थ- यदि पुरुष किसी कारण से रात कोदेर से घर आता है और सोती हुई स्त्री कोचूमता है तो इससे पुरुष का मकसदभी पता चलता है और स्त्री भी जाग जाती है। इस प्रकारके चुम्बन कोप्रातिबोधिक कहते हैं।

श्लोक(27)- सापि तु भावजिज्ञासार्थिनी नायकस्यागमनकालं संलक्ष्य व्याजेन सुप्ता स्यात्।।

अर्थ- पुरुष का इस तरह चुम्बन करकेजगाने वाली स्त्री को चाहिए कि वह उसके प्यारकी परीक्षा लेने के लिए उसकेआने पर बहाना बनाकर सोती रहे।

श्लोक(28)- आदर्शे कुडये सलिले वा प्रयोज्यायायश्छायाचुम्बनमा-कारप्रदर्शनार्थमेवकार्यम्।।

अर्थ- पानी में, आईने में, दीवार परअगर स्त्री की परछाई दिख रही हो तो पुरुष को अपने प्यार का इजहार करने केलिए उस परछाई का चुम्बन करना चाहिए।

श्लोक(29)- बालस्य चित्रकर्मणः प्रतिमायाश्च चुम्बनं संक्रान्तकमालिंगनं च।।

अर्थ- किसी छोटे बच्चे को, तस्वीर कोया मूर्ति आदि को चूमने या आलिंगन करने के बहाने अपने मन के भावों कोस्त्री पर प्रकट किया जा सकता है।

श्लोक(30)- तथा निशि प्रेक्षणके स्वजनसमाजे वा समीपे गतस्य प्रयोज्याया हस्तांङलिचुम्बनं संविष्टस्य वा पादाङलिचुम्बनम्।।

अर्थ- रात में जिस स्थान पर कोई खेलआदि हो रहा हो या फिर सारे रिश्तेदारइकट्ठे हो रहे हों और वहां पर अगरस्त्री पास ही बैठी हो तो चुपके से उसके हाथ या पैरोंकी उंगलियों कोचूमकर अपने प्यार को प्रकट करना चाहिए।

श्लोक(31)- संवाहिकायास्तु नायकमाकारयन्त्या निद्रावशादकामाया इव तस्योर्वोर्वदनस्य निधानमुरुचुम्बनं चेत्याभियोगिकानि।।

अर्थ- अगर पुरुष के पैरों को दबानेवाली स्त्री उससे प्रेम करती हो तो अपने प्यारको प्रकट करने के लिएस्त्री को उसकी जांघ पर अपने मुंह को रख देना चाहिए या उसकेपैर को अंगूठेको चूसना चाहिए। लेकिन अगर कोई स्त्री को देखता है तो उसे यही लगनाचाहिएकि स्त्री को नींद आ रही है इसलिए उसका मुंह पुरुष की जांघ पर पड़ा है।

श्लोक(32)- कृते प्रतिकृतं कुर्यात्ताडिते प्रतिताडितम्। करणेन च तेनैव चुम्बिते प्रतिचुम्बितम्।।

अर्थ- संभोग क्रिया करने से पहलेकाम-उत्तेजना को तेज करने के लिए जिस तरह काबर्ताव पुरुष करता है, वैसाही स्त्री को भी करना चाहिए। जिस चीज से पुरुष स्त्री परप्रहार करता हैउसी से स्त्री को भी पुरुष पर प्रहार करना चाहिए। जिस प्रकार पुरुषचुम्बनकरता है उसी तरह स्त्री को भी चूमना चाहिए।

जानकारी-

एक-दूसरे केकरीब आना, एक-दूसरे का भरोसा जीतना, चुम्बन मेंक्लेश, प्रहरण, दन्तक्षत, नखाघात आदि स्त्री और पुरुष के प्रेम, भरोसे तथासंभोग-क्रिया को सुखदायी बनाते हैं।

चुम्बन के लिएहोठों को खास अंग इसलिए माना जाता है क्योंकिशरीर में सबसे ज्यादा कोमल अंगयहीं होते हैं। होंठों के अंदर ऐसी तरंगेबहती है जो बाहरी स्पर्श पाते ही उननाड़ियों और ग्रंथियों को उत्तेजितकरके उनका मुंह खोल देती है जिनमें कि अंदर स्रावहोता है। इसके साथ हीपहले सुख का एहसास भी इसी विद्युतधारा से होता है। ये तरंगेइतनी ज्यादातेज और गतिशील होती है कि युवक और युवती इसके असर में आनंद में भरेरहतेहैं। इस समय वह किसी तरह के अच्छे या बुरे परिणाम को न सोचते हुए सिर्फसंभोग सुखके लिए बेचैन रहते हैं।

होंठ शरीर केबहुत ही कोमल अंग होते हैं इसी वजह से कोमलभावों को और कोमल प्रभाव डालनेमें इस अंग की तरंगे बहुत ज्यादा शक्तिशालीहोती है। जिस समय स्त्री और पुरुषएक-दूसरे को चुम्बन करते हैं उस वक्तउनके सांस लेना और सांस छोड़ना, उनकी आंखों की रोशनी, शारीरिक ऊर्जा सब कुछकोमल भावों और प्रभावों से व्याप्त रहता है तथा इन भावोंप्रभावों काआदान-प्रदान स्त्री और पुरुष में होता है।

इन्हीं केद्वारा आपस में प्यार, भरोसा और उत्तेजना कीबढ़ोतरी होती है। यहां तक कि स्त्री और पुरुष पर इसका असर इतनापड़ता हैकि उनमें अगर कोई बुराई होती है तो दूसरे को उसकी वह बुराई भी अच्छी लगतीहै।

स्त्री और पुरुषों कीजिंदगी में नई क्रांति पैदा करने में चुम्बन को सबसे पहला माध्यममानाजाता है। आनंद को महसूस करने का मुख्य द्वार चुम्बन ही होता है।

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 4 नखरदन जातिप्रकरण

श्लोक (1)- रागवृद्धौ संघर्षात्मकं नखविलेखनम्।।

नखच्छेद

अर्थ- उत्तेजना के अधिक बढ़ जाने पर स्त्री औरपुरुष एक-दूसरे के शरीर पर नाखूनों को गढ़ाते हैं।

श्लोक (2)- तस्य प्रथमसमागमे प्रवासप्रत्यागमने प्रवासगमने क्रुद्धप्रसन्नायां मत्यां च प्रयोगः। न नित्यमचण्डवेगयोः।।

अर्थ- अपने अंदर की काम-उत्तेजनाकोस्त्री को दिखाने के लिए मन्दवेगी (संभोग क्रिया में पूरी तरह से जो पुरुषसंपन्ननहीं होता) पुरुष कहीं दूसरे देश आदि से वापस आने के बाद, सुहागरातके दिन, स्त्री के गुस्से में आने के बाद, काम से खाली होने के बाद या खुशहोने के बादनाखूनों से सहलाते और खुजलाते हैं।

श्लोक (3)- तथा दशनच्छेद्यस्य सात्म्यवशाद्धा।।

नखच्छेद के भेद

अर्थ- जिस तरह से संभोग क्रिया के समय नाखूनों से सहभागी के शरीर परहमला किया जाता है वैसी ही क्रिया दांतों से भी की जा सकती है।

श्लोक (4) – तदाच्छुरितकमर्धचन्द्रो मंडल रेखा व्याघ्रनखं मयूरपदकं शशप्लुतकमत्पलपत्रकमिति रूपतोऽष्टविकल्पम्।।

अर्थ- निशानों के अनुसार नखच्छेद 8 प्रकार के होते हैं-

1. आच्छुरितक।
2. अर्धचन्द्र।
3. मंडल।
4. रेखा।
5. व्याघ्रनख।
6. मयूरपदक।
7. शशप्लुतक।
8. उत्पलपत्रक।

श्लोक (5)- कक्षौ स्तनौ गलः पृष्ठं जघनमुरू च स्थानानि।।

नखच्छेद स्थान

अर्थ- दोनों बगलों में, दोनों स्तन, गला, पीठ, जांघों और जांघों के जोड़ नाखून गढ़ाने के स्थान होते हैं।

श्लोक (6)- प्रवृत्तरतिचक्राणां न स्थानमस्थानं वा विद्यत इति सुवर्णनाभः।।

अर्थ- सुवर्णनाभ के विचार

कोई भी स्त्री और पुरुषजब संभोग क्रिया में लीन हो जाते हैंतो उन्हें इस बात का कोई ध्यान नहीं रहजाता कि सहभागी के शरीर में किसस्थान पर नाखूनों को गड़ाना चाहिए या किस स्थान परनहीं गड़ाना चाहिए।

श्लोक (7)- तत्र सव्यहस्तानि प्रत्यग्रशिखराणि द्वित्रिशिखराणि चण्डवेगयोर्नखानि स्युः।।

अर्थ- ऐसे व्यक्ति जिनमेंकाम-उत्तेजनाबहुत ज्यादा होती है वह अपने बाएं हाथ के नाखूनों को नुकीलेतथा लंबे आकार के रखतेहैं। कोई तो तो अपने हर नाखून में 2-3 नोकें रखताहै।

श्लोक (8)- अनुगतराजि सममुज्जवलममलिनमविपाटितं विवर्धिष्णु मृदुस्त्रिग्धदर्शनमिति नखगुणा।।

अर्थ- ऩाखूनों के 8 गुण

1. नाखून के बीच में जो लाइनेहोती हैं वह नाखून के रंग की ही होनी चाहिए।
2. नाखून हमेशा चमकदार होनेचाहिए।
3. नाखूनों को साफ करके रखनाचाहिए।
4. सारे नाखून एक ही आकार के होनेचाहिए न तो कोई ऊंचा-नीचा होना चाहिए और न ही कोई टेढ़ा-मेढ़ा होना चाहिए।
5. नाखून फटे हुए नहीं चाहिए।
6. नाखून बढ़ने वाले होनेचाहिए।
7. नाखून हमेशा मुलायम होनेचाहिए।
8. नाखून देखने में चिकने होने चाहिए।

श्लोक (9)- दीर्घाणि हस्तशोभीन्यालोके च योषितां चित्तग्राहीणि गौडानां नखानि स्युः।।

अर्थ- एक गौड़ नाम का देश है जहां केलोगों के नाखून लंबेहोते हैं और यही लंबे नाखून उनके हाथों की शोभा मानेजाते हैं। इन नाखूनों कोदेखकर ही वहां की युवतियां वहां के युवकों की ओरआकर्षित होती हैं।

श्लोक (10)- मध्यमान्युभयभाञ्जि महाराष्ट्रकाणामिति।।

अर्थ- महाराष्ट्र में रहने वाले निवासियों के नाखून मध्यम आकार के होते हैं।

श्लोक (11)- तैःसुनियमितैर्हनुदेशे स्तनयोरधरे वा लघुकरणमनद्रतलेखंस्पर्शमात्रजननाद्रोमाञ्चकरमंते संनिपातवर्धमानशब्दमाच्छुरितकम्।।

अर्थ- नखच्छेद के लक्षण

अपने दोनों हाथों की उंगलियों कोएकसाथ मिलाकर गालों, स्तनों और होंठों पर इतने हल्के से स्पर्श करना चाहिएकि शरीर में उत्तेजना सी भर जाए। इसके बादअंगूठे से दूसरे नाखूनों काखुटका मारकर स्पर्श करना आच्छुरितक नखच्छेद कहलाता है।

श्लोक (12)- प्रयोज्यायां च तस्याग्ङसंवाहने शिरसः कण्डूयने पिटकभेदने व्याकुलीकरणे भीषणेन प्रयोगः।।

अर्थ- आच्छुरितक का प्रयोग

जब स्त्री पुरुष के शरीर को दबा रही हो, सिर खुजला रही हो, मुहांसों कोफोड़ रही हो या जब स्त्री के शरीर में इतनीउत्तेजना भरनी हो कि वह बेचैनहो जाए तो उस समय आच्छुरितक नखच्देद्य का इस्तेमालकरना चाहिए।

श्लोक (13)- हृयस्वानि कर्मसहिष्णूनि विकल्पयोजनासु च स्वेच्छापातीनि दाक्षिणात्यानाम्।।

अर्थ- दक्षिण देश में रहने वाले लोगअक्सर छोटे नाखून रखते हैं। उनके ऐसे नाखूनहर तरह के नखच्छेद्य कर सकतेहैं। ऐसे नाखून न तो टूटते है और न ही मुड़ते हैं।

श्लोक (14)- ग्रीवायां स्तनपृष्ठे च वक्रो नखपदनिवेशोऽर्धचन्द्रकः।।

अर्थ- अर्धचन्द्र

संभोग क्रिया के जब स्तनों तथा गर्दन पर अर्धचन्द्र की तरहनाखूनों कोगढ़ाकर निशान बनाया जाता है तो उसे अर्धचन्द्र नखच्छेद्य कहा जाता है।

श्लोक (15)- तावैव द्वौ परस्पराभिमुखौ मण्डलम्।।

अर्थ- मंडल

जब दो अर्धचन्द्रों को एक-दूसरे के आमने-सामने पास ही पास किया जाता है तो उसे मण्डल नखच्छेद कहतेहैं।

श्लोक (16)- नाभिमूलककुन्दरवंक्षणेषु तस्य प्रयोगः।।

अर्थ- प्रयोग

संभोग क्रिया के समय सहभागी के पेड़ू में ककुंदर और जांघों केजोड़ो में मण्डल नाम का गोल नखक्षत करना चाहिए।

श्लोक (17)- सर्वस्थानेषु नातिदीर्घा लेखा।।

अर्थ- रेखा

संभोग क्रिया के समय सहभागी के शरीर के किसी भी अंग में अपनेनाखूनों केद्वारा रेखा सी बनाई जा सकती है लेकिन कुछ ज्यादा बड़ी नहीं।

श्लोक (18)- सैवा वक्रा व्याघ्रनखकमास्तनमुखम्।।

अर्थ- अगर उस रेखा को थोड़ा सा टेढ़ा खींच करके स्तन के या मुंह के पास खींचीजाए तो उसे व्याघ्ररेखा कहा जाता है।

श्लोक (19)- पञ्त्रभिरभिमुखैलेखा चुचुकाभिमुखी मयूरपदकम्।।

अर्थ- मयूरपदक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री के स्तनों के निप्पलों को हाथ कीपांचोंउंगलियों से पकड़कर जब अपनी तरफ खींचा जाता है तो उस समय जो रेखांए बनती हैउन्हें मयूरपदक कहा जाता है।

श्लोक (20)- तत्संप्रयोगश्र्लाघायाः स्तनचूचुके संनिकृष्टानि पञ्त्रनखपदानि शशप्लुतकम्।।

अर्थ- शशप्लुतक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री मयूर पदक नखक्षत की इच्छा करतीहै तो उससमय उसके स्तनों के निप्पलों को पांचों उंगलियों से दबाकर जो निशान बनादियाजाता है तो उसे शशलुतक कहते हैं।

श्लोक (21)- स्तनपृष्ठे मेखालापथे चोत्पलपत्राकृतीत्युपलपत्रकम्।।

अर्थ- उत्पल पत्रक
संभोग क्रिया के समय जब स्त्री के स्तन और कमर पर कमल कीपंखुड़ियों कीतरह नाखूनों से निशान बनाए जाते हैं उसे उत्पलपत्रक कहा जाता है।

श्लोक (22)- ऊर्वाः स्तनपृष्ठे च प्रवासं गच्छतः स्मारणीयके संहताश्र्चतस्त्रस्तिस्त्रो वा लेखाः। इति नखकर्माणि।।

अर्थ- जिस समय पुरुष अपनी पत्नी सेदूर जा रहा होता है तो वह स्त्री के स्तनों तथाजांघों के जोड़ों पर अपनेनाखूनों से निशान बना देता है ताकि स्त्री को उननिशानों को देखकर उसकीयाद आती रहे।

श्लोक (23)- आकृतिविकारयुक्तानि चान्यान्यपि कुर्वीत।।

अर्थ- इनके अलावा स्त्री के शरीर पर दूसरे कई तरह के निशान बनाए जा सकते हैं।

श्लोक (24)- विकल्पानामनन्तत्वादानन्तयाच्च कौशलविधेरभ्यासस्य चसर्वगामित्वाद्रागात्मकत्वाच्छेद्यस्य प्रकारन्कोऽभिसमीक्षितुमर्हतीत्याचार्याः।।

अर्थ- कामशास्त्र की रचना करने वालेलेखकों ने यह कहा है कि अभ्यास तथा कौशलसे व्यापकता के कारण नखक्षत केअलग-अलग भेदों की कोई गिनती नहीं की जा सकतीहै। इसके अलावा काम-उत्तेजनामें भरकर व्यक्ति नखक्षत करने में लीन हो जाता है। इसअवस्था में उसेनखक्षत करने की कला और नखक्षत के भेदों का ध्यान नहीं रहता है।

श्लोक (25)- भवित हिरागेऽपि चित्रापेक्षा। वैचित्र्याच्च परस्परं रागो जनयित्वयः।वैचक्षणययुक्ताश्र्च गणिकास्तत्कामिनश्र्च किं पुनरिहेति वात्यायनः।।

अर्थ- इस बताए हुए कथन के मुताबिकआचार्य वात्स्यायन का कहना है कि उत्तेजितअवस्था में कई तरह कीचित्र-विचित्र क्रियाएं करने की इच्छा बनी ही रहती है। जो लोगसंभोग करनेकी बहुत सी कलाओं में निपुण होते हैं उनसे संभोग करने की इच्छा ऐसीस्त्रियां भी रखती हैं जो इस कला में बहुत ही ज्यादा निपुण होती हैं और ऐसीहीस्त्रियों की इच्छा इस कला में निपुण पुरुष भी किया करते हैं।

श्लोक (26)- न तु परपरिगृहीतास्वेवं। प्रच्छेन्नेषु प्रदेशेषु तासामनुस्मरणार्थ रागवर्धनाच्च विशेषान्दर्शयेत्।।

अर्थ- पराई स्त्रियों के साथ नखक्षत (नाखूनों से काटना), दन्तक्षत (दांतों से काटना) आदि नहीं करना चाहिए बल्कियादगार के लिए तथा उत्तेजनाको बढ़ाने के लिए उनके गुप्त स्थानों मेंनाखूनों के द्वारा निशान बना देने चाहिए।

श्लोक (27)- नखक्षतानि पश्यन्त्या गृढास्थानेषु योषितः चिरोत्सृटाप्यभिनवा प्रीतिर्भवति पेशला।।

अर्थ- स्त्री जब अपने गुप्त अंगों में नाखूनों के निशान देखती है तो उसे अपनेपुराने प्रेमी की याद आ जाती है।

श्लोक (28)- चिरोत्सृष्टेषु रागेषु प्रीतिर्गच्छेत्पराभवभ्। रागायतनसंस्मारि यदि न स्यान्नखक्षतम्।।

अर्थ- स्त्री के शरीर पर अगर रूप, गुण, यौवन की याद दिलाने वाले पुरुष के नाखूनों केनिशान नहीं होते हैं तोइसके कारण उसका काफी दिनों से छूटा हुआ प्यारबिल्कुल ही समाप्त हो जाताहै।

श्लोक (29)- पश्यतो युवतिं दूरान्नखोच्छिष्टपयोधराम्। बहुमानः परस्यापि रागयोगश्र्च जायते।।

अर्थ- पुरुष ने जिस स्त्री के शरीर परनाखूनों के निशान दिये हो उसे जब वह दूर सेही देखता है तो उसके अंदरउसके प्रति सम्मान और काम-उत्तेजना पैदा हो जाती है।

श्लोक (30)- परषश्र्च प्रदेशुषु नखचिह्नैर्विचिह्नितः। चितं स्थिरमपि प्रायश्र्चलयत्येव योषितः।।

अर्थ- अपने शरीर के अलग-अलग अंगों में पुरुष के द्वारा लगाए गए नाखूनों के निशानदेखकर अक्सर स्त्री का दिल खुश हो जाता है।

श्लोक (31)- नान्युत्पटुतरं किंचिदस्ति रागविवर्धम्। नखदन्तसमुत्थानां कर्मणां गतयो यथा।।

अर्थ- स्त्री और पुरुष की काम-उत्तेजना को सबसे ज्यादा नखक्षत और दंतक्षतक्रिया तेज करती है।

जानकारी-

वात्स्यायन नेकामसूत्र में खासतौर पर 8 तरह के नखक्षतों कोबताया है और यह भी बताया है कि नखक्षतों को किस समय, किस जगह और किस तरहका करना चाहिए।

संभोग क्रिया केसमय नखक्षत करना एक कला माना जाता है।वात्स्यायन का यह विचार सबसेअच्छा लगता है कि संभोग करते समय पुरुष को हरक्रिया सही तरीके से करने की इच्छा होतीहै। जिस कार्य को पुरुष सबसे अलगतरीके से करता है स्त्रियां भी उसी पुरुष कोसबसे ज्यादा प्यार करती हैऔर उसको पाने की कोशिश में लगी रहती हैं।

वात्स्यायन केमुताबिक संभोग क्रिया के समय नखक्षत सिर्फसंभोग क्रिया को याद करना ही है।जो स्त्री किसी कारण से अपने प्रेमी कोछोड़ देती है वह अगर अपने शरीर के गुप्तस्थानों में पुरुष के द्वारा दिएहुए निशानों को देखती है तो उसके दिल में प्रेमी केलिए फिर से प्यार उमड़पड़ता है।

नखक्षत औरदंतक्षत क्रिया के फलस्वरूप स्त्री के शरीर पर जोनिशान होते हैं वह उसकोउसके यौवनवास्था की याद दिलाते हैं। अगर उस तरहके निशान नहीं होते तो स्त्री लंबेसमय से अपने छोड़े हुए प्रेमी कोबिल्कुल ही भूल जाती है। यह ही निशान स्त्री कोअपने रूप, यौवन और संभोगक्रिया में बिताए हुए पलों को आंखों के सामने ले आते हैं।

शरीर के उनभागों में काम-उत्तेजना बढ़ाने वाले केंद्र होतेहैं जो संभोग से पहले की जानेवाली चुंबन, आलिंगन या नखक्षत क्रीड़ा कीप्रक्रिया में यौनरूप से ज्यादाअनुभूतिशील होते हैं। आचार्य वात्स्यायनने शरीर के जिन अंगों में नखक्षत करने का विधानबताया है वह सभीकाम-उत्तेजना के केंद्र हैं। यौन दृष्टि के मुताबिक हर इंसान केयह अंगशरीर के दूसरे अंगों की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील होते हैं। इनके अलावाउसके कुछ ऐसे अंग भी हैं जो किसी खास मौके पर संवेदनशील हो जाते हैं। यौवनकेसमय यह काम-उत्तेजना के केंद्र ज्यादा खास स्थान रखते हैं। राग कीअभिवृद्धि, पूर्ण अनुभूति और तृप्ति किस तरह से मिलती है- इसकी शिक्षामेंनखक्षत आदि का ज्ञान जरूर हासिल करना चाहिए। यह प्रेमी का कर्तव्य होता हैकि वह प्राकक्रीड़ा के स्त्री के शरीर के उन अंगों को तलाश करके विकसितकरेजिसकी वजह से प्रेमिका में पूरी तरह से काम-उत्तेजना पैदा हो जाए।आचार्यवात्स्यायन ने इसी दृष्टिकोण को अपने ध्यान में रखकर नखक्षत औरदंतक्षत अध्याय की रचनाकी है।

यहां पर एक बातबताना और भी जरूरी है कि आचार्य वात्स्यायनने जिस तरह संभोग करने केलिए पुरुष और स्त्री को शश या मृगी आदि कीसंज्ञा दी है उसी तरह शारीरिक विज्ञान औरमनोविज्ञान के दृष्टिकोण सेनखक्षत प्रयोग के लिए भी उसे वर्गीकरण करना चाहिए

थाक्योंकि हर इंसान कासांचा बराबर होते हुए भी आवयविक गठन अलग-अलग होता है।
श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीयेकामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे चतुर्थेऽध्यायः।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 5 दशन छेद्यविधि प्रकरण

श्लोक(1)- उत्तरौष्ठमन्तर्मुखं नयनमिति मुत्तवा चुम्बनवद्दशनरदन स्थानानि।।

अर्थ- ऊपर वाला होंठ, आंख और जीभ को छोड़कर बाकी सभी वह अंग जिनमें चुंबन किया जा सकता है उनको दांतों से भीकाटा जा सकता है।

श्लोक(2)- गुणानाह- समाः स्निग्धच्छाया रागग्राहिणो युक्तप्रमाणा निश्छिद्रास्तीक्ष्णाग्रा इति दशनगुणाः।।

अर्थ- दांतों के गुण-

दांत ऊंचे-नीचे नहोकर बिल्कुल समान होने चाहिए। दांतों मेंचमक होनी चाहिए, पान आदि खाने से दांत लाल नहीं होने चाहिए। दांत न तो बहुतज्यादा बड़े होने चाहिए औरन ही ज्यादा छोटे होने चाहिए। दांतों के बीचमें छेद नहीं होना चाहिए। दांतएक-दूसरे से बिल्कुल सटे होने चाहिए और तेजहोने चाहिए।

श्लोक(3)- कुण्ठा राज्युद्रताः पुरुषाः विषमाः श्लक्ष्णाः पृथवो विरला इति च दोषाः।।

अर्थ- दांतों के अवगुण-

दांतों काछोटा-बड़ा होना, बाहर की तरफ निकलना, एक-दूसरे से दूरी पर होना, खुरदरे होना, पीलापन छाना आदि।

श्लोक(4)- गूढकमुच्छूनकं बिन्दुर्बिन्दुमाला प्रवालमणिर्मणिमाला खण्डाभ्रकं वराहचर्वितकमिति दशनच्छेदनविकल्पाः।।

अर्थ- दांतों से काटने वाले 8 भेद-

गूढ़क, उच्छूनक, बिन्दुमाला, बिन्दु, प्रवासमणि, मणिमाला, खण्डाभ्रक तथा वराहचर्वित दांतों से काटने वाले 8 भेद होते हैं।

श्लोक(5)- नातिलोहितेन रागमात्रेण विभावनीयं गूढकम्।।

अर्थ- गूढ़क

जब होंठों कोदांतों से हल्का सा दबाया जाता है तो होंठ मेंहल्का सा लालपन आ जाता हैलेकिन निशान न उभरे तो उसे गूढ़क कहा जाता है।

श्लोक(6)- तदेव पीडनादुच्छूनकम्।।

अर्थ- उच्छूनक

होंठ को जोर सेकाटने को उच्छूनक कहा जाता है।

श्लोक(7)- तदुभयं बिन्दुरधरमध्य इति।।

अर्थ- उच्छूनक गुढक और बिन्दु होंठों के बीच में किये जाते हैं।

श्लोक(8)- उच्छूनकं प्रवालमणिश्च कपोले।।

अर्थ- उच्छूनक और प्रवालमणि गालों पर ही किये जाते हैं।

श्लोक(9)- कर्णपूरचुंबन नखदशनच्छेद्यमिति सव्यकपोलमण्डनानि।।

अर्थ- दांतों और नाखून से काटना, चुंबन तथा कर्णपुर बाएं गाल के श्रृंगार कहलातेहैं।

श्लोक(10)- दन्तौष्ठसंयोगाभ्यासनिष्पादनात्प्रवालमणिसिद्धिः।।

अर्थ- हर बार एक ही जगह को दांतों और होंठों से दबाने की क्रिया को प्रवालमणिकहते हैं।

श्लोक)11)- सर्वस्यैयं मणिमालायाश् च||

श्लोक(12)- अल्पदेशायाश्च त्वचो दशनद्वचसंदंशजा बिन्दुसिद्धिः।

अर्थ- शरीर के बहुत से अंगों पर बार-बार दांतों से काटने पर जब रेखा सी उभर आतीहै तो उसे मणिमाला कहते हैं।

श्लोक(13)- अल्पदेशायाश्च त्वचो दशनद्बयसंदंशजा बिन्दुसिद्धिः।।

अर्थ- दांतों से गर्दन आदि की खाल को खींचकर हल्का सा निशान बना देने को बिंदुकहते हैं।

श्लोक(14)- सर्वैर्बिन्दुमालायाश्च।।

अर्थ- ऐसे ही शरीर में एक ही जगह पर बहुत सारे बिंदुओं को बिंदुमाला कहते हैं

श्लोक(15)- तस्यान्मालाद्वयमपि गलकक्षवंक्षणप्रदेशेषु।।

अर्थ- जांघों और माथे पर भी बिंदुमाला हो सकती है।

श्लोक(16)- मण्डलमिव विषमकूटकयुक्तं खण्डाभ्रकं स्तनपृष्ठ एव।।

अर्थ- दांतों से स्तनों पर बादल के टुकड़े की तरह निशान बनाने को खण्डाभ्रम कहतेहैं।

श्लोक(17)- संहताः प्रदीर्घा बह्वयो दशनपदराजयस्ताम्रान्तराला वराहचर्वितकम्। स्तनपृष्ठ एव।।

अर्थ- स्तनों पर दांत गड़ाने की वजह से लाल रंग के बहुत सारे निशान बनने कोवराहचर्वितक कहा जाता है।

श्लोक(18)- तदुभयमपि च चण्डवेगयोः। इति दशनच्छेद्यानि।।

अर्थ- खण्डाभ्रक और वराहचर्वितकदांतों से काटने की क्रियाओं को वही स्त्री औरपुरुष कर सकते है जिनमेंसंभोग क्रिया के समय काम-उत्तेजना बहुत ज्यादा होजाती है। यहां पर दांतोंसे काटने के भेद समाप्त होते हैं।

श्लोक(19)- विशेषका कर्णपूरे पुष्पापीडे ताम्बूलपलाशे तमालपत्रे चेति प्रयोज्यागामिषु नखदशनच्छेद्यादीन्याभियोगिकानि।।

अर्थ- स्त्री के लिए लिए जा रहे पानके बीड़े पर, तमालपत्र पर, कानों में पहनने वाले नीलकमल पर और श्रंगार केलिए माथे पर लगाने वाले भोजपत्र पर पुरुष को अपने दांतों तथा नाखूनों सेनिशानबनाकर अपने प्यार का इजहार करना चाहिए।

श्लोक(20)- देशासात्मयाच्च योषित उपचरेत्।।

अर्थ- देशोपचार-प्रकरणइसमें अलग-अलग देशों की स्त्रियों के नाखूनों और दांतों से काटने के रिवाज बताए जा रहे हैं।

श्लोक(21)-मध्यदेश्या आर्यप्रायाः शुच्युपचाराश्चचुम्बननखदन्तपदद्वेषिण्यः।।

अर्थ- विन्द्ययाचल और हिमाचल के मध्यप्रदेश की आर्य जाति की स्त्रियां पवित्रप्यार पर विश्वास करती हैं। वहसंभोग क्रिया के समय ऩाखून गढ़ाना, दांतों से काटना या चुंबन आदि से घृणाकरती हैं।

श्लोक(22)- बाह्लीकदेश्या आवन्तिकाश्च।।

अर्थ- बाह्लीक और अवंती देश की स्त्रियों को भी संभोग क्रिया के समय चुंबन आदिकरना पसंद नहीं होता है

श्लोक(23)- चित्ररतेषु त्वासामभिनिवेशः।।

अर्थ- लेकिन बाह्लीक और अवंती देश की स्त्रियों को चित्ररत में खास रुचि रहती है।

श्लोक(24)- परिष्वङ्गचुंबननखदन्तचूषणप्रधानाः क्षतवर्जिताः प्रहणनसाध्या मालव्य आभीर्यश्च।।

अर्थ- मालवा और आभीर देश की स्त्रियोंको आलिंगन, नाखूनों को गढ़ाना, दांतों से काटना, चुंबन और मुख मैथुनज्यादा पसंद होता है। लेकिन इनके नाखूनों यादांतों से पुरुष के शरीर परकिसी तरह के जख्म नहीं होते हैं। संभोग क्रिया के समयपुरुष द्वारा प्रहारआदि करने पर भी इन्हें चरमसुख की प्राप्ति होती है।

श्लोक(25)- सिन्धुषष्ठानां च नदीनामन्तरालीया औपरिष्टकसात्म्याः।।

अर्थ- सिंधु नदी तथा सतलुज नदी के आसपास रहने वाली स्त्रियां मुख मैथुन करनाज्यादा पसंद करती हैं।

श्लोक(26)- चण्डवेगा मन्दसीत्कृता आपरान्तिका लाटयश्च।।

अर्थ- सूरत, भरौंच, अपरान्तक आदि केपास रहनेवाली स्त्रियों में काम-उत्तेजना बहुत ज्यादा होती है और वहसंभोग करते समय मुंह सेहल्की-हल्की सी-सी की आवाजें निकाला करती हैं।

श्लोक(27)- दृढप्रहणनयोगिन्यः खरवेगा एव, अपद्रव्यप्रधानाः स्त्रीराज्ये कोशलायां च।।

अर्थ- जिन देशों में स्त्रियों कीसंख्या ज्यादा होती है या कौशल देश मेंस्त्रियों को अपनी काम-उत्तेजना कोशांत करने के लिए ऐसे पुरूषों की जरूरत होती है जोसंभोग कला में पूरीतरह से निपुण होते हैं। उनको शांत करने के लिए निमित्त क्रियाअर्थात उनकीयोनि में पुरुष को अपने लिंग द्वारा तेज प्रहार करने पड़ते हैं। फिर भीजब स्त्री शांत नहीं होती तो उन्हें नकली लिंग का प्रयोग करना पड़ता है।

श्लोक(28)- प्रकृत्या मृद्या रतिप्रिया अशुचिरुचयो निराचाराश्चान्ध्रयः।।

अर्थ- आंध्र प्रदेश की स्त्रियां वैसेतो स्वभाव से नाजुक होती है लेकिन वहसंभोग क्रिया को पसंद करने वाली, मनमें अश्लील विचार रखने वाली, चरित्रहीन गुणी वाली होती है।

श्लोक(29)- सकलचतुःषष्टिप्रयोगरागिण्योऽश्लीलपरुषवाक्यप्रियाः शयने च सरभसोपक्रमा महाराष्ट्रिकाः।।

अर्थ- महाराष्ट्र देश की स्त्रियांसंभोग की 64 कलाओं को पसंद करती है, वह गंदे और अश्लील और कड़वे बोल बोलतीहैं और संभोग की शुरूआतबहुत ही जोश के साथ करती हैं।

श्लोक(30)- तथाविधा एव रहसि प्रकाशन्ते नागरिकाः।।

अर्थ- पाटलिपुत्र की स्त्रियां भी महाराष्ट्र की स्त्रियों की तरह ही होती हैंलेकिन वह 64 कलाओं का अभ्यास अकेले में ही करती हैं।

श्लोक(31)- मृद्यमानाश्चाभियोगान्मंद मंदं प्रसिञ्चन्ते द्रविडय।।

अर्थ- संभोग क्रिया की शुरूआत होने के बाद द्रविड़ देश की स्त्रियों में धीरे-धीरेरजस्राव (मासिकस्राव) होने लगता है।

श्लोक(32)- मध्यमवेगाः सर्वसहाः स्वाङ्गप्रहासिन्यः कुत्सिताश्लीलपरुषपरिहारिण्यो वानवासिकाः।।

अर्थ- कोंकण देश की स्त्रियांसंभोगक्रिया में बहुत ही शिथिल होती है। वह इस क्रिया में चुंबन, आलिंगन, नाखूनों को गढ़ाना, दांतों से काटना, आदि सभी कुछ करवा लेती है लेकिन वहअपने शरीर के अंगों को ढककर रखना पसंद करती हैऔर दूसरों के अंगों की हंसीउड़ाती हैं। यह स्त्रियां दुष्ट, गुस्सैल, गंदे लोगों को नापसंद करती हैं।

श्लोक(33)- मृदुभाषिण्योऽनुरागवत्यो मृद्वयङ्ग्यश्च गौडयः।।

अर्थ- पश्चिमी बंगाल की स्त्रियां कोमल अंगों वाली और अपने पति से प्यार करनेवाली होती हैं।

श्लोक(34)- उपगृहनादिषु च रागवर्धनं पूर्वं पूर्वं विचित्रमुत्तरमुत्तरं च।।

अर्थ- आलिंगन, चुंबन, दांतों सेकाटना, नाखूनों को गढ़ाना, प्रहणन और सीत्कार में से हर एक के बाद एककाम-उत्तेजना बढ़ाने वालाहोता है और पहले से ज्यादा अनोखा होता है।

श्लोक(35)- वार्यमाणश्च पुरुषो यत्कुर्यात्तदनु क्षतम्। अमृष्यमाणा द्विगुणं तदेव प्रतियोजयेत्।।

अर्थ- अगर पुरुष स्त्री के मना करनेके बाद भी उसे नाखूनों से नोचता या दांतोंसे काटता है तो स्त्री को पुरुषके शरीर पर उससे ज्यादा तेज नोचना और काटना चाहिए।

श्लोक(36)- बिन्दोः प्रतिक्रिया माला मालायाश्चाभ्रखण्डकम्। इति क्रोधादिवाविष्टा कलहान्प्रयोजयेत्।।

अर्थ- बिंदु के बदले माला, माला केबदले अभ्रखण्डक का निशान सहभागी के शरीर पर दांतों से इस तरह बनाना चाहिएजैसेकि गुस्से में बनाया गया हो। इसके अलावा और भी कई प्रकार केप्रेमयुद्ध भी कियेजा सकते हैं।

श्लोक)37)- वार्यमाणश् च पुरुषो यत् कुर्यात् तद् अनु क्षतम्| अमृष्यमाणा द्विगुणं तद् एव प्रतियोजयेत्||

श्लोक)38)- बिन्दोः प्रतिक्रिया माला मालायाश् चअभ्रखण्डकम्| इति क्रोधआदिवाविष्टा कलहान् प्रतियोजयेत्||

श्लोक(39)- सकचग्रहमुत्रम्य मुखं तस्य ततः पिबेत्। निलीयेत दशेच्चैव तत्र तत्र मदेरिता।।

अर्थ- स्त्री को एक हाथ से पुरुष केबाल पकड़कर और दूसरे हाथ से उसकी ठोढ़ी कोपकड़कर उसके होंठों को चूसनाचाहिए और इतने जोर से उसका आलिंगन करना चाहिए कि जैसेदोनों एक-दूसरे मेंसमा रहे हो। इसके अलावा शरीर में बहुत से स्थानों पर दांतों सेकाटना भीचाहिए।

श्लोक(40)- विधानान्तमाह-उन्नम्य कण्ठे कान्तस्य संश्रिता वक्षसाः स्थलीम्। मणिमालां प्रयुञ्जीत यच्चान्यपि लक्षितम्।

अर्थ- इसके बाद पुरुष की छाती के ऊपरबैठकर एक हाथ से उसके मुंह को ऊपर उठाकर औरदूसरे हाथ को उसके गले मेंडालकर उसकी गर्दन तथा उसके आसपास के भाग में अपनेदांतों से मणिमाला केनिशान बना दें।

श्लोक(41)- दिवापि जनसंबाधे नायकेन प्रदर्शितम्। उद्दिश्य स्वकृतं चिह्नं हसेदन्यैरपक्षिता।।

अर्थ- पुरुष अपने दोस्तों के साथ बैठेहुए जब उन्हें अपने शरीर पर अपनी पत्नी केद्वारा बनाए गए निशानों कोदिखाता है तो उस समय स्त्री को दूसरी तरफ मुंह करकेहंसना चाहिए।

श्लोक(42)- विकूणयन्तीव मुखं कुत्सयन्तीव नायकम्। स्वगात्रस्थानि चिह्नानि सासूयेव प्रदर्शयेत्।।

अर्थ- इसके बाद स्त्री को मुंह बनाते हुए और पुरुष को झिड़की देते हुए अपनेशरीर पर पुरुष द्वारा बनाए गए निशानों को दिखाना चाहिए।

श्लोक(43)- परस्परानुकुल्येन तदेवं लज्जमानयोः। संवत्सरशतेनापि प्रीपिर्न परिहियते।।

अर्थ- एक-दूसरे के प्रति शर्म का और प्रेम का भाव रखते हुए स्त्री और पुरुष काप्रेम कई सौ सालों तक भी कम नहीं हो सकता।

जानकारी-

आचार्यवात्स्यायन ने दंतक्षत (दांतों से काटना) और नखक्षत (नाखूनों से काटना) के संबंधीदेशाचार का उल्लेख करते हुए मध्य देश, वाहिक, अवन्ती, सिंधु-सतलज का अंतराल, मालव, स्त्री-राज्य कौशल, अपरान्तक, महाराष्ट्र नगर, आंध्र, द्रविड़, बन, लाट, गौड़, कोकण और आभीर देशों कावर्णन किया है।

आचार्यवात्स्यायन के इस वर्णन के द्वारा सिर्फ भारत कामानचित्र ही प्रस्तुत नहींहोता बल्कि हर देश के लोगों की प्रवृत्तियों काभी परिचय मिलता है।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे साम्प्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे दशनच्छेद्यविधयो देश्योश्चोपचाराः पञ्चमोऽध्यायः।।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 6 संवेशन प्रकरण (संभोग क्रिया के अलग-अलग आसन)

श्लोक (1)- रागकाले विशाल यन्स्येव जघनं मृगी संविशेदुच्चरेत।।

अर्थ- इसमें संभोग क्रिया करने के अलग-अलग तरीकों को बताया जाएगा।

श्लोक (2)- अवहासयन्तीव हस्तिनी नीचरते।।

अर्थ- अगर बड़ी योनि वाली हस्तिनी स्त्री छोटेलिंग वाले शश पुरुष के साथ संभोग करती है तो उसे अपनी जांघों को सिकोड़ लेना चाहिए।

श्लोक (3)- न्याय्यो यत्र योगस्तत्र समपुष्ठम्।।

अर्थ- अगर स्त्री और पुरुष के योनि औरलिंग एक ही आकार के हो तो ऐसे में संभोगक्रिया के समय स्त्री को अपनीजांघों को समेटने की जरूरत नहीं है।

श्लोक (4)- आभ्यां वडवा व्याख्याता।।

अर्थ- पहले बताई गई दोनों तरह कीजातियों की तरह ही बढ़वा जाति की स्त्रियों केबारे में समझा जाता है।जैसे पुरुष अगर अश्व जाति से संबंधित है तो बढ़वा जाति कीस्त्री को संभोगकरते समय अपनी जांघों को चौड़ा कर लेना चाहिए लेकिन अगर पुरुषवृष जातिसे संबंधित है तो स्त्री को अपनी जांघों को समान्य ही रखना चाहिए।

श्लोक (5)- तत्र जघनेन नायकं प्रतिगृह्वीयात्।

अर्थ- संभोग करते समय स्त्री को लेटने के बाद अपनी दोनों जांघों से पुरुष कोजकड़ लेना चाहिए।

श्लोक (6)- अपद्रव्याणि च सविशेषं नीचरते।।

अर्थ- अगर संभोग करने वाले पुरुष कालिंग छोटा हैऔर वह स्त्री की काम-उत्तेजना को शांत करने में असमर्थ रहताहै तो इसके लिए स्त्रीनकली लिंग का प्रयोग कर सकती है।

श्लोक (7)- उत्फुल्लकं विजृम्भितकमिन्द्राणिकं चेति त्रितयं मृग्याः प्रायेण।।

अर्थ- उत्फुल्लक, विजृम्भितक और इन्द्राणिकतरीकों से मृगी स्त्री को अपनी योनि चौड़ी करनी चाहिए।

श्लोक (8)- शिरो विनिपात्योर्ध्वं जघनमुत्फुल्लकम्।।

अर्थ- उत्फुल्लक

मृगी स्त्री अगर अपनेशिरोभाग को नीचा करके कटि वाले भाग कोऊंचा कर लेती है तो इससे उसका योनिद्वारचौड़ा हो जाता है। इसे उत्फुल्लककहते हैं। इसके लिए स्त्री को अपनी कमर के नीचेतकिया रख लेना चाहिए।

श्लोक (9)- तत्रापसारं दद्यात्।।

अर्थ- जब स्त्री का शिरोभाग नीचा होजाए और नितंब वाला भाग ऊंचा उठ जाए तो उससमय स्त्री और पुरुष को संभोगकरते समय थोड़ा पीछे हटते जाना चाहिए।

श्लोक (10)- अनीचे सक्थिनी तिर्यगवसज्य प्रतीच्छेदिति विजृम्भितकम्।।

अर्थ- विजृम्भितक

स्त्री की दोनोंजांघों को फैलाकर ऊंचा उठाने से उसकायोनिद्वार चौड़ा हो जाता है। ऐसेमें अगर पुरुष अपने लिंग को तिरछा करकेस्त्री की योनि में प्रवेश कराता है तो उसेविजृम्भितक कहा जाता है।

श्लोक (11)- पार्श्र्वयोः सममूरू विन्यस्य पार्श्र्वयोर्जानुनी निदध्यादित्यभ्यासयोगादिन्द्राणी।।

अर्थ- सबसे पहले इस संभोग क्रिया कीइस विधि कोइंद्राणी ने किया था जिसकी वजह से इसका नाम इन्द्राणी पड़ा। इसविधि का थोड़े दिनोंतक अभ्यास करने से यह पूरी तरह से आ जाती है। पुरुषको स्त्री की जांघों को अपनेदोनों हाथों से पकड़ लेना चाहिए और उसकेपैरों को अपनी दोनों कांखों से लगा लेनाचाहिए|

श्लोक (12)- तयोच्चतररतस्यापि परिग्रहः।।

अर्थ- अगर पुरुष अश्व जाति का हो औरस्त्री मृगी जाति की हो तो भी इन्द्राणि आसनके जरिये दोनों संभोग के चरमसुख पर पहुंच सकते हैं।

श्लोक (13)- संपुटेन प्रतिग्रहो नीचरते।।

अर्थ- नीचरत में स्त्री को अपनी योनि को सिकोड़ लेनी चाहिए।

श्लोक (14)- एतेन नीचतररतेऽपि हस्तिन्याः।।

अर्थ- ऐसे ही अगर हस्तिनी स्त्री शश जाति के पुरुष के साथ संभोग करती है तो उनकेलिए सम्पुटक आसन अच्छा रहता है।

श्लोक (15)- संपुटकं पीड़ितकं वेष्टतकं वाडवकमिति।।

अर्थ- नीची जाति में संपुटक, पीड़ितक, वेष्टितक तथा वाडलक चार तरह के उपवेशन होते हैं।

श्लोक (16)- ऋजुप्रसारितावुभावप्युभयोश्चणाविति संपुटः।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय जब पति और पत्नी दोनों अपनी-अपनी टांगों को सीधेपसारकर मिलाते हैं तो उसे सम्पुटक कहते हैं।

श्लोक (17)- स द्विविधः पाश्र्चसंपुट उत्तानसंपुटश्र्च। तथा कर्मयोगात्।।

अर्थ- पार्श्वसम्पुट- उत्तानसम्पुट

सम्पुटक दो तरहका होता है- पार्श्व सम्पुट तथा उत्तानसम्पुट। जब स्त्री और पुरुष करवटलेकर एक-दूसरे के सामने मुंह करके संभोगकरते हैं तो उसे पार्श्व सम्पुट कहा जाताहै। जब स्त्री बिल्कुल सीधी लेटीहो और पुरुष उसके ऊपर लेटकर संभोग करता है तो उसेउत्तान सम्पुट कहतेहैं। अगर दोनों करवट लेकर संभोग करना चाहे तो ऐसे में पुरुष कोदाईं

तरफलेटना चाहिए। संभोग करने की यह विधि हर तरह के पुरुषों और स्त्रियों केलिए समान है।

श्लोक (18)- पार्श्र्वेण तु शयानो दक्षिणेन नारीमधिशयीतेति सार्वत्रिकमेतत्।।

अर्थ- संभोग के समय पुरुष को स्त्री को अपनी बाईं तरफ सुलाना चाहिए।

श्लोक (19)- संपुटकप्रयुक्तयन्त्रेणैव दृढमूरू पीडयेदिति पीडितकम्।।

अर्थ- पीड़ितक

संभोग करते हुएस्त्री-पुरुष जब सम्पुटक आसन का प्रयोग करतेहैं तो वह एक-दूसरे कीजांघों को बहुत जोर से दबाते हैं। इसे पीड़ितक कहतेहैं।

श्लोक (20)- ऊरू व्यत्यस्येदिति वेष्टितकम्।।

अर्थ- वेष्टितक

संभोग क्रिया केसमय जब स्त्री अपनी योनि को सिकोड़ने के लिएएक जांघ को दूसरी जांघ पररखती है तो उसे वेष्टितक कहते हैं।

श्लोक (21)-वडवेव निष्ठुरमवगृह्वियादिति वाडवकमाभ्यासिकम्।।

अर्थ- वाडवक

जिस तरह सेघोड़ी अपनी योनि के द्वारा घोड़े के लिंग को बहुततेजी से कस लेती है उसीतरह से स्त्री अपनी योनि से पुरुष के लिंग कोजकड़ लेती है तथा अलिंगन, चुंबन आदि करती है तो इस आसन को वाडवक कहा जाताहै। इसके लिएखास तरह के अभ्यास की जरूरत होती है जिसमें वेश्याएं बहुतज्यादा निपुण होती हैं।

श्लोक (22)- तदान्ध्रीषु प्रायेण, इति संवेशनप्रकारा बाभ्रवीयाः

अर्थ- इस आसन को ज्यादातर आंध्रप्रदेश कीस्त्रियां प्रयोग करती हैं।

सौवर्णनाभास्तु।।

इसके अंतर्गतमहार्षि सुवर्णनाभ के विचार प्रकट कर रहे हैं।

श्लोक (23)- उभावप्युरू ऊर्ध्वाविति तद्धुग्नकम्।।

अर्थ-भुग्नक

आचार्य सुवर्णनाभ कामानना है कि भुग्नक नाम का एक और आसन है जिसमें स्त्री अपनी दोनों जांघों को ऊपरतान देती है।

श्लोक (24)- चरणावूर्ध्व नायकोऽस्या धारयेदिति जृम्भितकम्।।

अर्थ- जृम्भितक

जब पुरुष स्त्री की दोनों टांगों को अपने कंधों के ऊपर ऱख लेताहै तो उसे जम्भितक कहा जाता है।

श्लोक (25)- तत्कुञ्चतावुत्पीडितकम्।।

अर्थ- पीड़ितक

जिस समय बिल्कुल सीधीलेटी हुई स्त्री अपनी पसारी हुई टांगों कोमोड़कर अपने ऊपर लेटे हुए पति की छाती केनीचे मोड़कर अड़ा लेती है औरपुरुष छाती से उन्हें दबाकर संभोग करता है तो उसेउत्पीड़ितक कहते हैं।

श्लोक (26)- तदेकस्मिप्रसारितेऽर्धपीडितकम्।।

अर्थ- अर्धपीडितक।।

अपनी दोनों टांगों कोफैलाकर लेटी हुई स्त्री जब अपनी एक टांग कोमोड़कर पुरुष की छाती से लगाकर संभोगकरती है तथा फिर उसे धीरे से फैलाकरअपनी दूसरी टांग को मोड़कर बारी-बारी सेसंभोग क्रिया कराती है तो उसेअर्ध पीडितक कहा जाता है।

श्लोक (27) -नायकस्यांस एको द्वितीयकः प्रसारित इति पुनः पुनर्व्यत्यासेन वेणुदारितकम्।।

अर्थ- वेणुदारितक

जब लेटी हुई स्त्री अपने ऊपरलेटे हुए पुरुष के कंधे पर एक टांगरखती है तथा फिर पहली टांग को फैलाकर दूसरीटांग को पुरुष के दूसरे कंधेपर ऱखकर संभोग करती है तो उसे वेणुदारितक कहते हैं।

श्लोक (28)- एकः शिरस उपरि गच्छेद्वितीयः प्रसारित इति शूलाचितक- माभ्यासिकम्।।

अर्थ- शूलाचितक

स्त्री जिस समय अपनी एकटांग को पुरुष के सिर पर ऱखकर और दूसरीटांग को फैलाकर संभोग करती है तथा फिर दूसरीटांग को सिर पर रखकर पहलीटांग को फैलाकर संभोग क्रिया करती है तो उसे शूलाचितककहा जाता है। यह आसनभी लगातार अभ्यास करने से सफल होता है।

श्लोक (29)- संकुचितौ स्वस्तिदेशो निदध्यादिति कार्कटकम्।।

अर्थ- कार्कटक

जिस तरह से केकड़ा अपनेपैरों को पूरी तरह से सिकोड़ लेता है उसीतरह से स्त्री भी लेटकर अपनी टांगों कोसिकोड़कर पुरुष की नाभि में लगाकरजब संभोग क्रिया करती है तो उस आसन को कार्कटक कहतेहैं।

श्लोक (30)- ऊध्र्वावूरू व्यत्स्येदिति पीडितकम्।।

अर्थ- पीडितक

संभोग क्रिया के समय जबस्त्री अपनी एक जांघ को दूसरी जांघ से बहुत तेजी से दबाती है तो उस आसन को पीड़ितक कहतेहैं।

श्लोक (31)- जङ्घाव्यत्यासेन पद्मासनवत्।।

अर्थ- पद्मासन

पलंग पर लेटी हुई स्त्री जबअपने बाएं पैर को दाएं पैर के जोड़में और दाएं पैर को बाएं पैर के जोड़ में रखकरसंभोग क्रिया करती है तोउसे पद्मासन कहते हैं।

श्लोक (32)- पृष्ठे परिष्वजमानायाः पराङ्मुखेण परावृत्तकमाभ्यासिकम्।।

अर्थ- परावृत्तक

स्त्री और पुरुष जब मजबूत अलिंगन में जकड़कर आमने-सामने बैठकरसंभोगक्रिया करते है तो संभोग के समय में ही थोड़ी देर के बाद अलिंगनबद्ध अवस्थामेंही पुरुष को स्त्री के पीछे घूम जाना चाहिए और संभोग करते रहनाचाहिए। इसेपरावृत्तक आसन कहते हैं। यह आसन बहुत ही कठिन होता है और इसकेलिए लंबे अभ्यास की जरूरतहोती है।

श्लोक (33)- जले च संविष्टोपविष्यस्थितात्मकाश्चित्रान्योगानुपलक्षयेत्। तथा सुकरत्वादिति सुवर्णनाभः।।

अर्थ- जलसंयोग

आचार्य सुवर्णनाभ का कहना है कि पानी में भी खड़े होकर, बैठकर, लेटकर आदिकई तरह के आसनों के द्वारा संभोग क्रिया की जा सकती है। जमीन से ज्यादापानी में संभोग करना बहुत अच्छा रहता है।

श्लोक (34)- वार्त तु तत्। शिष्टैरपस्मृतत्वादिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्सायन पानी में संभोगक्रिया करने का विरोध करते हैं। वह कहतेहैं शिष्टों, आचार्यों द्वारापानी में संभोग करना गलत माना जाता है।

श्लोक (35)- अथ चित्ररतानि।।

अर्थ- चित्रण प्रकरण
इसके अंतर्गत संभोग क्रिया करने की बहुत ही अदभुत विधियां बताई जाती हैं।

श्लोक (36)- ऊर्ध्वस्थितयोर्यूनोः परस्परापाश्रययोः कुडयस्तम्भापाश्रितयोर्वा स्थितरतम्।।

अर्थ- जब स्त्री और पुरुष एक-दूसरे केसहारे खड़ेहोकर या फिर दीवार आदि का सहारा लेकर संभोग क्रिया करती हैंतो उसे स्थिरता कहाजाता है।

श्लोक(37)-कुडयापाश्रितस्य (कण्ठावसक्तबाहुपाशायास्तद्धस्तपञ्जरोपविष्टाया) ऊरुपाशेनजघनमभिवेष्टयन्त्या कुड्ये चरणक्रमेण वलन्त्या अवलम्बितकं रतम्।।

अर्थ- अवलम्बितक
जब पुरुष दीवार की आड़लेकर खड़ा हो तथा अपने दोनों हाथों कीउंगलियों को आपस में जोड़कर पत्नी को बैठालें तथा पत्नी अपने दोनों हाथोंसे पति की गर्दन को पकड़कर अपनी दोनों टांगों कोदीवार पर टिका दे औरझूलती अवस्था में संभोग क्रिया करे तो उसे अवलम्बितक आसनकहते हैं।

श्लोक (38)- भूमौ वा चतुष्पदवदास्थिताया वृषलीलयावस्कंदनं धेनुकम्।।

अर्थ- धेनुक
जिस समय स्त्री अपनेदोनों हाथ और पैरों को जमीन पर टिकाकर जानवरकी तरह आसन बनाकर खड़ी हो जाए और पुरुषउसके पीछे से संभोग क्रिया करे तोउसे धेनुक आसन कहते हैं।

श्लोक (39)- तत्र पृष्ठमुरः कर्माणि लभते।।

अर्थ- धेनुक आसन में छाती के बदले पीठ को दबाया जाता है।

श्लोक (40)- एतेनैव योगेनशौनमैणेयं छागलं गर्दभाक्रान्तं मार्जारलिलितकं व्याघ्रावस्कन्दनंगजोपमर्दित वराहघृष्टकं तुरगाधिरूढकमिति यत्र-यत्र विशेषोयोगोऽपूर्वस्तत्तदुपलक्षयेत्।।

अर्थ- जिस तरह से जानवर संभोगकरनेके लिए जोर लगाता है उसी तरह संभोग क्रिया के समय स्त्री और पुरुष को भीकोशिशकरनी चाहिए जैसे स्त्री के ऊपर चढ़ना, स्त्री को रौंदना, जोर सेआवाज निकालना, धक्के मारना। इस तरह से संभोग करने से संभोग के नए-नए तरीकोंके बारे में पता चलता है।

श्लोक (41)- मिश्रीकृतसद्धावाभ्यां द्वाभ्यां सह संघाटकं ग्तम्।।

अर्थ- जब आपस में अच्छा संबंध ऱखने वाली दोस्त्रियों के साथ पुरुष संभोग करता है तो इस आसन को संघाटक कहते हैं।

श्लोक (42)- बह्मीभिश्र्च सह गोयूथिकम्।।

अर्थ- गोयूथिक

जब बहुत सारी स्त्रियों केसाथ इस तरह की संभोग क्रिया की जाती है तो उसे गोयूथिक कहते हैं।

श्लोक (43)- बारिक्रीडितकं छागलमैणेयमिति तत्कर्मानुकृतियोगात्।।

अर्थ- जिस तरह से बकरा-बकरी, हिरन-हिरनी संभोग क्रिया करते हैं या हाथी और हथिनी जलक्रीड़ा करते हैं उसीतरह से गोयूथिक आसन को कई तरह से किया जाता है।

श्लोक (44)- ग्रामनारीविषये स्त्रीराज्ये च बाह्मीके बहवो युवानोऽन्तः पुरसधर्माण एकैकस्याः परिग्रहंभूताः।।

अर्थ- पहाड़ी देश ग्राम नारी नागा देशमें और बह्यीकर में अन्तःपुरवासिनीस्त्रियां अपने शयनकक्ष में बहुत सेपुरुषों को छुपाकर रखतीहैं।

श्लोक (45)- तेषामेकैकशो युगपच्च यथासात्म्यं यथायोगं य रञ्जयेयः।।

अर्थ- उन स्त्रियों के द्वारा छुपाए गए वह युवक अकेले या कई और युवकों के साथमिलकर उनकी संभोग की इच्छा को पूरा करते हैं।

श्लोक (46)- एको धारयेदेनामन्यो निषेवेत। अन्यो जघनं मुखमन्यो मध्यमन्य इति वारं वारेण व्यतिकरेण चानुतिष्ठेयुः।।

अर्थ- एक युवक उस अन्तःपुरवासिनिस्त्री को गोद में बिठाता है, दूसरा दांतों और नाखूनों को उसके शरीर मेंगड़ाता है, तीसरा उससे संभोग करता है, चौथा मुंह को चूमता है, पांचवां उसकेस्तनों में दांतों को गड़ाता है। इसी तरह से बारी-बारी करके सारेयुवक तबतक उस स्त्री के साथ संभोग करते रहते हैं जब तक कि वह स्त्री पूरी तरह सेसंभोग क्रिया के चरम सुख को नहीं पा लेती है।

श्लोक (47)- एतया गोष्ठीपरिग्रहा वेश्या राजयोषापरिग्राहश्र्च व्याख्यातः।।

अर्थ- इस तरह के मिलकर संभोग करने कासुख ज्यादातर वेश्याएं ही लिया करती हैं।कभी-कभी राजाओं की स्त्रियां भीइस तरह का संभोग सुख पाने के लिए अपने यहां किसी युवकको रख लिया करती थी।

श्लोक (48)- अधोरतं पायावपि दाक्षिणात्यानाम्। इति चित्ररतानि।।

अर्थ- सबसे ज्यादा बुरी संभोग क्रिया गुदामैथुनहोती है। गुदामैथुन ज्यादातर दक्षिण भारत में मशहूर है।

श्लोक (49)- पुरुषोपसृप्तकानि पुरुषायिते वक्ष्यामः।।

अर्थ- पुरुष को स्त्री के करीबपहुंचने के और उसे आकर्षित करने के लिए क्याकरना क्या चाहिए। यहपुरुषायित्व प्रकरण के अंतर्गत आता है।

श्लोक (50)- भवतश्चात्र श्लोकों- पशूनां मृगजातीनां पतङ्गानां च विभ्रमैः। स्तैरूपायैश्चिन्त्यितज्ञो रतियोगान्विवर्धयेत्।।

अर्थ- इसके अंतर्गत दोश्लोक प्रसिद्ध है-

पुरुष को चाहिएकि वह पशु-पक्षियों तथा जानवरों की तरह संभोगकरने की कलाओं को सीखकरउनका प्रयोग स्त्री के साथ करके उसके प्यार औरआकर्षण को बढ़ाना चाहिए।

श्लोक (51)- तस्सात्म्याद्देशसात्म्याच्च तैस्तैर्भावैः प्रयोजितैः। स्त्रीणां स्नेहश्च रागश्च बहुमानश्च जायते।।

अर्थ- जो पुरुष स्त्री की इच्छा केमुताबिक देशाचार के मुताबिक और समयोचित भावनाओंके अनुसार संभोग क्रियामें निपुण होता है। स्त्रियां उस पर ज्यादातर स्नेह रखतीहैं और वह पुरुषके द्वारा ज्यादा सम्मानित होता है।

जानकारी-

आचार्यवात्स्यायन ने कामसूत्र के इस अध्याय में संभोगक्रिया, संवेशन प्रकार और चित्ररत के बारे में बताया है। विषय की दृष्टि सेदेखाजाए तो यह अध्याय एक है लेकिन अगर क्रिया की दृष्टि से देखा जाए तोसंवेशन प्रकारऔर चित्ररत दो भागों में बांटा गया है। संवेशन प्रकार वालाजो भाग है इसमे संभोग कीउन क्रियाओं के बारे में बताया गया है जो सामान्यऔर शिष्ट समाज के लिए विहित कहीजा सकती है। लेकिन चित्ररत वाले भाग मेंजिन निकृष्टतम क्रियाओं के बारे में बतायागया है उन्हे नीच से नीच स्वभावऔर चरित्र के लोग ही प्रयोग में लाते हैं।

आचार्यवात्स्यायन का अमानुषिक, अप्राकृतिक क्रियाओं के बारेमें बताने का अर्थ क्या रहा होगा- यह जानने की इच्छाज्यादातर हरकामसूत्र पढ़ने वाले के मन में होती है।

कोई भी शास्त्रएकदेशीय नहीं होता है बल्कि वह तो समष्टि काबोधक, प्रतिपादक और समर्थक होता है। उसके अंदर अपने विषय का अखंड, परिपूर्ण चित्रण और पूरी जानकारी रहती है। वह अपने बारे में दिए जा रहेविषयके हर पहलू की यथार्थ व्याख्या करता है। उसका यह कोई मकसद नहीं है किवह अच्छा है औरयह बुरा।

अच्छाई और बुराईका विश्लेषण, निराकरण करना तो उन लोगों कीइच्छा और बुद्धि पर निर्भर करता है जो लोग शास्त्र को पढ़कर या सुनकर उसमेंबताए गए सिद्धांतों पर चलना चाहते हैं। शास्त्र लिखने वाला सावधान जरूरकर देता है कियह सिद्धान्त या रास्ता मुश्किल है, शिष्टजन सम्मत है यासिर्फ परिचय चारूता बढ़ानेके लिए सिर्फ पढ़ने के लिए उपयोगी है।

इस अध्याय मेंआचार्य वात्स्यायन ने यह साफ कर दिया है किचित्ररत संभोग करना

गलत है। जबकामसूत्र लिखने वाला महान विद्वान स्वयं इसकार्य को गलत समझता है तो भी उसनेइसको अपने शास्त्र में जगह इसलिए दी हैक्योंकि संसार में हर प्रवृत्ति के इंसान पाएजाते हैं जिनमें से कुछ लोगजानवरों की नस्ल के भी होते हैं जिन्हें इस तरह केचित्ररत संभोग में हीपूर्ण आनंद मिलता है।

आचार्यवात्स्यायन ने इन्हीं भावों को नजर में रखते हुएसंभोग क्रिया, मान्मथ क्रिया या आसन न कहकर चित्ररत संभोग को भोग का नामदिया है।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे संवेशनप्रकाराञ्चित्ररतानि च षष्ठोध्यायः।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 7 प्रहणनीसीत्कार प्रकरण

श्लोक (1)- कलहरूपं सुरतामाचक्षते। विवादात्मकत्वाद्वा मशीलत्वाच्च कामस्थ।।

अर्थ- इसके अन्तर्गतसंभोग क्रिया करते समय प्यार को बढ़ाने वाले सुख-कलह को बताया जा रहाहै।इसलिए क्योंकि काम स्वभाव से ही विवादास्पद तथा जटिल है।

श्लोक (2)- तस्मात्प्रहणनस्थानमङम्। स्कन्धौ शिरः स्तानातरं पृष्ठं जघनं पार्श्व इति स्थानानि।।

अर्थ- इसी वजह से संभोग क्रिया के समयएक-दूसरे पर प्रहार करना भी संभोग का ही एकअंग माना जाता है। इस प्रहारके लिए दोनों कंधे, दोनों स्तनों के बीच का भाग, पीठ, जांघे, सिर और दोनोंबगलें उपयुक्त रहती हैं।

श्लोक (3)- तच्चतुर्विधम-अपहस्तकं प्रसृतकं मुष्टिः समतलकमिति।।

अर्थ- 4 तरह के आघात होते हैं-

अपहस्तक- उल्टी हथेली से थपकी मारना।

प्रसृतक- हाथ फैलाकर मारना।
मुष्टि- मुक्का मारना।
समतल- हथेली से मारना।

श्लोक (4)- तदुद्धवं च सीत्कृतम्। तस्यार्तिरूपत्वात्। तदनेकविधम्।।

अर्थ- सीत्कार

संभोग क्रिया के समयस्त्री पर प्रहार करने से उसे दर्द तोजरूर होता है लेकिन उस दर्द की वजह से जो आवाजया सिसकी निकलती है उसी कोसीत्कार कहा जाता है। सीत्कार कई प्रकार के होते हैं।

श्लोक (5)- विरुतानि चाष्टौ।।

अर्थ- सीत्कार से 8 तरह की अलग-अलग आवाजें निकलती हैं।

श्लोक (6)- हिंकारस्तनितकूजितरुदितसूत्कृतदूत्कृत्फूत्कृतानि।।

अर्थ- 8 तरह की आवाजें-
1. हिंकार (हिं हिं की आवाजनिकालना)
2. स्तनित (हं)
3. कूजित (धीरे-धीरे कुकुवाना)
4. रुदित (रोने की आवाज निकालना)
5. सूत्कृत (सी-सी की आवाजनिकालना)

श्लोक (7)- अम्बार्थाः शब्दा वारणार्थ मोक्षणार्थाश्चलमर्थास्ते ते चार्थयोगात्।

अर्थ- उई मां अब बस करो, बहुत हो चुका, मर गई मां, छोड़ दो प्लीज, धीरे-धीरे करो ना आदि दर्द के शब्द होते हैं।

श्लोक (8)- पारावतपरभूतहारीतशु कमधुकरदात्यूहहंसकारण्डवलावकविरुतानि सीत्कृतभूयिष्ठानि विकल्पशः प्रयीञ्त्रीत।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय पुरुषद्वारा प्रहार करने पर सीत्कार करती हुई स्त्रीको कोयल, हंस, कबूतर, कारण्डव (बत्तख), गधे आदि की आवाजें बदल-बदलकर निकालनी चाहिए।

श्लोक (9)- उत्सङ्गोपविष्टायाः पृष्ठे मुष्टिना प्रहारः।।

अर्थ- अगर स्त्री पुरुष की गोद में बैठी होती है तो पुरुष को उसकी पीठ पर मुक्कोंसे प्रहार करना चाहिए।

श्लोक (10)- तत्र सासुयाया इव स्तनितरुदितकूजितानि प्रतिघातश्चस्यात्।।10।।

अर्थ- अपनी पीठ पर मुक्का पड़ते हीस्त्री को असहनशील होकर 'ह' की आवाज निकालकर, 'उसांसें' भरकर तथा लंबी-लंबीसांसें भरकर पुरुष पर उल्टा प्रहार करना चाहिए।

श्लोक (11)- युक्तयन्त्रायाः स्तनान्तरेऽपहस्तकेन प्रहरेत्।।

अर्थ- बिल्कुल सीधी लेटकर संभोग कराती हुई स्त्री के दोनों स्तनों के बीच वालेस्थान पर उल्टी हथेली से प्रहार करना चाहिए।

श्लोक (12)- मन्दोपक्रमं वर्धमानरागमा परिसमाप्तेः।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय धीरे-धीरेसे मुक्कों से प्रहार करना शुरू करदेना चाहिए और फिर जैसे-जैसे उत्तेजनाबढ़ती जाए वैसे ही प्रहारों में भी तेजी लानीचाहिए।

श्लोक (13)- तत्र हिंकारादीनामनियमेनाभ्यासेन विक्लपेन च तत्कालमेव प्रयोगः।।

अर्थ- हिं-हीं, हूं, फुसकारना, हांफनाआदि दर्द वाली आवाजें निकालने का न तो कोई नियम होता है और न ही कोईक्रम। संभोग करते समय मुक्का लगने की शुरूआत होने से लेकर आखिरी तक दर्दवाली आवाजें निकालते रहनाजरूरी है।

श्लोक (14)- शिरसि किंजिदाकुञ्चिताङलिना करेण विवदन्तयाः फूत्कृत्य प्रहणनं तत्प्रसृतकम्।।

अर्थ- अगर उल्टी हथेली के प्रहार सेस्त्री कोसुख नहीं मिलता हो तथा वह कोई और प्रहार चाहती हो तो पुरुष कोचाहिए कि वह उत्तेजनाके अनुसार धीरे से या जोर से उंगलियों को सांप के फनकी तरह बनाकर स्त्री के सिरपर मारने चाहिए। इस तरह के प्रहार को प्रसृतक (खोटका) कहा जाता है।

श्लोक (15)- तत्रान्तर्मुखेन कुजिंत फूत्कृतं च।।

अर्थ- संभोग क्रिया में जिस समय पुरुषस्त्री कोमुक्का मारे उस समय उसे हाय राम या हाय-हाय की आवाजें ननिकालकर कूं कूं सूं सूंफूं फूं आदि आवाजें निकालनी चाहिए।

श्लोक (16)- रतान्ते च श्वसितरुदिते।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समाप्त हो जाने के बाद स्त्री जब हांफती है तो उसे रूदन (रोना) कहा जाता है।

श्लोक (17)- वेणोरिव स्फुटतः शब्दानकरणं दुत्कृतम्।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय जब स्त्री के मुख से 'चट-चट' की आवाजें निकालती है। इसे दूत्कृत कहते हैं।

श्लोक (18)- अप्सु बदरस्येव निपततः फूत्कृतम्।।

अर्थ- जिस तरह किसी फल को पानी मेंगिराने के बाद 'डुब्ब' की आवाज होती है उसी तरह की आवाज जब संभोग करते समयस्त्री के मुंह से निकलती है तोउसे फूत्कृत कहते हैं।

श्लोक (19)- सर्वत्र चुम्बनादिष्वक्रान्तायाः ससीत्कृतं तेनैव प्रत्युत्तरम्।।

अर्थ- पुरुष द्वारा स्त्री के शरीर परनाखून मारने पर, दांत गढ़ाने पर या चुम्बन आदि करने पर जिस तरह की आवाजस्त्री निकालती है वैसीही आवाज पुरुष को भी निकालनी चाहिए।

श्लोक (20)- रागवशात्प्रहणनाभ्यासे वारणमोक्षणालमर्थानां शब्दानामम्बार्थानां चसतान्तश्वसितरुदितस्तनितमिश्रीकृतप्रयोगा विरुतानां च। रागावसानलकालेजघनपार्श्वयोस्ताडनमित्यतित्वरया चापरिसमाप्तेः।।

अर्थ- काम-उत्तेजना तेज होने के बादजब पुरुष बार-बार जोर-जोर से स्त्री परप्रहार करने लगे तो स्त्री को 'अरीरी', 'अरी मरी', ऊई मां, अब बस भी करो, रहने दो ना, छोड़ दो ना आदिआवाजों को भी हांफने और सिसियाने केसाथ निकालते रहना चाहिए।

श्लोक (21)- तत्र लावकहंसविकूजितं त्वरयैव। इति स्तननप्रहणनयोगाः।।

अर्थ- ऐसे समय में स्त्री को हंस और लवा आदि पक्षी की आवाज की नकल करके आवाजनिकालते रहना चाहिए।

श्लोक (22)- भवतश्चात्र श्लोकौ- पारुष्यं रभस्तवं च पौरुषं तेज उच्यते। अशक्तिरार्तिर्व्यावृत्तिरबलत्वं च योषितः।।

अर्थ- इस विषय में 2 श्लोक हैं-

पुरुष के स्वाभाविक गुण धैर्य, सख्ती, बहादुरी और मजबूती होते हैं और कमजोरी, कोमलता, असमर्थता पीड़ितहोना स्त्रियों के स्वाभाविक गुणहोते हैं। इसी वजह से जब पुरुष स्त्री परप्रहार करता है तो वह सी-सी की आवाजनिकालती रहती है।

श्लोक (23)- रागात्प्रयोगसात्म्याच्च व्यत्ययोऽपि कचिद्धवेत्। न चिरं तस्य चैवान्ते प्रकृतेरेव योजनम्।।

अर्थ- लेकिन यह गुण स्त्री और पुरुषमें हमेशानहीं होते हैं। देश, समय और परिस्थितियों की वजह से दुबारा चरमसीमा तकउत्तेजना के पहुंच जाने पर स्त्री पुरुष की तरह सख्त और ढीठ बनकरउस पर प्रहार करनेलगती है तथा पुरुष स्त्री की ही तरह सिसियाता रहता है।

श्लोक (24)- कीलामुरसिकर्तरीं शिरसि विद्धां कपोलयोः संदंशिकां स्तनयोः पार्श्र्वयोश्चेति पूर्वैःसह प्रहणनमष्टविधमिति दाक्षिणात्यानाम्। तद्युवतीनामुरसि कीलानि चतत्कृतानि दृश्यन्ते। देशसात्म्यमेतत्।

अर्थ- छाती में कीला, गालों मेंविद्धा, सिर में कर्तरी और स्तन तथा दोनों बगलों में संदशिका और पहले केचार मिलाकर 8 तरह के प्रहणन दक्षिण देश के रहने वालों में प्रचलित हैं।

श्लोक (25)- कष्टमनार्यवृत्तमनादृतमिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- वात्स्यायन के अनुसार इस तरह केप्रहारों को अनार्यवृत्त कहते हैं। उनकेकहने के अनुसार ऐसा व्यवहारअच्छे लोगों के लिए नहीं है।

श्लोक (26)- तथान्यदपि देशसात्म्यात्प्रयुक्तमन्यत्र न प्रयुञ्जीत्।।26।।

अर्थ- एक देश के रीति-रिवाज सिर्फ उसीदेश के लिए लागू होते हैं दूसरे देश के लिएनहीं। इसी वजह से एक जगह कीप्रथा को दूसरी जगह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

श्लोक (27)- आत्ययिकं तु तत्रापि परिहरेत्।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय ऐसे प्रयोगजिनमें स्त्री के अंग खराब होने के याउसकी मृत्यु हो जाने का डर रहता हैउनका प्रयोग वहां पर भी नहीं करना चाहिए जहांउनका रिवाज होता हो।

श्लोक (28)- रतियोगे हि कीलया गणिकां चित्रसेनां चोलराजो जघान।।

अर्थ- इस तरह के प्रहारों के दुष्परिणाम-
अर्थ- चोलदेश के राजा ने चित्रसेना नाम की वेश्या की छाती पर संभोग करते समय ऐसाप्रहार किया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

श्लोक (29)- कर्तर्या कुन्तलः शातकर्णिः शातवाहनो महादेवीं मलयवतीम्।।

अर्थ- कुन्तल देश के राजा ने काम-उत्तेजना में आकर राजा शातकर्णि सातवाहन नेमहादेवी मलयवती पर प्रहार करके उसे मार डाला।

श्लोक (30)- नरदेवः कुपाणिर्विद्धया दुष्प्रयुक्तया नटीं काणां चकार।।

अर्थ- पांडव देश केराजा केसेनाध्यक्ष नरदेव ने नाच करने वाली नर्तकी के, अपना हाथ गालों पर मारने केचक्कर में आंख में मार दिया और वहकानी हो गई।

श्लोक (31)- भवन्ति चात्र श्लोकाः- नास्त्यत्र गणना काचिन्न च शास्त्रपरिग्रहः। प्रवृत्ते रतिसंयोगे राग एवात्र कारणम्।

अर्थ- इस विषय में कुछ पुराने श्लोक प्रचलित हैं-
जिस समय मनुष्य उत्तेजना में भरकर संभोग करने में मग्न हो जाताहै तो उससमय न तो वह शास्त्र के वचन के बारे में सोचता है और न ही बाद केपरिणामों के बारे में। इस तरह के बुरे परिणामों की एकमात्र कारण सिर्फउत्तेजना हीहै।

श्लोक (32)- स्वप्नेष्वपि न दृश्यन्ते ते भावास्ते च विभ्रमाः। सुरतव्यवहारेषु ये स्युस्तत्क्षणकल्पितः।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय मनुष्य कादिमाग भटक जाता है। उस समय उसके दिल में जोभाव पैदा होते हैं वह उसकोसपने में भी नहीं दिखाई देते।

श्लोक (33)- यथा हिपञ्चमीं धारामास्थाय तुरगः पथि। स्थाणुं श्वभ्रं दरीं वापि वेगान्धो नसमीक्षते।। एवं सुरतसंमर्दे रागान्धौं कामिनावपि। चण्डवेगौ प्रवर्ततेसमीक्षेते न चात्ययम्।।

अर्थ- जिस तरह से कोई घोड़ा तेज गतिसे भागता हैतो उसे अपने बीच में आने वाले गड्ढे, पानी, पेड़ आदि कुछदिखाई नहीं देते हैं।ऐसे ही उत्तेजना में आकर स्त्री और पुरुष बहुत तेजगति से संभोग करते हुएनाखूनों को गढ़ाने के, दांतों से काटने के याप्रहार करने के कारण होने वाले बुरेपरिणामों के बारे में नहीं सोचते हैं।

श्लोक (34)- तस्मान्मृत्वं चण्डत्वं युवत्या बलमेव च। आत्मन्श्च बलं ज्ञात्वा तथा युञ्जीत शास्त्रवित्।।

अर्थ- इसी तरह स्त्री के शरीर कीकोमलता, संभोग की तेजी तथा उसकी सहनशक्ति को समझते हुएऔर जीवन-शक्ति काअनुमान करके ही पुरुष को संभोग क्रिया में लगना चाहिए।

श्लोक (35)- न सर्वदा न सर्वासु प्रयोगाः सांप्रयोगिकाः। स्थाने देश च काले च योग एषां विधीयते।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय हर क्रियाको हरसमय हर किसी स्त्री के साथ नहीं किया जा सकता। जो स्त्री को पसंद होऔर जो सभी केहिसाब से सही हो उसी के अनुसार संभोग क्रिया करनी चाहिए।

जानकारी-

संभोग क्रिया के समयकाम-उत्तेजना में भरकर पुरुष स्त्री के सिर, कंधे, स्तनों के बीच में, पीठ पर और जांघों में प्रहार करता है। अगर स्त्रीके इन अंगों में प्रहार करता हैतो स्त्री सीत्कार करती है और आनंद मेंभर जाती है। पुरुषों को चाहिए कि स्त्रीपर इस तरह के प्रहार चुटकी काटकर, चपत लगाकर या हथेलियों से थपथपाकर करने चाहिए।

श्लोक- इति श्रीवात्सायायनीये कामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरने पहणनप्रयोगास्तद्युक्ताश्चसीत्कृतक्रमाः सप्तमोऽध्यायः।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 8 पुरूषायित प्रकरण (विपरीत रति)

श्लोक-(1)- नायकस्य संतताभ्यासात्परिश्रममुपलभ्य रागस्य चानुपशमम्, अनुमता तेन तमधोऽवपात्य पुरूषायितेन साहाय्यं दद्यात्।।

अर्थ- संभोग क्रिया में जिस समयस्त्री, पुरुष की तरह का व्यवहार करती है तो उसे विपरीतरति कहते हैं।स्त्री के साथ काफी देर से संभोग करते हुए जब पुरुष थकजाता है, लेकिनस्त्री की तब तक भी काम-इच्छा शांत नहीं हुई होती तो ऐसे मेंस्त्री, पुरुष की मर्जी से उसके ऊपर लेटकर संभोग क्रिया करती है।

श्लोक-(2)- स्वाभिप्रयाद्वा विकल्पयोजनार्थिनी।।

अर्थ- स्त्री स्वयं अपनी इच्छा से भी पुरुष के साथ यह क्रिया कर सकती है।

श्लोक-(3) नायककुतूहलाद्वा।।

अर्थ- अगर पुरुष थक भी नहीं हो रहाहोता तो भी सिर्फ आनंद के लिए वह नीचे लेट जाताहै और स्त्री उसके ऊपरलेटकर संभोग की क्रिया करती है।

श्लोक-(4)- तत्र युक्तयन्त्रेणैवेतरेणोत्थाप्यमाना तमधः पातयेत्। एवं च रतमविच्छिन्नरसं तथा प्रवृत्तमेव स्यात्। इयेकोऽयं मार्गः।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय स्त्री अगरविपरीत रति की इच्छा रखकर पुरुष के ऊपरलेटना चाहती है तो उसे इस तरह सेपुरुष के ऊपर लेटना चाहिए कि पुरुष का ध्यान बिल्कुलभी संभोग क्रिया से नहटे । इस तरह से संभोग करने से न तो उन दोनों की उत्तेजना हीकम होती हैऔर आखिरी तक इस क्रिया का आनंद बना रहता है।

श्लोक-(5)- पुनरारम्भेणादित एवोपक्रमेत्। इति द्वितीयः।।

अर्थ- अगर एक बार संभोग क्रिया पूरीतरह हो जाने के बाद दुबारा करने की इच्छाहोती है तो उसकी शुरूआत में हीस्त्री को पुरुष के ऊपर लेटकर विपरीत सेक्सकरना चाहिए।

श्लोक-(6)- साप्रकीर्यमाणकेशकुसुमा श्वासविच्छिन्नहासिनी वक्त्रसंसर्गार्थस्तनाभ्यामुरः पीडयनंती पुनः पुनः शिरो नामयन्ती याश्चेष्टाः पूर्वमसौदर्शितवांस्ता एव प्रतिकुर्वीत। पातिता प्रतिपातयामीति हसन्ती तर्जयन्तीप्रतिघ्नती च ब्रूयात्। पुनश्चव्रीडां दर्शयेत्। श्रमं विरामाभीप्सां च।पुरुषोपसृप्तै रेवोपसर्पेत्।।

अर्थ- इसके अंतर्गत स्त्री जब पुरुषके ऊपर लेटकर संभोग क्रिया करती है तोउसके बालों में गुंथे हुए फूल बिखरजाते हैं। वह हल्का सा भी हंसती है तो उसकीसांस फूलने लगती है। जब वहअपने मुंह को पुरुष के मुंह के पास उसे चूमने के लिए ले जातीहै तो अपनेस्तनों से वह पुरुष की छाती को भी दबाती है। संभोग क्रिया के समय जबवहतेजी से हिलती है तो उसका सिर भी तेजी के साथ हिलने लगता है। इस समय स्त्रीबिल्कुल ही पुरुष की तरह हो जाती है। वह उसी की तरह नाखूनों को गढ़ाना, दांतों से काटना, चुंबन आदि करती है। इसके बाद वह जोर से हंसते हुए कहती हैकि पहले तुमने मुझेगिराया था अब मैं तुम्हे नीचे गिराकर बदला ले रहीहूं। लेकिन जब स्त्री कीकाम-उत्तेजना बिल्कुल ही समाप्त हो जाती है तो वहशर्माकर औरसिकुड़कर आंखें बंद कर लेती है और थककर पलंग पर लेट जाती है।

श्लोक-(7) तानि च वक्ष्यामः।।

अर्थ- इसके अंतर्गत पुरुष संभोग क्रिया के समय किस तरह स्ट्रोक लगाता है यहबताया गया है।

श्लोक-(8)- पुरुषः शयनस्थाया योषितस्तद्वचनव्याक्षिप्तचित्ताया इव नीवीं विश्लेषयेत्। तत्र विवदमानां कपोलचुंबनेन पर्याकुलयेत्।।

अर्थ- पलंग पर लेटी हुई स्त्री जबपुरुष की बातों मेंपूरी तरह से खोई हुई होती है तब पुरुष को धीरे से उसकीसाड़ी की गांठ को ढीली कर देनी चाहिए।अगर इसके बीच में स्त्री मना करतीहै तो पुरुष को उसका मुंह चूमकर उसे बेचैन करदेना चाहिए।

श्लोक-(9)- स्थिरलिङ्गश्च तत्र तत्रैनां परिस्पृशेत्।।

अर्थ- जब पुरुष का लिंग पूरी तरह से उत्तेजित अवस्था में आ जाए तब उसे स्त्री केशरीर के कोमल अंगों को धीरे-धीरे से सहलाना चाहिए।

श्लोक-(10)- प्रथमसंगता चेत्संहतोर्वोरन्तरे घट्टनम्।।

अर्थ- सुहागरात के समय अगर स्त्रीशर्म के मारे अपने पेटीकोट में हाथ नहीं लगानेदेती और अपनी दोनों जांघोंको समेट लेती है। ऐसी स्थिति में पुरुष को उसकी जांघोंपर हाथ फेरते हुएउन्हें खोल देना चाहिए।

श्लोक-(11)- कन्यायाश्च।।

अर्थ- अगर किसी कुंवारी लड़की से संभोग करते हैं तो दसवें सूत्र में बताई गईपहली समागम विधि से संभोग करना चाहिए।

श्लोक-(12)- तथा स्तनयोः संहतयोर्हस्तयोः कक्षयोरंसयोर्ग्रीवायमिति च।।

अर्थ- उसी तरह स्त्री की कांख, स्तनों, कमर, गर्दन और जांघों में हाथ फेरना चाहिए।

श्लोक-(13)- स्वैरिण्यां यथासात्म्यं यथायोगं च। अलके चुम्बनार्थमेनां निर्दयमवलम्बेत् हनुदेशे चाङ्ठ्लिसंपुंटेन।।

अर्थ- जो स्त्रियां मनचली किस्म कीहोती हैं उनके साथ तो जैसा सही लगे वैसा हीकरना चाहिए। मुंह चूमने के लिएउनके बालों में हाथ डालकर उनका मुंह अपनी तरफ घुमाकरचूमना चाहिए यागालों में धीरे से चुटकी काटनी चाहिए।

श्लोक-(14)- तत्रेतरस्या वीडा निमीलनं च। प्रथमसमागमे कन्यायाश्च।।

अर्थ- जो स्त्री पहली बार किसी पुरुष से मिलती है तोशर्म के मारे अपनी आंखों को बंद कर लेती है।

श्लोक-(15)- रतिसंयोगे चैना कथमनुरज्यत इति प्रवृत्त्या परीक्षेत।।

अर्थ- नई-नवेली दुल्हन को सुहागरात केदिन संभोग क्रिया करने के लिए किस तरह राजीकिया जाए यह उसकी प्रवृत्तिको देखकर और समझकर ही करना चाहिए।

श्लोक-(16)- युक्तयन्त्रेणोपसृप्यमाणा यतो दृष्टिमावर्तयेत्तत एवैनां पीडयेत्। एतद्रहस्यं युवतीनामिति सुवर्णनाभः।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय स्त्री, पुरुष द्वारा अपने जिस अंग को दबाने परउत्तेजना में भरकर अपनी आंखों कीपुतलियों को घुमाने लगती है तो उसके उसी अंग को बार-बारदबाना चाहिए। इससेस्त्री तुरंत ही काम-उत्तेजित हो जाती है।

श्लोक-(17)- गात्राणां स्त्रंसन नेत्रनिमीलनं वीडानाशः समधिका च रतियोजनेति स्त्रीणां भावलक्षणम्।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय अंगों काढीला पड़ जाना, आंखों को बंद कर लेना, शर्म का दूर हो जाना तथा पुरुष केलिंग को अपनी योनि सेचिपकाए रखना आदि स्त्रियों के भाव के लक्षण है। उससमय स्त्री ज्यादा भावुक हो जातीहै।

श्लोक-(18)- हस्तौ विद्युनोति स्विद्यति दशत्युत्थातुं न ददति पादेनाहन्ति रतावमाने च पुरूषातिवर्तिनी।।

अर्थ- जब स्त्री संभोग क्रिया केआखिरी चरण में हाथों और पैरों को पटकती है, पूरी तरह से पसीने में भीग जातीहै, पुरुष को दांतों से काटती है, नाखूनों से नोचती है। इस स्थिति मेंपुरुष तो स्खलित हो जाता हैलेकिन स्त्री पूरी तरह से तृप्त नहीं हुईहोती। ऐसे में वह पुरुष को जोर

से दबा लेती है, उसे बिल्कुल भी उठने नहींदेती है तथा सारी शर्मो-हय्या को छोड़कर पूरी जान सेस्ट्रोक लगाती है।

श्लोक-(19)- तस्याः प्राग्यन्त्रयोगात्करेण संबाधं गज इव क्षोभयेत्। आ मृदुभावात्। ततो यन्त्रयोजनम्।।

अर्थ- संभोग क्रिया के समय स्त्री कोजल्दी स्खलित करने के लिए पहले उसकी योनि केअंदर अपनी उंगलियों कोजोर-जोर से फिराना चाहिए। जब ऐसा महसूस हो कि उसकी योनिगीली हो गई है तोउसके बाद संभोग क्रिया शुरू करनी चाहिए।

श्लोक-(20)- उपसृप्तकं मन्थनं हुलोऽवमर्दनं पीडितकं निर्घाता वराहघातो वृषाघातश्चटकविलसितं संपुट इति पुरुषोपसृप्तानि।।

अर्थ- संभोग क्रिया में 10 तरह केस्ट्रोक, उपसृप्तक, मंथन, हुल, अवमर्दन, निर्घात वृषाघात, वराहघात, चटकविलसित तथा सम्पुट ये पुरुषोपसृप्त पीड़ितक माने जाते हैं।

श्लोक-(21)- न्याय्यमृजस्मिश्रणमुपसृप्तकम्।।

अर्थ- वात्स्यायन ने संभोग क्रिया मेंसिर्फ उपसृप्तक (साधारण स्ट्रोकों) की हीसही बताया है बाकी को बेकारक्योंकि इसके अंतर्गत सिर्फ साधारण प्रकार से हीइन्द्रियों को मिलायाजाता है।

श्लोक-(22)- हस्तने लिंग सर्वतो भ्रामयेदिति मन्थनम्।।

अर्थ- मन्थन-

जिस समय पुरुषद्वारा अपने लिंग को पकड़कर स्त्री की योनिके चारों ओर घुमाया जाताहै तो उस क्रिया को मन्थन कहते हैं।

श्लोक-(23)- नीचीकृत्य जघनमुपरिष्याद्धट्टयेदिति हुलः।।

अर्थ- हुल-
जिस समय पुरुष, स्त्री की जांघों को नीचा करके उन पर प्रहार करता है तो उसे हुल कहते हैं।

श्लोक-(24)- तदेव बिपरीतं सरभसमवमर्दनम्।।

अर्थ- स्त्री के नितंबों के नीचे तकिया रखकर पुरुष द्वारा जोर से स्ट्रोक मारनाअवमर्दन कहलाता है।

श्लोक-(25)- लिंङ्गेन समाहत्य पीडयंश्चिरमवतिष्ठेतति पीडितकम्।।

अर्थ- पीड़ितक-
पुरुष जब अपने लिंग को स्त्री की योनि में प्रवेश कराके काफी देरतक जोर से दबाए रखता है तो उसे पीड़ितक कहा जाता है।

श्लोक-(26)- सुदूरमुत्यकृण्य वेगेन स्वजघनमवपातयेदिति निर्घातः।।

अर्थ- निर्घाता-

पीछे हटकर जोरों से अपनी जांघों को गिराने को निर्घात कहा जाता है।

श्लोक-(27)- एकत एव भूयिष्ठमवलिखेदिति वराहघातः

अर्थ- पुरुष के द्वारा अपने लिंग को स्त्री की योनि में डालकर एक ही तरफ स्ट्रोकलगाने को वराहघात कहते हैं।

श्लोक-(28)- स एवोभयतः पर्यायेण वृपाघातः।।

अर्थ- वृषाघात-
स्त्री की योनि के अंदर पुरुष के अपने लिंग के द्वारा इधर-उधरस्ट्रोक मारना वृषाघात कहलाता है।

श्लोक-(29)- सकृन्मिश्रितमनिष्क्रमय्य द्विस्त्रिश्चतुरिति घट्टयेदिति चटकविल-सितम्।।

अर्थ- चटकविलसित-
पुरुष द्वारा स्त्री की योनि में प्रवेश कराए गए लिंग से अंदर हीअंदर 2-3 धक्के लगाने चटकविलसित कहलाता है। यह सब स्त्री को चरम सुख की प्राप्तिहोने पर समाप्त हो जाता है।

श्लोक-(30) रागावसानिकं व्याख्यातं करणं संपुटमिति।।

अर्थ- सम्पुट-
सम्पुट संभोग क्रिया करते समय स्खलन होने पर होता है।

श्लोक-(31)- तेषां स्त्रीसात्मयाद्विकल्पेन प्रयोगः।।

अर्थ- स्त्री के आनंद और सुख को ध्यान में रखकर ही इनमें से किसी एक का प्रयोगकिया जा सकता है।

श्लोक-(32)- पुरूषायिते तु संदंशो भ्रमरकः प्रेङ्खोलितमित्यधिकानि।।

अर्थ- विपरीत संभोग के भेद- सन्दंश, भ्रमरक और प्रेङ्खोलित विपरीत सेक्स के 3 प्रकार है।

श्लोक-(33)- वाडवेन लिंग्ङमवगृह्म निष्कर्षन्त्याः पीडयन्त्या वा चिरावस्थानं संदंशः।।

अर्थ- सन्दंश-
स्त्री जब पुरुष के लिंग को अपनी योनि में बहुत देर तक फंसाकर रखतीहै तो उसे सन्दंस कहते हैं।

श्लोक-(34)- युक्तायन्त्रा चक्रद्भमेदिति भ्रमरक आभ्यासिकः।।

अर्थ- भ्रमरक-
भ्रमर (भंवरा) की तरह घूमने को भ्रमरक कहते हैं।

श्लोक-(35)- तत्रेतरः स्वजघनमुत्क्षिपेत्।।

अर्थ- भ्रमरक विपरीत सेक्स के समय पुरुष को अपनीजांघों को ऊपर उठा लेना चाहिए।

श्लोक-(36)- जघनमेव दोनायमानं सर्वतो भ्रामयेदिति प्रेङ्खोलितकम्।।

अर्थ- प्रेङखोलितकम्-
संभोग क्रिया करते समय थक जाने के बाद स्त्री को अपनी इन्द्रियोंकोसंलग्न करते हुए अपने माथे को पुरुष के माथे पर रखकर आराम करना चाहिए।

श्लोक-(37)- विश्रान्तायां च पुरुषस्य पुनरावर्तनम्। इति पुरूषायितानि।।

अर्थ- अगर स्त्री आराम करने के बाद भीतृप्त नहींहोती तो उसे फिर से नीचे की ओर आ जाना चाहिए तथा पुरुष कोउसके ऊपर लेटकर संभोगक्रिया करनी चाहिए।

श्लोक-(38)- भवन्ति चात्र श्लोकाः-

अर्थ- इस विषय के पुराने प्रमाणिक श्लोक यह है-

श्लोक-(39)-प्रच्छादितस्वभावापि गूढाकारापि कामिनी। विवृणोत्येव भावं स्वं रागादुपरिवर्तिनी।।

अर्थ-जो स्त्रियां शर्म आदि की वजह से अपनेभावों को प्रकट नहीं करपाती है वह भी विपरीत सेक्स क्रिया के समयकाम-उत्तेजना में आकर अपने असली रूप में आजाती है।

श्लोक-(40)- यथाशीला भवेन्नारी यथा च रतिलालसा। तस्या एव विचेष्टाभिस्तत्सर्वमुपलक्षेयेत्।।

अर्थ- जिस तरह का शांत स्वभाव स्त्रीका होता है और जिस तरह की उनकीकाम-उत्तेजना होती है वह विपरीत सेक्स केद्वारा प्रकट हो जाता है।

श्लोक-(41)- न त्वेवर्तो न प्रसूतां न मृगीं न च गर्भिणीम्। न चातिव्यायतां नारीं योजयेत्पुरुषायिते।।

अर्थ- गर्भवती स्त्री, छोटी योनी वाली स्त्री, जिस स्त्री का मासिकधर्म आया हो और मोटी स्त्री को विपरीत सेक्स नहीं करना चाहिए।

जानकारी-

आचार्यवात्स्यायन के कामसूत्र का ज्ञाता होने की वजह से जिसप्रसंग के बारे में बतायाहै, उसके शिव (अच्छे) और अशिव (बुरे) दोनों हीपक्षों को पेश करता है, लेकिन वह चारों तरफ शिव (अच्छे) पक्ष का ही समर्थनकरते नजर आतेहैं। आचार्य वात्स्यायन ने इस प्रकरण में उपसृप्त और विपरीतसेक्स, इन दो विषयों का प्रतिपादन खासतौर से किया है।

आचार्यवात्स्यायन ने इस अनिर्वयनीय आनंद की अनुभूति को बहुतज्यादा सरल बनाने के लिएसंभोग तथा उसके योगों, प्रयोगों और उसकीप्रतिक्रियाओं को विशदरूप से वर्णन किया है।उनके मुताबिक इन क्रियाओं कोवह सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं मानता है। भोग आसनोंका मकसद जीवन कीसिद्धि और जीवन कला का अभिज्ञान हासिल करना है।

आचार्यवात्स्यायन ने अच्छे और बुरे दोनों तरह की प्रवृत्तियोंऔर प्रयोगों का वर्णन कियाहै लेकिन वह स्त्री और पुरुष दोनों की शुभनियुक्ति का इच्छुक है। उनका स्वयं कामानना है कि शास्त्र, नियम-विधान सेकुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति और समाज कोसुरक्षित करना है तो उसके लिएपुनीत वातावरण तथा शुभ नियुक्ति ही सही है।

इस आठवें अध्यायके 2 मुख्य प्रतिपाद्य है- पुरूषायित औरपुरुषोपसृप्त। दोनों विषयों कोअपने नाम के आधार पर दो प्रकरणों में बांटागया है। इन दोनों प्रकरणों केविषय का प्रयोजन जितना हमारे आध्यात्मिकजीवन से है उससे कहीं ज्यादा व्यावहारिक जीवनसे भी है। व्यावहारिक पक्षमें संभोग को कला के रूप में बताया गया है।

संभोग क्रियाकरते समय जब पुरुष थक जाए और स्त्री की उत्तेजनाबढ़ रही हो तो उस समय स्त्रीको अपनी तृप्ति के लिए और पुरुष को आराम देनेके लिए काम-उत्तेजित पुरुष की तरह हीबर्ताव करके विपरीत सेक्स करनाचाहिए। लेकिन स्त्री को उसी स्थिति में विपरीतसेक्स करना चाहिए जब किपुरुष संभोग करते-करते शांत हो गया हो लेकिन उसकी उत्तेजनाकम न हुई हो।जबकि स्त्री की काम-उत्तेजना काफी बढ़ रही हो। ऐसे समय में पुरुष केनिवेदन करने पर, स्त्री को पुरुष के ऊपर लेट जाना चाहिए और पुरुष को स्त्रीकी तरहनीचे लेटकर संभोग

की क्रिया करनी चाहिए।

संभोग क्रिया केसमय नागरक यह जांच करता है कि स्त्री कीजननेन्द्रिय के अंदर किस स्थानपर लिंग के स्पर्श से या रगड़ से अपनीउत्तेजना को आंखों के द्वारा प्रकट करती है।खासतौर पर उसी जगह पर जबपुरुष उपसर्पण करता है तो अन्तःउपसर्पण किया जाता है।उपसर्पण करते हुएपुरुष को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस स्त्री के साथ संभोगक्रियाकी जा रही है वह अक्षतयोनि कुमारी है या स्वैरिणी या दूसरी तरह की है।पुरूषाय़ितऔर उपसृप्तक- यह दोनों प्रयोग पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका केबीच मेंकाम-उत्तेजना बढ़ाने में बहुत ज्यादा मददगार साबित होते हैं।

श्लोक- इति श्रीवात्सायायनीये कामसूत्रे साम्प्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे पुरुषोपसृप्तानि पुरूषायितं चाष्टमोऽध्यायः।।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 9 औपरिष्टक प्रकरण (मुख मैथुन)

श्लोक (1)- द्विविधा तृतीया प्रकृतिः स्त्रीरूपिणी पुरूषरूपिणो च।।

अर्थ- अब तक आपको चारों प्रकार कीस्त्रियों के बारे में आलिंगन सेलेकर विपरीत सेक्स के बारे में बताया गयाहै। अब आपको तीसरी प्रकार अर्थात किन्नरोंके लिए औपरिष्टक योग बताया जारहा है-

किन्नर प्रकृति 2 तरह की होती है स्त्री और पुरूष।

श्लोक (2)- तत्र स्त्रीरूपिणी स्त्रिया वेषमालापं लीलां भावं मृवत्वं भीरुत्वं मुग्धतामसहिष्णुता व्रीड़ां चानुकुर्वीत।।

अर्थ- जिसकी चाल-ढाल, रंग-रूप, शरीरकी बनावट बिल्कुल स्त्री की तरह ही हो लेकिन उसके यौन अंग पुरुष के साथसंभोग करनेमें विफल हो तो उस किन्नर को चाहिए कि वह स्त्रियों की तरह हीकपड़े पहने और उसी कीतरह हाव-भाव, शर्मो-हय्या, डर आदि को प्रकट करे।

श्लोक (3)- तस्या वदने जघनकर्म। तदौपरिष्टकमोचक्षते।।

अर्थ- औपरिष्टक-
किन्नर स्त्रीके मुख में जो बुरा काम किया जाता है उसे औपरिष्टक कहा जाता है।
फलमाह-

श्लोक (4)- सा ततो रतिमाभिमानिकीं वृत्तिं च लिप्सेत्।।

अर्थ- ऐसी किन्नर स्त्री को स्तनों कोदबाना, चुंबन करना आदि क्रियाओं द्वारा अभिमाननी का संभोग सुख प्राप्तकरने के साथ हीमुख मैथुन द्वारा ही अपना जीवन बिता सकती है।

श्लोक (5)- वेश्यावच्चरितं प्रकाशयेत्। इतिं स्त्रीरूपिणी।।

अर्थ- किन्नर स्त्री को हरदम वेश्याओं जैसा व्यवहार ही करना चाहिए। यहां पर किन्नर का विषय समाप्त होता है।

श्लोक (6)- पुरूषरूपिणी तु प्रच्छन्नकामा पुरुषं लिप्समानां संवाहक-भावमुपजीवेत्।।

अर्थ- जो किन्नर पुरूष जैसे होते हैंवह किन्नर होने की वजह से अपनीइच्छाओं को दबाकर रखते हैं लेकिन वह पुरूषसे संभोग करने की इच्छा रखते हैं। ऐसेमें उस किन्नर को पुरूष के पांव आदिदबाने का काम करना चाहिए।

श्लोक (7)- संवाहने परिष्वजमानेव गात्रैरूरू नायकस्य मृद्गीयात्।।

अर्थ- पुरूष के पांव दबाते समय अपने शरीर को पुरूष के शरीर से छुआते रहे और उसकी जांघों को भीदबाए।

श्लोक (8)- प्रसतपरिचया चोरुमूलं सजघनमिति संस्पृशेत्।।

अर्थ- इसके बाद धीरे-धीरे करके पुरूष की जांघों के जोड़ो तथा जांघों कोधीरे-धीरे सहलाते हुए मसलना चाहिए।

श्लोक (9)- तत्र स्थिरलिङ्गतामुपलभ्य चास्य पाणिमन्थेन परिघट्टयेत्। चापलमस्य कुत्सन्तीव हसेत्।।

अर्थ- इस तरह करने से अगर पुरूष केलिंग में उत्तेजना आ जाती है तो उसकीचापलूसी करते हुए उसके लिंग को अपनीमुट्ठी में दबाकर हिलाएं।

श्लोक (10)- कृतलक्षणेनाप्युपलब्धवैकृतेनापि न चोद्यत इति चेत्स्वयमुपक्रमेत्।।

अर्थ- पुरूष का लिंग उसी अवस्था मेंउत्तेजित हो सकता है जब उत्तेजनापैदा होती है। इस तरह किन्नर द्वाराउत्तेजना पैदा करने और इस बात की जानकारी देतेहुए भी कि वह मुख मैथुनकरना चाहता है फिर भी पुरूष उस किन्नर को मुख मैथुन करनेके लिए कहे लेकिनकिन्नर को खुद ही मुख मैथुन करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

श्लोक (11)- पुरुषेण च चोद्यमाना विवदेत्। कृच्छ्रेण चाभ्युपगच्छेत्।।

अर्थ- कभी-कभी अगर पुरूष पहले हीकिन्नर से मुख मैथुन करने के लिए कहताहै तो किन्नर को आनाकानी करते हुएबहुत मुश्किल के मुख मैथुन करना चाहिए।

श्लोक (12)- तत्र कर्माष्टविधं समुच्चयप्रयोज्यम्।।

अर्थ- औपरिष्टक काम 8 तरह के होते हैं इसलिए उनका बारी-बारी से प्रयोग करना चाहिए।

श्लोक (13)- निमितं पार्श्र्वतोदष्टं बहिःसंदंशोऽन्तुःसंदंशश्चुम्बितकं परिमृष्टकमाम्रचूषितकं संगर इति।।

अर्थ-

1. निमित्त
2. पार्श्वोदष्टं

3. बहिःसंदंश
4. अंतःसंदंश
5. चुम्बितक
6. परिमृष्टक
7. आम्रचूषितक
8. सङगर

श्लोक (14)- तेष्वेकैमभ्युपगम्य विरामाभीप्सां दर्शयेत्।।

अर्थ- इन 8 क्रियाओं में से किन्नर कोएक-एक क्रिया करते हुए आराम करना चाहिए जिससे कि पुरूष ज्यादा उत्सुक हो जाए।

श्लोक (15)- इतरश्च पूर्वस्मिन्नभ्युपगते तदुत्तरमेवापरं निदिशेत्। तस्मिन्नपि सिद्धे तदुत्तरमिति।।

अर्थ- पुरूष को एक क्रिया के पूरी होजानेके बाद किन्नर से दूसरी क्रिया करने के लिए कहना चाहिए। इसी तरह सेउससे बाकीक्रियाएं करने के लिए कहना चाहिए।

श्लोक (16)- करावलम्बितमोष्ठयोरुपरि विन्यस्तमपविध्य मुखं विधुनुयात्। तन्निमितम्।।

अर्थ- निमित

पुरूष के लिंगको अपने हाथों से पकड़कर उस किन्नर को होठोंको गोल-गोल आकारमें बनाकर लिंग पर रख देना चाहिए और फिर अपना मुंह हिलानाचाहिए। इसे निमित मुख मैथुनकहते हैं।

श्लोक (17)- हस्तेनाग्रमवच्छाद्य पार्श्वतो निर्दशनमोष्ठाभ्यामवपीडय भवत्वेतावदिति सान्वयेत्। तत्पार्श्वतोदष्ट।

अर्थ- पार्श्वतोदष्ट-

किन्नर को पुरूष केलिंग के आगे वाले भाग को अपने हाथ से दबाकर तथा उसके दोनोंभागों को सिर्फहोठों से दबाकर छोड़ देना चाहिए और कहना चाहिए कि अब इतना ही करनाहै।इसे पार्श्वतोदष्ट कहते हैं।

श्लोक (18)- भूयश्चोदिता संमीलितौष्ठी तस्यांग्र निष्पीडच्य कर्षयन्तीव चुम्बेत्। इति बहिःसंदंश।।

अर्थ- बहिःसंदंश

अगर पुरूषदुबारा से किन्नर को यह क्रिया करने के लिए कहताहै तो उसे पुरूष के लिंग को मुंह के अंदर लेकरदोनों होठों से दबाकरखींचते हुए उसे चूमना चाहिए। इस क्रिया को बहिःसंदंश कहते हैं।

श्लोक (19)- तस्मिभेवाभ्यर्थनया किञ्चिदधिकं प्रवेशयेत्। सापि चाग्रमोष्ठायां निष्पीडय निष्ठीवेत्। इत्यन्तःसंदंशः।।

अर्थ- अन्तःसंदंश

पुरूष के फिरदुबारा से कहने पर किन्नर को पुरूष के लिंग केआगे के भाग को थोडा मुंह के अंदर रखकर होठोंसे दबाकर निकाल देने कोअन्तःसंदंश कहते हैं।

श्लोक (20)- करावलम्बितस्यौष्ठवद्ग्रहणं चुम्बितकम्।।

अर्थ- चुम्बितक

अपने हाथों में पुरूषके लिंग को पकड़कर होठों को गोल आकृति में बनाकर लिंग को उनसे चूमने को चुम्बितकहते हैं।

श्लोक (21)- तत्कृत्वा जिहवाग्रेण सर्वतो घट्टनमग्रे च व्यधनमिति

अर्थ- परिमृष्टकम्

चुम्बितक क्रियाको करते समय लिंग को जीभ से रगड़ना या उस पर जीभ से प्रहार करने को परिमृष्टक कहते हैं।

श्लोक (22)- तथाभूतमेव रागवशादर्धप्रविष्टं निर्दयमवपीडयावपीडय मुञ्चेत। इत्याम्रसुषितकम्।।

अर्थ- आम्रचूषितक
पूरी तरह सेउत्तेजना के बढ़ जाने के बाद लिंग को मुंह में थोड़ा सापूरा डालकर आम की गुठली कीतरह चूसने को आम्रचूषितक कहते हैं।

श्लोक (23)- पुरूषाभिप्रायादेव गिरेत्पीडयेच्चपरिसमाप्तेः। इति संगरः।।

अर्थ- संगर-

किन्नर को पुरूष की इच्छा के मुताबिक ही लिंग को मुंहमें डालकर स्खलित होने तक दबाने को संगर कहते हैं।

श्लोक (24)- यथार्थ चात्र स्तननप्रहणनयोः प्रयोगः। इत्यौपरिष्टकम्।।

अर्थ- उत्तेजना के अनुसार ही कम या तेजगति से मुख मैथुन करते समय किन्नर को सिसकियां तथा प्रहणन क्रिया करनी चाहिए।

श्लोक (25)- कुल्टाः स्वैरिण्यः परिचारिकाः संवाहिकाश्चाप्येतत् प्रयोजयन्ति।।

अर्थ- किन्नरों केअलावा कुल्टा आदिस्त्रियों के मुख मैथुन कर्म कुल्टा, स्वैरिणी, परिचारिका तथा संवाहिकास्त्रियां भीमुख मैथुन कराती है।

श्लोक (26)- तदेतत्तु न कार्यम्। समयविरोधासभ्यत्वाच्च। पुनरपि ह्यासां वदनंसंसर्गे स्वयमेवर्ति प्रपद्येत। इत्याचार्याः।।

अर्थ- आचार्यों के मतानुसार-
इस मुखमैथुनजैसे कार्य को बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।शास्त्रों नें भी इस काम को

गलत बताया है। जोस्त्री या किन्नर मुख मैथुनकरवाते हैं इसको करने के बाद अगर इनका मुंह चूमा जाता हैतो बहुत ज्यादादुख होता है।

श्लोक (27)- वेश्याकामिनोऽयमदोषः। अंतयतोऽपि परिहार्यः स्यात्। इति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के अनुसारवेश्यागमन करने वालों के लिए शास्त्रों को न मानना गलत नहीं माना जा सकता।इसकेअलावा यह भी कहा जाता है कि जानवरों का है तथा ऐसी स्त्रियों के मुंहको चूमने से दुखहोता है। जिस देश में इस काम को करना जायज माना जा सकताहै वहां के लोगों को यह कामकरने पर दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

श्लोक (28)- तस्माद्यास्तवौपरिष्टकमाचरन्ति न ताभिः सह संसृज्यन्ते प्राच्याः।

अर्थ- प्राच्य देश के लोग मुखमैथुन न करवाने वाली स्त्रियों के साथ संभोगनहीं करते हैं।

श्लोक (29)- वेश्याभिरेव नसंसृज्यन्ते आहिच्छत्रिकाः संसृष्टा अपि मुखकर्म तासां परिहरन्ति।।

अर्थ- अहिच्छत्र देश में रहने वाले लोगवेश्यावृति नहीं करते हैं और अगर कोई स्त्री करती भी है तो उसका मुंह नहीं चूमा जाताहै।

श्लोक (30)- निरपेक्षाः साकेताः संसृज्यन्ते।।

अर्थ- साकेत देश के लोगों की प्रवृत्ति-

अवध (साकेत) देश के लोग अपनी मनमर्जी के मुताबिकवेश्यावृति करते हैं।

श्लोक (31)- न तु स्वयमौपरिष्टकमाचरन्ति नागरकाः।।

अर्थ- नागरक देश के लोग अपने आप में कोई बुरा काम नहीं करते हैं।

श्लोक (32)- सर्वमविशङ्क्या प्रयोजयन्ति सौरसेनाः।।

अर्थ- सूरसेन देश के लोग हर काम को बिना डरे करते हैं।

श्लोक (33)- एवं ह्याहुः-को हि योपितां शीलं शौजमाचारं चरित्रं प्रत्ययं वचनं वा श्रद्धातुमर्हति।निसर्गादेव हि मलिनदृष्टयो भवन्त्येता न परित्याज्याः। तस्मादासां स्मृतितएव शौचमन्वेष्टव्यम्। एवं ह्याहुः-वत्सः प्रस्त्रवणे मेध्यः श्वामृगग्रहणे शुचिः। शकुनि फलपाते तु स्त्रीमुखं रतिसंगमें।।

अर्थ- इसी वजह से कहा जाता है कि ऐसाकौन है जो स्त्रियों के शील, शौच, आचार, चरित्र और वचन पर भरोसा करेगाक्योंकि स्त्रियां स्वभाव से ही मलिनस्वभाव की होती है फिर भी छोडने लायकनहीं होती है। इसलिए इनकी पवित्रता कोधर्मशास्त्रों में ढूंढना चाहिए।
धर्मशास्त्रों के मुताबिक-

दूध निकालते समय बछड़ा पवित्र होता है, हिरन को पकड़ते समय कुत्तापवित्र होता है, फलों के गिरने के समय पक्षी पवित्र होता है औरसंभोगक्रिया के समय स्त्री पवित्र होती है। इसी वजह से संभोग के समयस्त्रियोंके मुख को पवित्र समझना चाहिए।

श्लोक (34)- शिष्टाविप्रतिपत्तेः स्मृतिवाक्यस्य च सावकाशत्वाद्देशास्थितेरात्मनश्चवृत्तिप्रत्ययानुरूपं प्रवर्तेत। इति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन कहते हैं-

शिष्टजनों के अनुसार स्त्रियों कामुख नहीं चूमना चाहिएलेकिन धर्मशास्त्र में संभोग क्रिया के समय मुख को चूमना बहुतजरूरी है।ऐसे में अपनी इच्छा और स्त्री के भरोसे के अनुसार ही बर्ताव करनाचाहिए।

श्लोक (35)- भवन्ति चात्र श्लोकः- प्रमृष्टकुण्डलाश्चापि युवानाः परिचारकाः। केपांचिदेव कुर्वन्ति नराणामौपरिष्टकम्।।

अर्थ- इस विषय में 4 श्लोक बताए गए है-

कानों में कुंडल आदि पहनने वाले या सजकर रहने वाले पुरूषभी मुखमैथुन करते हैं।

श्लोक (36)- तथा नागरकाः केचिदन्योन्यस्य हितैषिणीः। कुर्वन्ति रूढिविश्वासाः परस्परपरिग्रहम्।।

अर्थ- इसी तरह कुछ भोगविलासी तथा एक-दूसरे के प्यारे बनने वाले लोग भी आपस में मुखमैथुन करतेहैं।

श्लोक (37)- पुरूषाश्च तथा स्त्रीसु कमैंतत्किल कुर्वते। व्यासम्चत्स्य च विज्ञेयो मुखचुम्बनबद्विधिः।।

अर्थ- बहुत से पुरूष भी स्त्री के साथ मुख मैथुन करते है मतलब की वहस्त्री की योनि का चुंबन लेते है या उसे जीभ से चाटते हैं।

श्लोक (38)- परिवर्तितेदेहौ तु स्त्रीपुंसौ यत्परस्परम्। युगपत्संप्रयुज्येते स कामः काकिलः स्मृतः।।

अर्थ- जिस क्रिया में स्त्री और पुरूषएक-दूसरे के सामने मुंह करकेलेट जाते हैं और पुरूष स्त्री की योनि का औरस्त्री पुरूष के लिंग का चुंबन करती हैतो उस मुख मैथुन को काकिल कहतेहैं।

श्लोक (39)- तस्माद गुणवतस्त्यक्तवा चतुरांस्त्यागिनो नरान्। वेश्याः खलेषु रज्येन्ते दास्हस्तिकादिपु।।

अर्थ- इसी वजह से ज्यादातर वेश्याएंशिष्ट, कलाकुशल और गुणी व्यक्तियों को छोड़कर नौकरों, साइसों आदि खलव्यक्तियों में ज्यादा दिलचस्पी रखती है।

श्लोक (40)- न त्वेतदब्राह्मणो विद्वान्मन्त्री वा राजधूर्धरः। गृहीतप्रत्ययो वापि कारचेदौपरिष्टकम्।।

अर्थ- मुख मैथुन जैसे कार्यों कोविद्वानों को, ब्राह्मणों को, राज्य के मंत्री को तथा जिससे सब प्यार करतेहैं आदि को नहीं करना चाहिए।

श्लोक (41)- न शास्त्रमस्तीत्येतावत्प्रयोगे कारणं भवेत्। शास्त्रार्थान्व्यापिनो विद्यात्प्रयोगांस्तवेकदेशिकान्।।

अर्थ- इस विषय का शास्त्र बना हुआ हैसिर्फ यहीं नहीं, इन विषयों के प्रयोग का कारण नहीं हुआ करता क्योंकिशास्त्र तोव्यापक होता है उनके अंतर्गत अच्छाई बुराई सभी कुछ रहती है, लेकिन प्रयोग सीमित तथा देशीय होते हैं।

श्लोक (42)- रसवीर्यविपाका हि श्वमांसस्यापि वैद्यके। कीर्तिता इति तत्कि स्याद्धक्षणीयं विचक्षणैः।।

अर्थ- आयुर्वेद में तो कुत्ते के मांसको भी वीर्य और रस बढ़ाने वालाबताया गया है क्योंकि जब मांस के गुण औरदोषों के बारे में बताया जाता है तो उसमेंकुत्ते के मांस के गुण और दोषभी बताने चाहिए लेकिन क्या इतना बता देने से लोगोंको कुत्ते का मांस खानाचाहिए।

श्लोक (43)-सन्त्येव पुरुषाः केचित्सन्ति देशास्ताथाविधाः। सन्ति कालाश्च येष्वेते योगा न स्युर्निरर्थकाः।

अर्थ- कुछ इस प्रकार के देशों में, इस प्रकार के लोगों पर इस प्रकार का समय आता हैजब उनके लिए ऐसे काम कोई बुरा नहीं होता है।

श्लोक (44)- तस्माद्देशं च कालं च प्रयोगं शास्त्रमेव च। आत्मनं चापि संप्रेक्ष्य योगान्युञ्जीत वा न वा।।

अर्थ- इसी वजह से देश, समय, शास्त्रतथा अपने आपको देखकर जो सही लगे उन्हीं विधियों और योगों को अपनाना चाहिएऔर जो सहीनहीं लगे उन्हे छोड़ देना चाहिए।

श्लोक (45)- अर्थस्यास्य रहस्यत्वाच्चलत्वान्मनसस्तथा। कः कदा किं कुतः कुर्यादिति को ज्ञातुमर्हिति।।

अर्थ- इस प्रकार की मुख मैथुन कीक्रिया को छिपाकर ही करना चाहिए औरकिसी को इसके बारे में बताना भी नहींचाहिए। मन तो वैसे भी कब, क्या करा डाले यह कोई नहीं जान सकता।

जानकारी-

मुख मैथुन कोऔपरिष्टक कहा जाता है। यह क्रिया ज्यादातरकिन्नर करते हैं। विद्वानों के मुताबिक मुख मैथुनको बहुत ही बुरा बतायागया है और इसका विरोध धर्मशास्त्रों में भी किया गया है।इसी वजह से इसक्रिया को नहीं करनी चाहिए। जो लोग इस क्रिया को करने में आनंदप्राप्तकरते हैं वह लोग बहुत ही दुष्ट प्रवृति के कहे जा सकते हैं।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रेसाम्प्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे औपरिष्टकं नवमोऽध्यायः।

वात्स्यायन का कामसूत्र हिन्दी में

भाग 2 साम्प्रयोगिक

अध्याय 10 रतारम्भावसानिक प्रकरण

श्लोक (1)- नागरकःसहमित्रजनेन परिजारकैक्ष कृतपुष्पोपहारे संचारितसुरभिधूपे रत्यावासेप्रसाधिते वासगृह कृतस्त्रानप्रसाधनां युक्तयापीतां स्त्रियं सान्त्वनैःपुनः पानेन चोपक्रमत्।।

अर्थ- नागरक को अपने नौकरों तथादोस्तों द्वारा फूलों से सजाए गए सुगंधित संभोग क्रिया करने वाले कमरे मेंअपनीखूबसूरत, महंगे वस्त्रों में सजी, गहनों से लदी हुई, शराब का सेवन कीहुई स्त्री के पास जाकर बैठे तथा उससे दुबारा उससेशराब पीने के लिए कहें

श्लोक (2)- दक्षिणतक्ष्चास्या उपवेशनम्। केशहस्ते वस्त्रान्ते नीव्यामित्यवलम्बनम्। रत्यर्थ सव्येन बाहुनानुद्धतः परिष्वग्ड़।।

अर्थ- स्त्री के दाईं तरफ बैठ जाएं।फिर उसके बालों को हाथोंसे सहलाएं, उसके कपड़ों पर हाथ फेरें। इसके बादउसकी साड़ी की गांठ पर हाथलगाएं। संभोग क्रिया का आनंद बढ़ाने के लिएअपनी बाईं भुजा से उसको मजबूती से जकड़लें।

श्लोक (3)- पूर्वप्रकरणसंबद्धैः परिहासानुरागैर्वचोभिरनुवृत्तिः। गूढाश्र्लीलानां च वस्तूनां समस्यया परिभाषणम्।।

अर्थ- संभोग के समय के आनंद को बढ़ानेके लिए किसी गहरी तथा अश्लीलबात को किसी भी समस्या के रूप में बात करें।इसके साथ ही हंसी-मजाक भी जारी रहनाचाहिए।

श्लोक (4)- सनृत्तमनृत्तं व गीतं वादिन्नम्। कलासु संकथाः। पुनः पानेनोपच्छन्दनम्।।

अर्थ- किसी तरह के संगीत को बजाने कीव्यवस्था करें चाहे तो नाच भी करवासकते हैं, सुकुमार कलाओं पर किसी तरहकी बातचीत करें और फिर शराब का सेवन कराकरउसका उत्साह बढ़ाएं।

श्लोक (5)- जातानुरगायांकुसुमानुलेपनताम्बूलदानेन च शेषजनविसृष्टिः। विजने चयथोक्तैरालिग्ड़नादिभिरेनामुद्धर्षयेत्।ततो नीवीविश्र्लेषणादियथोक्तमुपक्रमेत। इत्ययं रतारम्भः।।

अर्थ- किसी तरह की खुशबू, इत्र, परफ्यूम आदि को स्त्री के ऊपर छिड़ककर उसकी उत्तेजना को बढ़ाए। फालतू बैठेहुए लोगों कोविदा कर दें। इसके बाद किसी खाली कमरे में उसकी उत्तेजना कोऔर बढ़ाने के लिए उसके साथआलिंगन, चुंबन आदि करें। इसके बाद संभोग करनेसे पहले की क्रियाएं साड़ी खोलना, कपडे उतारना आदि करें।

श्लोक (6)- रतावसानिकंरागमतिवाहयासंत्तुतयोरिव सव्रीडयोः परस्परमपश्यतोःपृथक्पृथगाजारभूमिगमनम्। प्रतिनिवृत्यचाव्रीडायमानयोरुचितदेशो-पविष्टयोस्ताम्बूलग्रहणमच्छीकृतं चंदनमन्यद्वानुलेपनं तस्या गात्रे स्वयमेवनिवेशयेत्।।

अर्थ- संभोग क्रिया की समाप्ति के बादकाम-उत्तेजना को बढ़ाने वालीक्रियाओं को छोड़कर दोनों को एक-दूसरे सेअंजान बने हुए शर्म सी करते रहें औरएक-दूसरे को न देखते हुए अलग-अलगशौचालयों में जाकर मूत्रत्याग करें तथा अपने-अपनेजननांगों को साफ करें।इसके बाद शर्मो-हय्या को छोड़कर संभोग करने वाले स्थानके अलावा किसीदूसरे स्थान पर बैठकर पान का सेवन करें। फिर अपने हाथों से स्त्री केशरीरपर चंदन का या किसी दूसरे तेल आदि को लगाएं।

श्लोक (7)- स्वयेन बाहुनाचैनां परिरभ्य चषकहस्तः सान्त्वयन् पापयेत्। जलानुपानं वाखण्डखाद्दकमन्यद्धा प्रकृतिसात्म्ययुक्तमुभावप्युञ्त्रयाताम्।।

अर्थ- इसके बाद अपने बाएं हाथ सेस्त्री का अलिंगनकरके उसे सांत्वना दें। फिर अपनी पसंद तथा मौसम केअनुसार मीठे पदार्थ याफल आदि का सेवन करें।

श्लोक (8)- अच्छरसकयूषमम्यलयवागूं भृष्टमांसोपदंशानि पानकानि चूतफलानि शुष्कामांसंमातुलुग्डंचुक्रकाणि सशर्कराणि य यथादेशसात्म्यं च। तत्र मधुरमिदं मृदुविशदमिति च विदश्य विदश्य तत्तदुपाहरेत्।।

अर्थ- स्त्री को कोई भी खाने वाला फलआदि यह कहकर कि इस आम मे कितना रसभरा हुआ है, यह कितना मीठा है, यह कितनासुंदर और बड़ा है, इसे चखकर और चूसकर देखो कहकर देते रहें।

श्लोक (9)- हर्म्यतलस्थितयोर्वाचन्द्रिकासेवनार्थमासनम्।तत्रानुकूलाभिःकथाभिरनुवर्तेत। तदक्डंसंलीनायाश्र्चन्द्रमसंपश्यन्त्यानक्षत्रपंडिक्तव्यक्तीकरणम्। अरुन्धतीध्रुवसप्तर्षिमालादर्शनं च। इतिरतावसानिकम्।।

अर्थ- स्त्री और पुरूष दोनों को मौसमका या चांदनी रात का आनंद लेने के लिए घर की छत पर बैठ जाना चाहिए औरप्यार भरी बातेंकरनी चाहिए। फिर स्त्री को पुरूष की गोद में अपना सिररखकर लेट जाना चाहिए औरचांद की रोशनी को देखते रहना चाहिए। पुरूष कोस्त्री को नक्षत्रमालाओंके नाम बताते हुए कहना चाहिए कि देखो वह अरुंधतीहै, वह ध्रुव तारा है, वह सप्तर्षि है और वह आकाश गंगा है। इस तरह शरीर औरमन को शांत और सुस्थिर बनाकर अलग-अलगपलंग पर सो जाना चाहिए।

श्लोक (10)- तत्रैतद्धवति- अवसानेऽपि च प्रीतिरुपचारैरुपस्कृता। विस्त्रम्भकथायोगै रतिं जनयते पराम्।।

इस विषय में कही गई कहावते प्रसिद्ध है-
अर्थ- अलिंगन, चुंबन और मीठी-मीठी प्यारभरी बातों से और प्यार कीकहानियों से दोबारा शरीर में काम-उत्तेजनापैदा हो जाया करती है।

श्लोक (11)- परस्परप्रीतिकरैरात्मभावानुवर्तनैः क्षणात्क्रधपरावृत्तैः क्षणात्तप्रीतविलोकितैः।।

अर्थ- प्यार पैदा करने वाले भावों कोदिखाने से थोडी ही देर मेंनाराज होकर मुंह मोड़ने और दूसरे ही पल हंसकरप्यार भरी नजर से देखने से आपस में प्यारबढ़ता है।

श्लोक (12)- हल्लीसंकक्रीड़नकैर्गायनैर्लाटरासकैः। रागलोलार्द्रनयनैश्चन्द्रमंडलवीक्षणैः।।

अर्थ- स्त्री और पुरूष के पहली बारमिलने पर मन में किस प्रकार कीभावनाएं पैदा हुई थी या पहली बार एक-दूसरेसे बिछड़ने पर कितना दुख हुआ। इस प्रकार कीबातें करने से शरीर मेंउत्तेजना बढ़ती है।

श्लोक (13)- आद्येसंदर्शने जाते पूर्व ये स्युर्मनोरथाः पुनर्वियोगे दुःखं च तस्य सर्वस्यकीर्तनः।। कीर्तनान्ते च रागेण परिष्बग्डैः सचुम्बनैः। तैस्तैश्र्च भावैःसंयुक्तो यूनो रागो विवर्धते।।

अर्थ- इस तरह से प्यार भरी बातें करने से और आपस में एक-दूसरे कोअलिंगन और चुंबन आदि करने से आनंद और उत्तेजना बढ़ जाते हैं।

श्लोक (14)- रागवदाहार्यरागं कृत्रिमरागं व्यवहितरागं पोटारतं खलरतमयन्त्रितरतमिति रताविशेषाः।।

अर्थ-

रागवत- सबसे पहले एक-दूसरे कोदेखने से ही आपस में प्यार पैदा हो जाता है।

आहार्यराग- किसी स्त्री से धीरे-धीरेप्यार बढ़ाकर उसके साथ संबंध जोड़ लेना चाहिए।

कृत्रिमराग- प्यार के बिना ही किसीखास मकसद से संबंध जोड़ना चाहिए।

व्यवहितराग- किसी कारण से अपनी पत्नी केअलगाव हो जाने पर किसी दूसरी स्त्री के साथ अपनी पत्नी की ही तरह संबंध रखनेचाहिए।

पोटारत- काम-उत्तेजना में अंधे होकर किसी दुष्ट स्त्री के साथ संबंधजोड़ना।

खलरत- अपने अंदर उठने वाली काम-उत्तेजनाओं को शांत करने के लिए किसीछोटी जाति की स्त्री या नीच व्यक्ति से संबंध जोड़ना।

अयन्त्रितरतम- जिन पुरुषों और स्त्रियों के आपस में संबंध जुड़ने में किसी तरह की परेशानी नहींआती है।

श्लोक (15)- संदर्शनात्प्रभृत्युभयोरपि प्रवृद्धरागयोः प्रयत्नकृते समागमे प्रवासप्रत्यागमने वा कलहवियोगयोगे तद्रागवत्।।

अर्थ- सबसे पहले स्त्री और पुरूष कीआपस में बातचीत, एक-दूसरे को देखना, एक-दूसरे की आंखों में दोनों को समाजाना, एक-दूसरे से मिलने के लिए दिल में तड़प पैदाहोना, दोनों की तड़पबढ़ने से बहुत मुश्किलों से आपस में संभोग करना, किसी दूर देश से वापिस आनेपर बिछड़ने की तड़प को भूलकरदोबारा से उत्तेजना भरी हुई बातें करनारागावत कहलाया जाता है।

श्लोक (16)- तत्रात्माभिप्रायाद्यावदर्थ च प्रवृत्तिः।।

अर्थ- रागावत (उत्तेजना) अपने आप हीबढ़ती है। इसप्रकार स्त्री और पुरूष संभोग करते हुए जब तक स्खलित नहींहोते तब तक संभोगकरने में लगे रहते हैं।

श्लोक (17)- मध्यस्थरागयोरारब्धं यदनुरज्यते तदाहार्यरागम्।।

अर्थ- जब स्त्री या पुरूष एक-दूसरे कोदेख लेते हैंतो उनमें एक-दूसरे के प्रति सिर्फ चाहत पैदा होती है किसीतरह कीकाम-उत्तेजना नहीं। इसे मध्यस्थराग कहा जाता है। इस तरहसेमध्यस्थराग के द्वारा किए गए उपायों से उत्तेजना पैदा होने से जिस समयदोनोंआपस में मिल जाते हैं तो उसे आहार्यराग कहते हैं।

श्लोक (18)- तत्र चातुःषष्टिकैर्योगैः सात्मयानुविद्धैः संघुक्ष्य संघुक्ष्यरागं प्रवर्तेत।।

अर्थ- इस तरह के अवसर मिलने पर पहलेके अनुभव के आधार पर किये गएअलिंगन आदि के जरिये अपनी तथा स्त्री कीकाम-उत्तेजना को जगाकर संभोग क्रिया में लीन होजाना चाहिए।

श्लोक (19)- तत्कार्यपेतोरन्यत्र सक्तयोर्वा कृत्रिमरागम्।।

अर्थ- अगर पुरूष किसी और पर फिदा होजाए तथा स्त्रीभी किसी और पर फिदा हो जाए तो इस मकसद के तहत जब दोनों आपसमेंसंभोग करते हैं तो उसे कृत्रिम राग कहा जाता है।

श्लोक (20)- तत्र समुच्चयेन योगाञ्शास्त्रतः पश्येत्।।

अर्थ- कृत्रिम आदि उत्तेजनात्मक संभोग क्रिया में कामशास्त्रीय योगों या तरीकों का प्रयोग करना चाहिए।

श्लोक (21)- पुरूषस्तु ह्रदयप्रियामन्यां मनसि निधाय व्यवहरेत्। संप्रयोगात्प्रभृति रतिं यावत्। अतस्तद्यवहितरागम्।।

अर्थ- पुरुष जिस स्त्री से पहले प्यारकरता था, उसकी छवि को अपने मन में रखकर दूसरी स्त्री के साथ संभोग करतेसमय संभोगकी सारी क्रियाओं का इस्तेमाल करें और स्त्री भी अपने पहले कीप्रेमी को मनमें बसाकर दूसरे पुरूष के साथ संभोग क्रिया करे। इसे रतव्यवहितराग कहते हैं।

श्लोक (22)- न्यूनायां कुम्भदास्यां परिचारिकायां वा यावदर्थ संप्रयोगस्तत्पोटारतम्।।

अर्थ- नीची जाति की स्त्री के साथ याअपने घर आदि मेंकाम करने वाली स्त्री के साथ जब संभोग क्रिया की जाती हैउसे पोटारतकहते हैं।

श्लोक (23)- तत्रोपचारात्राद्रियेत।।

अर्थ- इस प्रकार की स्त्रियों के साथसंभोग करते समय चुंबन, अलिंगन आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इसतरहकी संभोग क्रिया सिर्फ प्रयोजनपरक (किसी उदेश्य को पूरा करने के लिए)ही मानीजाती हैं।

श्लोक (24)- तथा वेश्याया ग्रामीणेन सह यावदर्थ खलरतम्।।

अर्थ- इसी प्रकार वेश्या का किसी गंवार के साथ सिर्फ संभोग करने तक मतलबरहता है। इसे खलरत कहते हैं।

श्लोक (25)- ग्रामव्रयप्रत्यन्तयोषिद्धिकश्च।।

अर्थ- किसी गंवार स्त्री, गाय चरानेवाली स्त्री, भीलनी आदि के साथ संभोग क्रिया में निपुण व्यक्ति जब संभोगकरता है तो उसेभी खलरत कहते हैं।

श्लोक (26)- उत्पन्नविस्त्रम्भयोश्र्च परसपरानुकूल्यादयन्त्रितरतम्। इति रतानि।।

अर्थ- स्त्री और पुरूष जब काफी दिनोंसे एक-दूसरे कोजानने के कारण आपस में एक-दूसरे पर बहुत भरोसा करने लगजाते हैं तो उनदोनों का एक साथ संभोग करना अयन्त्रितरत कहलाता है।

श्लोक (27)- वर्धमानप्रणया तु नायिका सपत्नीनामग्रहणं तदाश्रयमालार्प वा गोत्रस्खलितं वा न मर्षयेत्। नायकव्यलीकं।

अर्थ- जो प्रेमी अपनी प्रेमिका परबहुत ज्यादा भरोसा करने लग गया होऐसे में प्रेमिका को अपने प्रेमी द्वाराअपनी सौतनों का नाम लेना, उनके बारे में बात करना या उनके नाम से खुद कोबुलाया जाना आदिको बर्दाश्त नहीं करना चाहिए।

श्लोक (28)- तत्र सुभृशः कलहो रुदितामायासः शिरोरुहाणामवक्षोदनं प्रहणनमासनाच्छयनाद्वा महयां पतनं माल्यभूषणावमोक्षो भूमौ शय्या च।।

अर्थ- ऐसी स्थिति आ जाने पर स्त्रियांबोलकर तथा दूसरी हरकतों के जरियेअपना गुस्सा जाहिर करती है जैसे मैने कहदिया न कि दुबारा ऐसी बात मत करना, यह बोली द्वारा गुस्सा जाहिर करना होताहै। रोना, चिल्लाना, हाथ-पैरों को पटकना यह सब दूसरी तरह से गुस्सा जाहिरकरना है। शरीर का गुस्से मेंकांपना, सिर में दर्द होना आयास कहलाता है।अपने बालों को खोलकर बिखेर देना, पुरूष के बालों को पकड़कर खींच देनाअवक्षोदन कहलाता है। अपनी छाती को हाथों से पीटनाप्रहणन कहलाता है। इसप्रकार के क्लेश में स्त्री जब पलंग आदि से उतरकर जमीन परलेट जाती है तोउसे कोई दुख नहीं होता है। जमीन पर लेटना, गहने उतारकर फैंक देना आदि क्लेशपैदा करते हैं।

श्लोक (29)- तत्र युक्तरूपण साम्ना पादपतनेन वा प्रसन्नमनास्तामनुनयुन्नुपक्रम्य शयनमारोहयेत्।।

अर्थ- स्त्री के इस तरह गुस्से मेंआकर क्लेश करने पर पुरूष को चाहिएकि वह प्यार भरी बातों से या उसके पैरोंमें पड़कर उसे बहला-फुसलाकर पलंग पर सुलादे।

श्लोक (30)- तस्य चवचनमुत्तरेण योजयन्ती विवृद्धक्रोधा सकचग्रहमस्यास्यमुन्नमय्य पादेन बाहौशिरसि वक्षसि पृष्ठे वा सकृदद्विस्त्रिरवहन्यात्। द्वारदेश गच्छेत्।तत्रोपविश्यश्रुकरणमिति।।

अर्थ- पुरूष की हर बात पर गुस्से मेंलड़ती हुईस्त्री, पुरूष के बालों को पकड़कर उसके मुंह को ऊपर उठाकर अपनेपैरों सेउसके हाथों, सिर, छाती या पीठ में 2-3 बार ठोकर मारकर दरवाजे तकचली जाती है और वहां बैठकर आंसू बहाती रहती है।

श्लोक (31)- अतिक्रद्धापितु न द्वारदेशाद्धूयो गच्छेत्। दोषवत्त्वात्। इति दत्तकः। तत्रयुक्तितोऽनुनीयमाना प्रसादमाकांक्षेत्। प्रसन्नाति तु सकषायैरेव वाक्यैरेनंतुदतीव प्रसन्नरतिकाक्षिणी नायकेन परिरभ्येतः।।

अर्थ- महान आचार्य दत्तक का कहना हैकि बहुत ही ज्यादा गुस्से में वहस्त्री जब न तो घर के अंदर ही जाए और नही घर के बाहर ही कदम रखे। उसे वहीं घर के अंदरदरवाजे पर खुश हो जानाचाहिए। खुश हो जाने के बाद स्त्री को अपनी तीखी बोली केप्रहारों से पुरूषके हृदय को चीरती हुई संभोग क्रिया करने की लालसा में पुरूष सेपरिरम्भणशुरू करना चाहिए।

श्लोक (32)- स्वभवनस्था तु निमित्तात्कलाहिता तथाविधचेष्टैव नायकमभिगच्छेत् ।।

अर्थ- अपने सगे-संबंधियों के घर पररहनेवाली स्त्री, पुरूष से दूरी में तड़पती हुई उससे मिलने की कोशिश करतेहुए उस तक पहुंचही जाए।

श्लोक (33)- तत्रपीठमर्दविटविदूषेकैर्नायकप्रयुक्तैरूपशमितरोषा तैरेवानुनीता तैः सहैवतद्धवनमधिगच्छेत्। तत्र च वसेत्। इति प्रणयकलहः।।

अर्थ- इस तरह के दूरी में तड़पते हुएअवसरों पर अगर पुरूष अपने दोस्तोंया जानने वालों को उसको मनाने के लिएभेजे तो स्त्री को गुस्सा छोड़कर पुरूष के पासचले जाना चाहिए तथा पूरीरात पुरूष के पास ही रहना चाहिए। अब प्रणय कलह समाप्तहोता है।

श्लोक (34)- भवन्ति चात्र श्लोकाः- एवमेतां चतुःषष्टिं बाभ्रव्येण प्रकीर्तिताम्। प्रयुञ्जानो वरस्त्रीषु सिद्धिं गच्छति नायकः ।।

अर्थ- वाभ्रव्य आचार्यों के द्वारा बताई गई पान्वालिकी चतुःषष्टि काइस्तेमाल स्त्री पर करके पुरूष सफलता हासिल कर सकता है।

श्लोक (35)- वर्जितोऽप्यन्यविज्ञानैरेतया यस्त्वलंकृतः। स गोष्ठयां नरनारीणां कथास्वग्रं निगाहते।।

अर्थ- जो पुरूष बहुत सी विद्याओं काज्ञाता होते हुए भी अलिंगन, चुंबन आदि जैसी संभोग की 64 कलाओं को नहींजानता है तो वहविद्वानों की अर्थ, धर्म, काम की गोष्ठियों में सम्माननहीं हासिल नहीं कर पाता।

श्लोक (36)- ब्रुवन्नप्यन्यशास्त्राणि चतुःषष्टिविवर्जितः। विद्वत्संसदि नात्यर्थं कथासु परिपूज्यते।।

अर्थ- दूसरी विद्याओं में निपुण नहोने के बावजूद भी जो पुरूषकाम-शास्त्र का ज्ञान रखता है वहस्त्री-पुरूषों की कामविषयक गोष्ठियों मेंसम्मान के अधिकारी बनते हैं।

श्लोक (37)- विद्वद्धिः पूजितामेनां खलैरपि सुपूजिताम्। पूजितां गणिकासङ्गनर्ननिन्दीं को न पूजयेत्।।

अर्थ- तीनों लोकों के ज्ञाता विद्वानसंभोग की इन 64 कलाओं को स्त्री की रक्षा का उपाय समझकर सम्मान देते हैं।गणिकाएं (वेश्याएं) भी इनको जीविका का साधन मानकर पूजती हैं। जब ऐसे बुरेलोग भी इनकीउपयोगिता को जानकर इनका सम्मान करते हैं तो भला ऐसे महानकलाओं को कौन नहीं पूजेगा।

श्लोक (38)- नन्दिनी सुभगा सिद्धा सुभगंकरणीति च। नारीप्रियेति चाचार्यः शास्त्रेष्वेषा निरुच्यतें।।

अर्थ- संभोग की इन 64 कलाओं का ज्ञानहर पति-पत्नी को करना चाहिए। क्योंकि यह कलाएं सुभणा है, सिद्धा है, संभंगकरणी है, स्त्रियों को प्यारी है तथा आचार्यों ने शास्त्रों केअंतर्गत इनकी इस तरह कीव्याख्या की है।

श्लोक (39)- कन्याभिः परयोषिद्धर्गणिकाभिश्च भावतः। वीक्ष्यते बहुमानेन चतुःषष्टिविचक्षणः।।

अर्थ- जो पुरूष संभोग की 64 कलाओं मेंपूरी तरह से निपुण होते हैं उन्हें पुनर्भू लड़कियां, परस्त्रियां (पराईस्त्रियां) तथा गणिकाएं बहुत ही सम्मान की नजर से देखती है।

प्राक् क्रीड़ा-

प्राक् क्रीड़ाको यौन-जीवन की नींव कहा जा सकता है क्योंकिइसका संबंध कहीं नकहीं स्खलन और संभोग के समय मिलने वाले चरम सुख से होताहै।

स्पर्श-

जीवन का एक बहुतही प्रमुख उपादान होता है स्पर्शभाव। प्राक्क्रीड़ा के समय वैसे तो स्त्रियां बहुतज्यादा शर्माती है, नखरें करतीहै, पुरूष की बाजुओं से छूटने की कोशिश करती है। लेकिन उनके इस तरह केविरोधमें उनकी हर न में स्पर्श बिंदुओं को बढ़ाने का ही मकसद मौजूद रहताहै। इस बात कोतो सभी को मानना पड़ेगा कि स्पर्श ही असल में काम-उत्तेजनाको जगाने की पहली सीढ़ीहै।

चुंबन-

महान आचार्यवात्स्यायन नें प्राक् क्रीड़ा तथा संभोग करनेके समय में चुंबन को बहुत ज्यादा महत्व दियाहै। इसकी वजह यह है कियौन-क्षेत्र में स्नायविक, शक्ति को जागृत करने के लिए चुंबन से बढ़कर कोईदूसरासाधन नहीं है।

होंठ-

होठों की त्वचातथा श्लैष्मिक झिल्ली के बीच में एक बहुत हीअनुभूतिपूर्ण भाग होता है जो ज्यादातर नजरिये सेयोनि तथा योनिगह्वर केबीच के भाग की तरह होता है। इस भाग में जब पुरूष अपनी जीभ से स्पर्श करताहैतो स्त्री के शरीर में एक बहुत ही उत्तेजना की लहर दौड़ पड़ती है जोसंभोग क्रियामें बहुत ही खास भूमिका निभाती है।

गंध-

हर स्त्री और पुरूषके शरीर में अपनी-अपनी एक अलग तरह की गंधहोती है जो पुरूष या स्त्री में युवावस्था की शुरूआत में हीपैदा हो जातीहै। यही गंध पुरूष या स्त्री के स्नायुओं में उत्तेजना पैदा करके उनकीसंभोग करने की इच्छा को तेज करती है। बहुत बार देखने या सुनने में आता हैकि किसीबहुत ही सुंदर स्त्री ने किसी साधारण लड़के से विवाह कर लिया याकिसी बड़ी उम्रकी स्त्री ने किसी छोटी उम्र के लड़के के साथ भागकर विवाहकर लिया। इस

तरह की खबरोंके पीछे ज्यादातर इस तरह की गंध का ही हाथ होताहै।

हास्य-व्यंग-

किसी तरह काहंसी-मजाक, संगीत, कहानियां आदि शरीर में एकप्रकार की उत्तेजना पैदा करती है। इस प्रकार जिन कारणों से आनंदकीछंद-प्रवृति बढ़ती है उनका हम पर निश्चित रूप से उत्तेजक तथा उत्साह बढ़ानेवाला प्रभाव पड़ता है। यह बात पूरी तरह से सामने आ चुकी है कि संगीत मेंस्त्रियोंका असीम प्यार भरा होता है।

आवाज-

पुरूष की आवाजका स्त्री पर बहुत ज्यादा असर पड़ता है। असलजिंदगी में बहुत बार स्त्रियों को सिर्फपुरुषों की आवाज सुनकर ही फिदाहोते पाया गया है। इसलिए वात्सयायन ने संभोग क्रिया मेंआनंद बढ़ाने केलिए आवाज पर ज्यादा जोर दिया है।

नजर-

नजर से एक-दूसरेके प्रति आसक्त होकर संभोग क्रिया तकपहुंचने का एक बहुत बड़ा अंग माना जाता है। जबस्त्री और पुरूष एक-दूसरेके प्यार में पड़ते हैं तो उनकी सबसे पहले नजरें ही आपस में मिलती हैं।

बूढ़ा हो याजवान हर कोई किसी न किसी प्रकार के उत्तेजकदृश्यों को देखने के लिए बेचैन रहते हैं। सुंदर चीजको देखने की प्यास हरआंख को रहती हैं।

आचार्यवात्सयायन ने संभोग क्रिया करने के बाद अलिंगन, चुंबनया प्यार भरी बातों के बारे में कहा है। इसे खावसानिककहा जाता है। अगरविवेक के नजरिये से देखा जाए तो काम-वासनाएं अपनी प्यास बुझानाचाहती हैं।इसके लिए वह हर समय बेचैन रहती है। पुरूष की काम-शक्ति ऐसी वासनाओं कीप्यास बुझाने में कामयाब नहीं हो पाती। उस संक्षोम से ही उन दोनों कीकाम-शक्ति मेंकमी आती है। जीवन में खुशी तथा उत्साह बनाने के लिएचुस्ती-फुर्ती तथा खोई हुईताकत को दुबारा पाने के लिए रतावसानिक क्रियाएंबहुत जरूरी हैं।